मंत्री री बेटी

करणीदान बारहठ

मायड़भाषा राजस्थानी रा
घणा हेतुआ
प्रो० मेजर श्री रामप्रसाद जी पोद्दार नै
घणै मान सूं
भेंट

मंत्री री बेटी

1

फागण रो म्हीनो, होळी रा दिन, दही सी चादणी धरती पर पसरेडी, मीठो-मीठो शीतळ वायरो डील स्यू रम्मै तो सुहावै, मनभावै, जी सोरो हुवै, बारै चूतरी पर छोरघा होळी रा गीत गावै—'चांद चढयो गिगनार, किरत्या ढळ रयी जी ढळ रयी'—'ओ कुण खेलै छबाक, ओ कुण फूल दड़ो'—

फेर छोरघां मोडै ताई दही घपोळियो रमती। म्हूं म्हारी मा री गोदी मे ही रैवती, स्यात् ही टाबरां रै नेड़ै जावती। म्हारी मा बां टाबरा, छोरचा कानी इकटक देखती रैवती, देखती रैवती, न तो बा ज्यू-त्यू हंसती, न बानै की कैवती। इया लागै जाणै मौसम रै बदलाव रो मा पर असर ही कोनी हुयो। कदे-कदे मां मनै फेंकती-सी बोलती—'छोरघा रम्मै है, तू ही रम, आखै दिन, आखी रात म्हारै ही चीपेड़ी रवै है, छोरघा म्हारै नेड़ै आंवती, मनै मा स्यू कोसणै री चेस्टा करती तो म्हूं मां रै घणी चिप ज्यावती। जद मा और चिड़ती—'राड, चमचेड-सी चिपी ही रवै, म्हारली तरिया चिड़ोकली होयगी, इनै भी की आछो कोनी लागै।'

मां नै की आछो कोनी लागतो। म्हारी मां कैवती—'बेटा, तेरा पापा बेगा ही आवण आळा है कोई समझौतो होसी ही।'

कांई समझौतो होसी, क्यां रो समझौतो होसी, म्हानै कांई पतो हो। म्हानै तो इत्तो ही बेरो हो के म्हारा पापा जेळ मे है, क्यूं जेळ में है, कांई अपराध करघो बां, म्हू टाबर नै कांई ठा। ओ तो ठा हो के—पापा कोई चोरी कोनी करी, डाको कोनी गेरघो। कीरो सिर कोनी फोडघो—फकत राजाजी नाराज हा, बानै म्हारा पापा माड़ी, भूडी कहदी। आ बात म्हारी

मां कनै जका लोग मिलण आंवता वै कैवता—मिनख खद्दरधारी, धोळा-धप्प दूध धोयां-सा।

म्हारो घर काई हो भूख रो डेरो हो। कोई कणक नाज ज्यांवतो तो कई दिन रोटी बण ज्यावती, नी अधभूखा सो ज्यांवतां, अड़ौसी-पड़ौसी डरता-सा बोलता, साग-सब्जी तो स्यात् ही बणती, कदे-कदे तो मिरच रा बीज पीसन रोटी सागै लगान खा लेंवता। म्हूं एक घरस्यूं छाछ मांग ल्यांवती, बीस्यू की नाको लाग ज्यावतो। मा उदास रैवती, इसी लागती जाणै आ रोवैली, पण मा कदे रोई कोनी। म्हूं तो बीरां आंसू कदे कोनी देख्या, पण सूकन खेलरो होगी ही। बीरी जुवानी पर बूढापो उतरण लागरयो हो—वेगो-वेगो, चटकै-चटकै। बीरै ओढ़ण सारू एक ओढ़णियो बच्यो हो, धोत्या तो सगळी लीर-लीर होयी ही, बा बारै निकळती तो पेटीकोट पर ओढ़णियो नाखन काम काड लेंवती।

म्हूं मां नै पूछती—'मां, पापा कद आसी ?'

—बेगा ही आसी, बेटा, सोच मत कर।

मा, मनै थपथपाती, म्हारै छोटै भइयै नै थपथपाती, भइयो भी सूकण लागग्यो।

एक दिन म्हारी दादी आगी। दादी दो दिन ठैरी। दादी दो दिन रोळा ही करती रयी, बकती रयी—'मर ज्याणै री ऊत गई, इसी आछी नौकरी ही, मौज करतो, काम करण नै चपरासी हा, दूजणनै गऊ ही, बरतन नै पीसा हा, हाथ में हकूमत ही। रोवण जोगै नै कांई सूजी, अबै आ टाबरां रो कुण धणी। काई चावै है बो ? राज बदळै है, राज। बीरो बाप ही राज कोनी बदळ सकै। कठै अड्यो है, राजाजी स्यूं अड़णो सोरो काम तो कोनी। मोटै मिनख स्यू तो मोटो मिनख ही अड सकै। आपां गरीब गुजारो करां, आपां कठै सकां। आ टाबरां रो भाग माडो। पण जै टाबर ही बीरां सिर खाणा है। म्हारै सागै कोनी चालै।'

पण म्हारा मा सिद्धार्थ री लुगाई यसोधरा स्यूं भी घणी बीरागणा ही, मूरा री धरती री जायी जामी ही जकी कदे ही त्याग सारू पाछी कानी मुड़ी।

दादी तो चली गई दो दिन तुरळ मचा'र, पण बा म्हानै ले कोनी गई,

ले ज्यावणै री कैवतो। दादी कनै भी हो कोई, पार बीमा खूड हा जकै स्यूं बो ममा गुजारो करती।

म्हारै तो बोही राडी रोवणो। कदेई लूण कोनी तो कदे मिर्च। कदे दाणा नीवड ज्यावता तो कदे तेल। पण मा कदे-कदे कैवती—'बेटा, तेरा पापा देस मारू जेळ गया है।' फेर पतो नी बीरै डील में कठैस्यूं सरणाटो बापरतो के वा एकदम झामी री राणी-सी लागती। मो नै कठैस्यूं ही घी, दूध कोनी मिलतो, पण बी 'देस' सबद मे ही कठै ही भेळा होयेड़ा विटामिन हा जका बीनै एकर तो जोधजुवान कर देवता अर फेर बी सारै स्यूं आप भी जीवती रैवती अर म्हानै भी पाळती। हसती पतो नी बीरी नकली ही या असली ही, पण बी हंसी स्यूं ही म्हा दोना नै दिन-भर बिलमावती रैवती।

2

पण एक दिन एहडो आयो के मां हड़-हड हंसी, इत्ती हंसी के आसै-पासै री भीता हूंसण लागगी, आखो घर हसी स्यूं गूंजण लागग्यो, पापा आग्या हा जेळ स्यूं छूटन। म्हूं भी हंसी अर पापा रै चिपटगी कस'र। म्हारा पापा भोत फूटरा हा। गोरो सरीर, गोळ मूंडो, ना लांबा ना ओछा। मोटी-मोटी आंख्यां, तीखो-सीखो नाक। भारयूं, भर्योड़ो डील, तकड़ा-तकड़ा। पण अबार की माड़ा होर्‌या हा, काळूटर्‌या हा। जेळ रो तो नाम ही भूंडो।

मा पापा नै रोटी खुवावै ही, इत्तै में एक गाडी आई जकी नै कार कवै, काळी स्याह, म्हारै घरे आयन खड़ी होयगी, लारै एक जीप आई, बीरै माय पुलिस बरदी लगाया। पुलिस नै देखन म्हू कूकी।

मां खड़ी होयन बारै देखी, मनै गोदी मे लेयन बोली—'रोअै क्यूं बेटा ?'

—मा, पुलिस।

एक दिन पापा नैं लेवण इया ही पुलिस आई। पण कार सायै कोनी ही।

मा बोली—बेटा, आज पुलिस तेरै पापा नैं पकड़न कोनी आई। तेरा पापा मनीस्टर बणग्या।

—ओ कांई हुवै, मा?

मा भी बात बता नी सकी। बण बताई होगी, पण म्हूं समझ नी सकी, पण जकै दिन म्हे बो घर नै छोडन एक मोटै मकान मे आग्या जकै नैं लोग बगलो या कोठी कवै। मोटा-छोटा करन दस कमरा। कोठी रो कांई बखाण करू, म्हानै तो एहडो मकान आंख्या कांई सपनै मे ही कोनी देख्यो। रक स्यू राजा बण्या करै है वै म्हे बणग्या। स्यो महाराज पारवती री कांण्या आया करै है—कीडी ही, बीनै मिनख बणा दियो, फेर राज बणा दियो, बा बात म्हारै सायै हुई। फेर तो मिनखां री भीड होवण लागगी, एक ही आदमी आख्यां कोनी दीखतो, म्हारै घर कानी लोग कैरी-कैरी आख्यां करन टिप ज्यावता, रात बिगत कोई कदास दुख-सुख री पूछ लेवतो, म्हारै घर रै पगोथियां चढ़ता नैं लाज आवती, बठै भीड रो तांतो लागग्यो। दो-चार कार घर रै आगै खड़ी ही रैवती। फोन जकै री म्हे सकल ही कोनी देखी। बो कान रै आगै लाग्यो ही रैवतो—'हलो, मनीस्टर सा'ब है क्या?' म्हानै जवाब देणो पड़तो। खद्दरधारी टोपी आळा मिनखां री तो लंगस ही लागी रैवती। नौकरी री भरमार ही, आगै पुलिस रो पैरो। म्हारा पापा कदेई बारै दौरै जावता तो को भीड कम होवती। पण बांरै आवतां ही पापा नैं बेल ही कोनी मिलती। लोग कांई बात करता, क्यू आवता, कांई काम हो बांरो, पण नया-नया, बूढा, जुवान, नूवा नकोर कपड़ा में च्यारूमेर मडरावतो रैवतो मैद रै छातै रै आगै मोमाक्खा रो किरणियो सो। मा कै अर मेरै, म्हारै भाइयै रै कपडा रा कई जोडा त्यार होग्या। पलंगां पर कई डिजाइना री चादरां, सोफा स्यट् अर दर्‌या हर कमरै मे लाग्योडा। मनै तो इया लाग्यो जाणै म्हे नरक स्यू सुरग मे आग्या।

म्हू स्कूल जावण लागगी। स्कूल म्हू जावती कार मे, आवती भी कार मे। सरू-सरू मे सगळी चीज म्हानै अजीब लागी। सोफास्यट् पर

ठती तो उछळती, कार में बैठती तो उछळती, म्हारै ओ खेल सो होग्यो. ई दिन तो ओ खेल करती, फेर तो सै गै होगी, बो म्हारी जिन्दगी रो हिस्सो होग्यो।

स्कूल मे सगळा मास्टर लाडगोड करता, भोत सोहणो अर सुथरो स्कूल हो, मास्टर भोत आछा हा, लोग कवै--'मास्टर मारै' पण बां तो म्हानै कदे 'अलफ हू बे' कोनी कई, छोटी तो ही, फेर म्हूं बचपनै में फूटरी ही, फेर मत्री री बेटी, आछा कपडा पहरती, डील ऊं की और सातरी होगी, म्हारै पढणै अर खेलणो सार्थ होंवती, म्हारी घणी भायल्या बणगी, वै भी मोटै घरा री, कोई मत्री री छोरी, कोई की अफसरा री छोरी, बठै छोटै घर रो टाबर तो आवतो ही कोनी, म्हारा नाम भी सोवणा, म्हारा गाल भी सोवणा, म्हारी बोली भी मोठी, म्हानै लैरला दिन कदे कदे याद आ ज्यांवता, म्हारी पुराणी भायल्या भी याद आवती-- एक ही सुमित्रा, पण म्हे कैवता--सुमतरडी, एक ही निर्मला, पण म्हे कैवता--नीमली, एक ही इन्दिरा पण म्हे कैवता--ईदगी, फेर कई तो सरुस्यूं ही ओछा नाम हा--टीडकी, डोडरड़ी, धापली, वादूड़ी। म्हारो नाम तो है--स्वराज, पण म्हानैं छोर्यां कैवती--सोराजडी, पण वैं छोर्या अबार म्हानै याद तो आवै, पण न तो वै म्हारै कनै आवै, न म्हूं जाऊं, अबै तो नई भायल्या होगी--निशा म्हारी सगल्यां स्यूं आछी भायली है, म्हारै बरगी गौरी चिट्टी, कदे कदे म्हे दोनू, म्हारी कोठी मे लॉन मे गुलाब रै फूल रै साथै खड़ी हो ज्यावा, एक-दूजी नै पूछा--बोल, गुलाब फूटरो के म्हूं, म्हे एक दूसरै री बड़ाई करता, फेर गुलाब नै सूंगता, फेर बी फूल नै तोड़ लेंवता, फेर एक फूल और तोड़ता, कदे काना रै लगावता, बाळां रै लगांवता, फेर म्हारी चोटया मे टांग लेवता। एक भायली और ही म्हारी--नीरा, बा की सावळी ही, पण बीरो नाक नक्सो म्हांस्यू भी सोवणो ही। बीरो लीलाड़ मोटो, आख्या मोटी, नाक तीखो, बीरी राग जाणै लता मंगेसकर गावै है। म्हे तीनू एक तमासो और करता --म्हे फोन पर नीरा रा गीत सुणता। कदे नीरा आपरो रेडियो लगा लेंवती अर म्हानै गीत सुणावती। बां दिना रेडियो भोत बडी बात ही, आजकलै तो रेडियो होग्यो दाळ-रोटी। म्हारा पापा रेडियो रै बड़ा खिलाफ हा--अै गाणा म्हूं डरती-डरती सुणती। फेर रेडियो, गाणा

अर गीत गावता ही जावता, मा इण राजनीति नैं आछी तरियां समझती के लूण खायेडो नीचे नैं देवैं अर जूत खायेडो ऊपरनैं। मा आ बात आछी तरियां समझती के इण जनता री कमाई री आपां खावां हां, नीं तो आपणै मे सौरम कोनी आवै। आ बात बीरै चोखी तरियां ढुकेड़ी ही तड़कै नैं आपां नैं आरै सामी जावणो है अर वोट मागणा है अर था कुरसी हीं भोजू लेवणी है। मा अणपढ़ ही पण इण जनता-राज नैं भली-भांत समझती। पापा बीनैं आ बात समझाई ही या आ बात खुद ही समझती ही, इण बात रो तो पतो नी, पण मां रो सुभाव ही एहड़ो हो के लोगां सारू आयरी रहे कस्ट देवणै मे बीनैं एहड़ो आणंद मिलतो ज्यूं भगवान रै भक्त नैं भगवान री सेवा मे मिलै, जनता ही जनार्दन है मा आ बात सब चुकी ही, पापा रो घर-घर नाम होवणै रो श्रेय मा नैं है। पण ईं रा मतलब ओ भी कोनी के वा पापा अर म्हारी टैल मे कोई कमी राखती। म्हू कदेई बीनैं माथै पर आडी होयेडी कोनी देखी। भूभरियैं ज्यूं फिरती ही रैवती। मां तो मा ही।

स्वामीजी तीजैं दिन चल्या गया। पापा बानैं रेल पर चढान आया, पण पतो लाग्यो के बारो जी सोरो कोनीं होयो, बांरो काम बण्यो कोनी।

पापा पाछा आया अर आवता ही सोफास्यूट पर आडा होग्या, मा बारै सामैं बैठगी। म्हूं भी चली गई। पापा मनैं गोदी मे ले ली। मा बोली— स्वामीजी नाराज होयन गया।

—काई करां, पापा बोल्या, आपणै कनैं अबार जको आसी, स्वारथ सिर आसी, स्वारथ पूरो करणो आपणो धरम है, इण सारू आपानैं राज मिल्यो है, पण स्वारथ पूरो होवणो कोई जरूरी कोनी, आपा चेस्टा करां, चेस्टा न करां तो नाराज होओ।

—इसो काई काम हो, आप चेस्टा करी अर पूरी होई कोनी, आप तो राज रा धणी हो, राज तो राम रै बराबर होवै है।

—हां, राज री भी सीमा है ज्यूं राम री सीमा है।

—तो स्वामीजी तो सेवा मे लागर्या है। इण जुग मे इता टाबरा नैं भणावै, साधन कठै है, माग-माग न चदो ल्यावै, कित्ती मोटी स्कूल है, किता टाबर रुजगार सिर हो ज्यार्मा, बा कनैं काई है? राज री ही आस राखै है।

—तू ठीक कवै है, देवी, पण माग भी तो मोटी है, कवै है कॉलेज बणा देवो। कॉलेज कठेऊ बणै।

—पण आप ही तो भाषण मे कया करता, औ कॉलेज हो ज्यावणो चाहिजै, राज इनै कॉलेज क्यू नी बणावै, राज नै कोसता, इनै बुरो-भलो कैवता, अबार तो राज थारै कनै है।

पापा थोड़ा मुळक'र बोल्या—'देवी, राज लेवणो आसान है, राज चलाणो दोरो है, जकी बात म्हे करता, बै ही म्हारै गळै मे आरी है। काम तो राज रै खजानै स्यूं होवणो है, खजानै मे पीसा जनता कनै स्यू ही आवै, आसमान तो बरसै कोनी। काल जका किसान आया है, वै भी म्हारी बात लेयन आया हा, मसा वानै भुळा चपळा'र पूठा भेज्या। स्वामी नै भी इया ही राजी करन भेज्या।

—तो आप लोगा नै झांसा देओ हो, मा बोली।

—देवी, इरो ही नाम राजनीति है, पापा कदे-कदे मां नै देवी कह देवता।

पापा की बात और कैवता, पण बारी पार्टी पाच आदमी कमरै मे आयग्या। मा नै आपरै काम सारू जावणो पड़यो। बांरी चाय बणवावणी ही।

4

एक दिन म्हानै एक सेठ को बुलावो आयो। दिन ढळतां ही एक नई नकोर कार म्हारी कोठी रै माय आ ऊभी। मां म्हारी पैली स्यू ही बणी ठणी ऊभी ही। मां ज्यूं-त्यूं घरे पेटीकोट अर ओढ़णै मे रैवती। पैरणै ओढ़णै रै बीनै कदेई सौक रयो ही कोनी। बांरै जांवती जद धोती बाध लेवती। पण धोती बीरै डील पर ओपती कोनी। बा ओढ़णै घाघरै में फेर भी की ठीक लागती, पण अब की बरसां स्यूं धोती ही धारली ही। कार आंवता हो

अर गीत गांवता ही जांवता, मा इण राजनीति नैं आछी तरियां समझती के लूण खायेड़ो नीचै नैं देखै अर जूत खायेडो ऊपरनैं। मां आ बात आछी तरियां समझती के इण जनता ही कमाई ही आपां खावां हा, नी तो आपणै में सौरम कोनी आवै। आ बात बीरैं चोखी तरियां ढुकेड़ी ही तड़कै नैं आपा नैं आरैं सामी जावणो है अर वोट मागणा है अर आ कुरसी ही भोजू लेवणी है। मा अणपढ ही पण इण जनता-राज नैं भली-भात समझती। पापा वीनैं आ बात समझाई ही या आ बात खुद ही समझती ही, इण बात रो तो पतो नी, पण मां रो सुभाव ही एहड़ो हो के लोगां सारू आयरी रहे कस्ट देवणै मे बीनैं एहडो आणद मिलतो ज्यू भगवान रैं भक्त नैं भगवान री सेवा में मिलैं, जनता ही जनार्दन है मा आ बात लख चुकी ही, पापा रो घर-घर नाम होवणै रो श्रेय मा नैं है। पण ई रा मतलव ओ भी कोनी के बा पापा अर म्हारी टैल मे कोई कमी राखती। म्हू कदेई बीनैं माथै पर आडी होयेडी कोनी देखी। भूंभरियै ज्यूं फिरती ही रैवती। मां तो मां ही।

स्वामीजी तीजैं दिन चल्या गया। पापा वानैं रेल पर चढ़ान आया; पण पतो लाग्यो के बांरो जी सोरो कोनी होयो, बांरो काम बण्यो कोनी।

पापा पाछा आया अर आवता ही सोफास्यट पर आडा होग्या, मा बारैं सामैं बैठगी। म्हूं भी चली गई। पापा मनैं गोदी मे ले ली। मां बोली—*स्वामीजी नाराज होयन गया।*

—काई करा, पापा बोल्या, आपणै कनै अवार जको आसी, स्वारथ सिर आसी, स्वारथ पूरो करणो आपणो धरम है, इण सारू आपानैं राज मिल्यो है, पण स्वारथ पूरो होवणो कोई जरूरी कोनी, आपां चेस्टा करा, चेस्टा न करा तो नाराज होओ।

—इसो कांई काम हो, आप चेस्टा करी अर पूरी होई कोनी, आप तो राज रा धणी हो, राज तो राम रैं बराबर होवै है।

—हां, राज री भी सीमा है ज्यू राम री सीमा है।

—तो स्वामीजी तो सेवा मे लागर्या है। इण जुग में इता टाबरा नैं भणावैं, साधन कठै है, माग-माग न चदो ल्यावैं, कित्ती मोटी स्कूल है, कित्ता टाबर रुजगार सिर हो ज्यासी, वा कनै काई है? राज री ही आस राखै है।

—तू ठीक कवै है, देवी, पण मांग भी तो मोटी है, कवै है कॉलेज बणा देवो। कॉलेज कठैऊ बणै।

—पण आप ही तो भाषण मे कया करता, ओ कॉलेज हो ज्यावणो चाहिजै, राज इनै कॉलेज क्यूं नी बणावै, राज नै कोसता, इनै बुरो-भलो कैंवता, अबार तो राज थारै कनै है।

पापा थोड़ा मुळक'र बोल्या—'देवी, राज लेवणो आसान है, राज चलाणो दोरो है, जकी बात म्हे करता, बै ही म्हारै गळै मे आरी है। काम तो राज रै खजानै स्यूं होवणो है, खजानै मे पीसा जनता कनै स्यू ही आवै, आसमान तो बरसै कोनी। काल जका किसान आया है, वै भी म्हारी बात लेयन आया हा, मसा वानै भुळा चपळा'र पूठा भेज्या। स्वामी नै भी इया ही राजी करन भेज्या।

—तो आप लोगां नै झांसा देओ हो, मां बोली।

—देवी, इरो ही नाम राजनीति है, पापा कदे-कदे मा नै देवी कह देंवता।

पापा की बात और कैंवता, पण बांरी पार्टी पाच आदमी कमरै मे आयग्या। मा नै आपरै काम सारू जावणो पड्यो। बारी चाय बणवावणी ही।

4

एक दिन म्हानै एक सेठ को बुलावो आयो। दिन ढळतां ही एक नई नकोर कार म्हारी कोठी रै मांय आ ऊभी। मा म्हारी पैली स्यूं ही धणी ठणी ऊभी ही। मां ज्यूं-त्यूं घरे पेटीकोट अर ओढणै मे रैवती। पैरणै ओढणै रै बीनै कदेई सौक रयो ही कोनी। बारै जांवती जद् धोती बांध लेंवती। पण धोती बीरै डील पर ओपती कोनी। बा ओढणै घाघरै में फेर भी की ठीक लागती, पण अब की बरसा स्यू धोती ही धारली ही। कार आवता हो

मां मनैं बतळाई—'स्वराज, चाय त्यार होग्या, आपां नैं चालणो है।'

मां मनैं कपडा पराया, मूंडो, हाथ, पग धोया, बाळ बाया अर त्यार कर ली। फेर विजय नैं त्यार करयो अर म्हे तीनूं कार मे बैठग्या।

गाडी सेठ रो छोरो चलावैं हो। पन्दरा-बीस मिनट में म्हानैं सेठ रै छोरै आपरी हवेली मे जा वाड़ो। हवेली भोत मोटी ही, दू मंजली, म्हारी कोठी बीसी तीन बण ज्यावैं। सेठ, सेठाणी बारी मोटी छोटी लड़क्या, छोटा मोटा छोरा म्हारी उडीक मे खड़्या हा—हाथ जोड़या, सगळा 'नमस्ते जी, नमस्ते जी' करन म्हारो स्वागत करयो। कोई म्हारी आंगळी पकड़ै तो कोई विजय री। एक कमरै मे म्हारै चाय-पान को बन्दोबस्त हो। म्हूं तो म्हारली कोठी पर ही धीजरी ही, पण ओ कमरो देखन म्हारी आख्यां चका-चौंध होगी, इत्ती सजावट ही के बीरो वरणन ही नीं कर सकूं। म्हारला कमरा तो ईंरै आगै ऐन ओछा लागै हा। मेज पर पैली स्यूं स्टील रा बरतन सजेडा हा, बा पर भात-भांत रा पकवान। म्हूं मन में करी, आ सगळी कुरसी री माया है, नीं तो ईं बिरमानंद री बहू नै कुण भूत बुलावैं हो, पडौसी कनैं उधारै आटै खातर मा जांवती तो उधारो आटो कोनी मिलतो।

मा सोफास्यट् पर जचन बैठगी, म्हूं भी बैठगी, विजय भी। सामैं सेठ अर सेठाणी बैठग्या। मा इत्ता दिनां में इत्ती अभ्यस्त होगी के बीरै लुगाई आळो सो सको सरम कोनी रयो।

भांत-भांत रा पकवान सामैं पड्या हा। एक-एक नैं चाखा तो भी पेट भर ज्यावैं। फेर जगा-जगां जावणै आवणै खावणै स्यूं मन भर्‌योडो हो, मां अर म्हे थोडो भोत ही खायो, पियो। फेर तो सेठ, सेठाणी म्हारै पापा अर मा री बडाई रा बखाण सरू कर दिया तो कान ऊबासी लेवण लागग्या। छोरा अर छोर्‌या इत्ता सोवणा कपडा पैर राख्या हा के म्हारै मन मे ईंरको होवैं, म्हूं मन में करी, 'लोग देस नैं गरीब बतावै, अठै तो धन री दरिया चालैं है।'

म्हू एक बात मा नैं कंय दी—'मां, इसा बरतन आपां ही ल्यांवा।'

सांची बात आ ही के म्हारै तो पीतळ रा कोजा बरतन। मंत्री बण्या पाछै कीं चीणी रा बरतन पापा मंगाया हा, जका आये दिन फूट ज्यावता, आये गये खातर कीं कांसी री थाळ्‌या ही, स्टील रो तो एक गिलासियो हो

कोनी ।

एक कानीं खड़यो सेठ रै छोरै पूछयो, 'कांई कवै है, बेटी' वण फट बात विल्ली ।

—इयां ही करै है, मां बोली, टावर है ।

—बोल, बेटा, बोल, सेठाणी पूछयो ।

फेर तो वै बात रै लैरै ही पडग्या, मा नै बतावणो पड़यो—'आ आपरा स्टील रा बरतन सरावै है ।'

—ओ हो, बस, सेठ बोल्यो ।

—आपणै, माताजी नै स्टील रै बरतना री दुकान माथै ले ज्यायी, जद् छोडन आवै, सेठ फेर कह्यो ।

मा सेठाणी नै भी नूतो दे दियो ।

पाछा आया जद् कार स्टील रै बरतना स्यू भरेड़ी ही । मां तो बानै एक टक्को दियो कोनी ।

फेर एक दिन सेठ अर सेठाणी भी घरे आया, मां भी बारी आछी आव-भगत करी । मां रा ल्यायेड़ा स्टील रा बरतन अबार काम आया ।

एक दिन मा सेठ नै पापा स्यूं मिलायो पापा सेठ रै जावणै रै बाद मां नै इता ही हँस्या—'अबै कांई फिकर है । तू घर चलाणो सीखगी ।' म्हूं तो बां दिना ई रो अरथ कोनी समझी ।'

पापा भोत काम कर्‌या करता, पापा नै कदे वेल मिली ही कोनी । दिन उगे-की मोड़ा उठता, उठतां ही इसनान कर लेवता, नास्तो ले लेंवता, फेर तो बस दिन भर मिलणो जुलणो, लोगा रो तांतो लाग्यो ही रैवतो, रोटी खावतां ही दपतर चल्या ज्यावता, दपतर स्यूं पाछा आवतां ही बा ही लगस, लैण लाग ज्यांवती । रात नै बारां बज्या ताई, बानै तो बेल कोनी मिलती । म्है तो सो ज्यांवतां, पापा कद सोवता, म्हानै पतो कोनी ।

दो दिन घरे ठहरता तो च्यार दिन बारै । च्यार दिन घरे ठहरता तो पांच दिन बारै । म्हारै घरे छोटै स्यूं छोटो अर मोटै स्यू मोटो आदमी आंवतो ।

म्है सुणता—आज केन्द्र रो मन्त्री आर्‌यो है । वीरी खातरी मे कोई कसर कोनी रैवती । राज रा मन्त्रीगण तो रोज ही आवता रैवता, एक-दो

कार तो हरदम कोठी मे खड़ी ही रैवती। फोन इत्ता आंवतां रे फोन स्यूं फोन जुड्यो रैवतो। एक फोन रै बार दूजो फोन। एक फोन पापा रै कमरै में रैवतो, दूजो बारै।

गाव रै लोगां रो तो झुंड रो झुंड आंवतो, न्यारूं कूंटा रा, न्यारी-न्यारी पोसाकां रा, न्यारी-न्यारी बोलियां रा। पापा राजनीति रा चातर खिलाड़ी हा। जद गांव आळा आंवतां तो पापा बारै साथै बारै ही घास रै मैदान मे बैठ ज्यावतां, नीचै ही घास पर, जमीन पर जठै बै बैठता, वांस्यूं हंस-हंस, मुळक-मुळक, मीठी-मीठी बांता करता, वठै ही बारै साथै चाय पी लेवता, वारै साथैं बैठन रोटी खांवता, वारो काम सारता या नी सारता, पण बै हसता ही आवता, हसता ही जांवता, म्हारा पापा गिण्या दिनां में जनता रा प्यारा नेता होग्या, जनता रो ओ प्यार रो श्रेय मा नैं भी हो, बारै सोणै उठणै रो, ठहरणै रो, खाणै पीणै रो, चाय पीणै रो, कपड़ै लत्तै रो बन्दोबस्त मां हाथा करती, हर वटाऊ नै जायन पूछणो—'क्यू भाई, रोटी खाई के नी।' म्हारै घरे मा किनैइ भूखो कोनी सोवण दियो, पाळो कोनी मरण दियो। अगलो आस लेलीया आवै, बीरो काम सरणो चइजो, चेस्टा म्हारी है, भाग तेरो है, आ भावना ही मां राखती अर गिण्यां दिनां मे मां नैं लोग माताजी कैवण लागग्या, छोटा लोगां रो मा ही आसरो होग्यो, वै काम सारू मा नैं ही कैवतां।

बीया तो दिन भी एकसा कोनी रवैं, एक दिन ही बीस करवट लेवैं, दिन उगे रूप और, दोपारैं रो रूप और, सझ्या रो रूप और अर रात नैं और। हर पल पलटा खावैं। दिनां रा रूप भी एकसा कोनी, सरदी, गरमी, विरखा, ओ ही हाल मिनखां रै दिनां रो हो, बै भी एकसा कोनी रवैं, पण राजनीति रा रंग तो किरडै री काया रै रंग-सा है। अठै रंक नैं राजा वणतां देर कोनी लागै तो राजा नैं रंक वणता भी देर कोनी लागै। एक दिन चाणचकै समाचार आयो के मंत्रीमंडल अस्तीफो दे दियो, पापा भी मनीस्टर कोनी रया, भीड एकदम साफ, सिपाही सरडा सगळा पार, कोठी मे कुत्ता बोलैं, रात नैं दिना नैं एकदम सुनसान, कठैइ मिनख रो भोरो ही कोनी, चपडासी पतो नी कठैं गया, कार तो काई कठैइ कोई साइकल ही कोनी, पापा एकदम गंभीर, एक रात बारै गया, पतो नी कठै, दूजै दिन सुबह पापा

स्यात् कोनी आया, पण पापा को एक पुराणो बेली आयो, आवता ही बोल्यो—'समान सामल्यो, मकान ले लियो है किराये पर, थानै बठै हो चालणो है।' म्हे बोरिया बिस्तर बांध लिया। म्हारै कनै कांई हो, सगळो कोठी रो ही हो, म्हे एक छोटै सै मकान में आग्या, म्हारली सागी माच्या, सागी बिस्तर, की बरतन भांडा जरूर बधग्या हा। पापा ओनूं सडक पर आग्या, कोई कार नी, पगा ही फिरै। म्हारली सगळी भायल्यां छूटगी, निशा, नीरा पतो नी कठै गई। वै नेता, वै अफसर, वा भीड़, चपरासी सिपाही देखण नै कोनी मिल्या। पापा दो-तीन दिन सारू फेर बारै गया, फेर चाणचकै कण ही समचार दियो—'पापा ओजू पकड़ीजैला,' म्हू तो जोर-जोर स्यूं रोवण लागगी, बोकरड़ो पाड़ दियो।

मा वडी स्याणी, बण ओजू धीर बधायो, पण पापा दिन उगे ही आग्या।

पापा दफ्तर जावतां, पण ओ तो पार्टी रो दफ्तर हो, पगा ही जावता, पगा ही आवता, पापा रै सरीर में कोई फरक कोनी आयो, बारै व्यवहार में कोई फरक कोनी आयो, बियां ही हंसणो, बोलणो, सोवणो, उठणो, भीतर कोई पीड़ ही तो पतो नी, पण कठैइ कोई उदासी कोनी दिखी, मा जरूर फीकी पड़गी, मूंडै पर उदासी आगी, जकी लाली आई ही, वा ओजूं काळस में बदळन लागगी। वै दिन तो याद आवता, पण पापा री मस्ती देखन म्हे लोग भी मस्त रैवण लागग्या।

वक्त जद करवट लेवै, बो छानो कोनी रवै। अब वक्त तो भोत बड़ो हाथी है, मिनखां बीरै सामै कीड़ा-मकोड़ा है। ओ पसवाड़ो फोरै तो मिनखां से कांई माजनो। अबार वक्त पसवाड़ो फोरै हो। बो फुकारा मारै हो। बीनै इतिहास बदळणो हो, अण बदळ्यो। बड़ा-बड़ा महल माणिया ढैवण लागग्या। बीरो फुंकार साथै बड़ा-बड़ा राजा महाराजा उड़ग्या। न तलवार चाली, न बंदूक। न तोप रो गोळो सुणीज्यो, न बम पाट्यो, पण फकत इतिहास बदळ्यो। देर भी कोनी लागी, रोज नई बात सुणणै में आंवती, करतां-करतां वक्त जी टिका लियो, पण जितो बदळाव आवणो हो वितो आयग्यो। हजारां बरसां रा जमेडा राज कोनी रया, तलवारा रै नोक स्यूं लियेड़ी जागारां कोनी रयी, फकत इतिहास रैग्यो। अण वक्त दिखा दियो

के राजा रंक अर रंक राजा क्यां बण्या करै है, एक दिन ओजूं आग्यो के म्हे पूठा बीसी कोठी मे चल्या गया।

अबै राज री सीव लांबी चोडी होगी, भांत-भांत री संस्कृतियां रो सिणगार हो अबै राज। भांया री अळगाव री भीता ढैगी, सगळा इसा लागै जाणै हाथ घालन मिल्या।

आं सस्कृतिया री खुलो चितराम म्हारी कोठी मे निजर आवण लागग्यो। म्हारी कोठी रै लॉन मे जद बै आप आपरो झूमरो लगान एक ठौड़ बैठता तो जाणै एक बगीचै में भांत-भांत रा फूल होवै। कीरो गोळ साफो अर अंगरखी तो कीरै छुरगै आळो साफो अर अचकन तो कीरै पागड़ी अर धोती, भात-भात रा बंधेज अर भांत-भांत रा रंग रूप, आ है आपणी धरती जकै रै पीठ पर धरती रो सोवणो अर गरबीलो इतिहास है जकै रा आंक सोने रा लिखेडा है।

मां बी चरकचूंडी पर ओजूं चढगी, पापा रो वो ही कार्यक्रम, बै ही दौरा, बीया ही मिलणो-जुलणो, बै ही धंधा।

एक दिन दादी आगी—हाथ मे एक बोरडी री काटेडी लाठी, आख्यां रै चसमो, बोदो घाघरियो, ओढणो, कुड़ती, कांचळी री जगां कुड़तियो। बूढी लुगाई ही, साज सिणगार रो तो कोई अरथ ही कोनी हो। पण जकी हालात मे आई, वा ओपती कोनी ही। पण म्हे सगळा राजी हूया—'दादी आई'''दादी आई।' दादी कोठी रै बीच रै आंगणै मे माची घालर बैठगी। पापा आया, आपरी मां रै पगां लाग्या। दादी ओळमो दियो—'बेटा, तू तो कागज दे कोनी, म्हूं तेरै कागज नै तरसती रऊ, लोगां ही मनै ओ समचार दियो के तू ओजू मनिस्टर बणग्यो। भला आदमी, कागज तो दे दिया कर।'

पापा दादी रै पगाणै माची रै दावण पर बैठग्या, अर बोल्या—'मा, बेल ही कोनी मिलै, कागज कांई दयूं, अबै आ तेरी पोती पढगी इनै ओ काम समळा।'

—तू कुणसी में पडै है ए, सुराजडी, दादी नाम विगाड'र बोलती।

—पाचवी में, मैं कयो।

—तो भोत पढगी, दादी पाच-सात नै घणी पढेडी मानती, दादी कै

दिनां में आठ स्यूं ऊपर कलास कोनी होवता ।

—कठै पडगी भोत, मैं कर्यो ।

—ओ तेरै बाप स्यूं तीन ही कलास लारै रयो ।

—पापा आठ पडेड़ा हा, ज्ञान तो सम्पूर्ण, अध्ययन स्यूं हुयो ।

—पापा नै भोत ज्ञान है । दादी…

—क्यारो ज्ञान है, म्हूं मसां मास्टर नैं कयन पास करायो हो, फिरतो जोड़ियां पर कुरां डडो खेलतो ।

—पापा हंसण लागग्या, मां इत्तै मे चाय ले आई । दादी मां कानी देखन बोली—'टाबर तो सगळा ही हुसियार होर्‌या है । बीनणी भी ठीक होरी है । तनखड़ी, तानखडी ठीक मिल ज्यावती होसी, इत्तो मोटो पद है तो तनखा तो है ही ।

पापा कीं कोनी बोल्या । फोन री घंटी बाजगी, पापा खुद ही उठन फोन कानी चाल पड्या, फेर फोन नै लेयन आपरै कमरै मे गया ।

—दादी सगळा कमरां नैं घूम-घूम न देख्या, फेर कोठी रो लॉन देख्यो, फूलां रा पौधा देख्या, फेर गायां री गौर कानी चली गई, जकी अबार ही ल्याया हा ।

दादी नैं एक न्यारो ही कमरो दे दियो, मा कंय दियो—'थानैं अठै ही रैवणो है, थां सारू ओ कमरो है, टेम सिर रोटी चाय आपी मिल ज्यासी, बैठ्या मोज करो, माळा फेरो ।'

दादी नै एकळी नैं कयां आवडै । दादी मूडै री आपै कयां काडै ही ।

पापा तो मां रै सुभाव नै जाणै ही हा, बै म्हानै तो कोनी संभाळता, पण दादी नै जरूर संभळाता, बै जाणता, मां बूढी लुगाई है, इनैं जे न संभाळांगा तो आ गांव जायन विगोवैगी । दादी दो दिन सगळै घर नैं सभाळ लियो, सगळी बात रो बीनैं पता लागग्यो ।

म्है मगळा रात नैं रोटी खायन आडा होवळ आळा हा, मगळा नैं वेल मिलगी ही, काम कोनी हो । गरमी रा दिन हा, सगळा डागळै में जायन एक दरी पर लेटग्या । दादी भी वठै ही, वा गाव री वातां सुणावण लागगी, इत्तै में वठै ही पापा आग्या ।

दादी पापा नैं आंवता ही बोली—'बीरमा, तनै तो बेटा टेम ही कोनी

मिलै, ओ क्यांरो नौकरो ।'

—मा, ओ काम ही इसो ही है ।

—काम तो तेरो चोखो, पण इण काम री कितीक तनखा मिलग्या है ।

पापा आपरी तनखा वताई ।

—कीं ऊपर-सूपर तो आ ज्यावै या सूकी पाकी तनखा ही है ।

—सूकी पाकी तनखा ही है, वांरै जावां तो राज भाड़ो-भट्टो दे देवै, बीरै माय की ऊबर ज्यावै ।

—चलो, वो तो ठीक है, दादी कयो, पण म्हे तो आ दिना में देख्यो तेरो खरचो भोत अवडो है, दिनगै स्यू लेयन रात तांई लोग आवै, अठै ही गिटै अर अठै ही चाय पीवै, तू तो रोज वरात री वरात जिमावै, ओ कठै ऊँ आसी ।

—आं रै ही भाग रो है, मां, आपां कठै ऊं ल्यायां हां । पापा जाणै हा, मा नै आया गया सुहावै कोनी ।

—तो तू आ बता, तेरली टाबरी काई खावैली, तनै काल नै काई कोनी चाहीजै, सुराजड़ी चार साल नै हुयी ब्यावण आळी, फेर आज ही के तू बूढो होग्यो, फेर मैं एक बात इण नौकरी में ओर देखी, ईंरो तो एक पल रो ही भरोसो कोनी, लैरै आपणै कनै खुड तो बीघा दस है ।

दादी धोळा धूप मे तो कोनी करचा हा । दादी थोड़ी ऊमर में विधवा होगी ही । पापा नै पाळ्यो, मोटो करचो, ब्यायो थ्यायो, फेर नौकरी भी दादी ही लगायो, जगा-जगा लोगां कनै हाथ जोडती फिरी, दादी ओजूं तांई बेफिकर कोनी हुई ही, चाहे दादी पापा रै व्यक्तित्व रै सामै बिना तेल बाती रो दीयो हो, पण माईत रो मन औलाद मे होवै है, बीरै दुख-सुख नै जद् तांई बीरा मास रवै जद् तांई बीरो फिकर मिटै कोनी ।

पापा आप री मा रो ओजू जी थमायो—मा, तू क्यू फिकर करचा करै है, जद् औलाद स्याणी हो ज्यावै तो माईता नै फिकर छोड देवणो चाहिजै ।

दादी फेर बीं भाव में ओजू बोली—औलाद स्याणी हो ज्यावै तो फिकर छोडणो चाहिजै, पण तेरी स्याणप में तो भोरो ही कोनी, बावळा, म्हू दो दिनां हू देखण लागरी हूं, दिनगै ऊ लेयन दिन छिपै तांई तेरै चलै रै

चैन कोनी, म्हूं बीनणी नै कयो. बीनणी, ओ काई, ओ तो होटल वणग्यो, बिनां पीसां रो, मरज्याणा अरण-वरण रा कठै ऊ आवै है, तेरै कोई मीला चालै है, ऊपर स्यूं कोई आभो बरसै है, कदे चाय, कदे रोटी, विस्कुट, भूजिया, तू तो रोज गाम जिमावै, तेरो घर कया चालसी, बीनणी, पण बीनणी चुप, तूं ही चुप। तनखा तो तेरी तीन दिन कोनी चालै, तेरी कोई गोज मे घाल ज्यावै, तो बेरो कोनी, आवै तो अठै मोटा-मोटा है।

—तूं क्यू फिकर करै, मा, पापा फेर हंसन बोल्या, आपा भी आंरै ही भाग रो खावां हा।

—तू बात बतावै कोनी, दादी बोली, म्हूं सो क्यू देख लियो, तेरो अठै की कोनी, आ कोठी राज री, माचाढेला राज रा, दरी दरकली राज री, अं काई बतावै, सफासट राज रा, घोळा-धोळा बरतनियां तो तेरा है, हैं रै, अं गायां उधारी आई के आरा पीसा दिया।

पापा नै, म्हानै सगळां नै दादी री बाता पर हंसी आवै, दादी स्यात् समझगी के ईं माया नगरी रो कोई पतो नी, फेर बा बोली—भई, सगळा हंसो हो, तो म्हूं बोलू ही कोनी, बात तू म्हानै बतावै कोनी, बात कठैई तेरी गोजी मांय है, तू जाणै है, मा रो काई, आ बात छिडकती वार कोनी लगावै ओ रयो राज रो काम, नौकरी रो काम, म्हूं काई बावळी हूं। बात आगै आज्यावै तो राज फास लेवै, खैर, ईं बात नैं तो छोड, पण लोगा नैं मत *खुवाया कर, तू पीसो भेळो कर, आपां गाव मे चोखो मकान बणावां, जमीन* लेल्यां, लोग आ तो कवै—खसम तो जुवानी मे छोडन चल्यो गयो हो, पण रांड री जात कठै ताईं आपरी औलाद नैं लेगी।

दादी गांव री सीव स्यू बारै कोनी निकळ सकै ही, फेर बा गांव री बाता पर उतर आयी, आजकलै घडसियै रो छोरो घणी दारू पीवण लागग्यो, भूरियै आपरै छोरै री ब्याह कर दियो, रिपिया तो पांच हजार लगा दिया, पण करजदार होग्यो। लूगियै रा टीगर ओजू कुंवारा फिरै है। मलियै री बात पर दादी जोर दियो—'बीरमा, तू मल्लू नै जाणै है न, बो सुथार, आपणै पिछवाड़ै घर है, बीरी छोरी कुंवारी है, ब्यावण सावै है। मलियै मेरै कनै स्यू हजार रिपिया उधार माग्या, आछो ब्याज देसी, जमीन अडाणै मेलै है, मनै वण कयो के बीरमै कनै स्यू ल्यादे, बो तो मोटी नौकरी मे है,

दादी नैं म्है एक दिन और ठहराली, आपणे दादी बारै लान पर बैठी ही, म्हूं भी बनैं चली गई। दादी मनैं बोली, 'सुराज, एक बात पूछू तनैं, ओ आदमी कुण है ?' बण दूब पर बैठ्यै आदमी कानी आंगळी करन कयो। म्हूं कयो—दादी मनैं तो बेरो कोनी।

—ओ दस दिना ऊ अठै ही मरै है, दोनूं वक्त रोट पाड़ै है।

दादी नै ध्यावस कठै ही, बण जोर स्यू हेलो मारयो।

आदमी कनैं आयन हाथ जोड़या अर सामी बैठग्यो।

—कुण है रै तूं, क्यू आयो है—दादी पूछयो।

बण आदमी आपरो नाम ठाम बता दियो। और कह्यो—म्हारै छोरै सारू नौकरी चाऊ। दादी बोली—'मरज्याणा, अठै नौकरी री खैण गडरी है काई, दिन दस होया तनैं बैठया न, तेरो कोई ठौड़ ठिकाणो है क नी, बेटा, अठै आवैगा रोट पाडण नै, देखो, आज गाडी चढ़ ज्याई, या तेरै और एडै लागी, जे रसोई कानी चल्यो गयो तो मेरै बरगो बुरो मत जाणी, ई खल्लै रो काई नाम है, जट पाड लेस्यू।

दादी बीरो जवान माजनो ले लियो, दिन छिपे बड़ी अटकळ स्यू बीन रोटी खुवाई, दादी नैं पतो कोनी लाग्यो, दादी नैं खरचो कोनी सुहावतो, दादी रो जावणो ही ठीक हो, दादी नैं दूजै दिन बीदाई दे दी, बा जांवती बक्त हजार रिपिया कोनी भूली।

5

चुनाव रो सिलसिलो सरू, नेतावा रा भाषण तेज अर तीखा होग्या, जन-सम्पर्क बधण लागग्यो, देस रो पैलो चुनाव, सविधान रै मुजहब हर बालिग रो बोट, जनता मे नयो उत्साह, नयो जोश, आपणी सरकार, आपणो देस, आपणो राज। सत्ताधारी दल रै सार्थ विरोधी दल, देस रा कई मोटा नेता विरोधीदल बणा लिया, अै दल सत्ताधारी दल री जहर

काट करै ।

पापा रो काम भी वधग्यो, अै सरकार रै काम रै साथै पार्टी रो काम भी करै, दौरांवां री तादाद बधगी, घरे कम रवै, बारै घणा । कदेकदास म्हूं भी पापा रै साथै जावती । पापा मनै कदे कदे राजनीति री बात बतांवता, वा कदे समझ मे आंवती, कदे नो आंवती, पापा रो चिन्तन ऊंचो, विचार ऊंचा, सोच-समझ ऊंचो, वांरी विचारधारा एक दर्शन जको ऊंडो अर गहरो ।

कोठी में पार्टी रै कार्यकर्तावां री भीड़ वधण लागगी, नया नया लोग, नया नया चेहरा, बूढा, जुवान, आदमी, लुगाई सगळा ही ।

एक दिन पापा रै कार्यकर्त्तावां में बोलै, कार्यकर्त्तावां री गुपताऊं मीटीग पापा चुनाव-समिति रा सदस्य, पापा नै आपरै छेत्र रै उमीदवारां रो चयन करणै रो पूरो अधिकार। राज री चुनाव-समिति रा लूंठा सदस्यां में स्यूं म्हारा पापा एक लूंठा सदस्य। कार्यकर्त्ता पापा री घणी चापलूसी मे लाग्येडा । वौंया तो सगळां सदस्या ही आपणी बात कयी, पण पापा री बात घणी व्यावहारिक। पापा कयो—पार्टी रो संगठन भोत जरूरी, चुनाव सारू हर कार्यकर्त्ता रो पूरो समर्पण, जी ध्यान स्यू आपरै उम्मीवार नै जीतावणां री पूरी चेस्टा। टिकट तो एक ही आदमी नै मिलसी पण दूजा इसै मनोयोग स्यू जुड़ै के उम्मीदवार री हार बीरी हार मान'र चालै। टिकटां देवण में जको बात रैंवसी—बो कार्यकर्त्ता रो बी जात रो होवै जकी जात रो वठै बहूमत, उम्मीदवार रै धन री जरूरत, पार्टी की पीसा देसी, पार्टी कनै पीसा आसी कठैऊं, चंदै स्यूं, इसा आदमी भी साथै मिलाणा पड़सी जका पीसा आळा है, नीं तो पार्टी पीसा रै टोटै मे कमजोर पडसी, चुनाव पीसां रो खेल है, उम्मीदवार एहड़ो होवणो चाहिजै जकै री इमेज बी छेत्र मे आछै आदमी रै रूप मे होवै ईं रै साथै बो पार्टी रो कार्यकर्त्ता भी होवै जे जेळ गयोड़ो होवै तो बीरी होड कोनी ।

पापा नै भापण रै पाछै शिवमंगल जी जरा पार्टी रा मोटा कार्यकर्त्ता हा, कई बार जेळ मे भी गयेड़ा हा पापा रै भापण रो प्रतिरोध करचो । वां कयो—'बिरमानंदजी री बातां और तो आछी पण जकी बात जात रै बाबत कयी है, म्हानै भोत अखरी है, म्हारै साथै दूजा लोगा नै भी आ बात

अखरसी, आपणो ओ चुनाव देस रो पैलो चुनाव है अर आपा जे उम्मीदवारा रै चुनाव सारू जातवाद रो मापदड लेस्यां तो नेचय ही जातवाद नैं बढावो मिलसी। आपा अगरेजां रो विरोध करयो, बा जाण बूझन हिंदू मुसलमान रो सवाल पैदा करचो, अर देस रा दो टुकड़ा हुया, आपणा नेतावां घणो हीं ताण मारयो, पण देस रा दो टुकड़ा हुया। जे आपां ही इण बात नैं बढावो देस्या तो देस रा और टुकड़ा होज्यासी, जातिया में वैर बध ज्यासी, गाव गाव अर गळी गळी में फौजदारयां हो ज्यासी, आ नई परम्परा देस सारू घणी घातक होसी।'

शिवमगलजी री इण बात रो असर तो होयो, पण अबार राजनीति रो मोड त्याग कानी कोनी हो, स्वारथ कानी हो, शिवमंगलजी स्वारथ स्यूं ऊपर उठेडा हा, इण बात तो असर स्वारथ रै चस्मैं स्यूं देखीजै ही।

पापा राजनीति रा स्याणा मिनख हा, कोरा सिद्धान्तां अर आदर्शां स्यूं माडेडा कोनी हा, बा आवती बकत शिवमगलजी नैं आपरी कार मे साथै बिठा लिया। पण शिवमगलजी कोठी स्यूं निकळ्या जद भी रिसाणा हा, पापा बानैं आपरी कार में ही पाछा भिजवाया, पण दूजै दिन अखबारा मे खबर छपगी के शिवमगलजी पार्टी छोडदी अर विरोधिया रै साथै गठबधन कर लियो।

चुनावा रो रग चढग्यो। ब्यारूं कूटा भापणा रो जोर, गळी गळी मे पोस्टर लागग्या, जीपा पर जीपा बगण लागगी। पार्टया रा झंडा सिखर चढग्या। पण म्हारा पापा तो संकट लिखार ल्याया हा, एक सकट और आयो। पार्टी रा कई नेता म्हारै पापा स्यू नाराज होग्या, नाराज तो होवणा ही हा, कया नैं टिकट कोनी मिली, कया नै टिकट तो मिली पण जकी ठौड़ बै चावा हा—बठै कोनी मिली, कई बारै साथै हो लिया, बै सगळा भेळा होया दिल्ली गया, दिल्ली हाई कमाड स्यूं मिल्या, पण बांरी एकर तो पार पड़ी कोनी, पण लैर पडेडा बुरा होवैं, बां लैरचो छोडयो कोनी, प्रधानमंत्री राज री राजधानी रै दौरै पर आया, अठै बै ओजूं मिल्या—बा पापा पर लाछण लगाया—ओ जातिवादी आदमी है, मुसलमाना रो विरोधी है, मुसलमाना नैं हिन्दू बणवावै है, थाकै साथै झूठी फोटू छपवा मेली है, ई रा अण पोस्टर निकाळ राख्या है. एहडा झूठा साचा मनघड़न्त लाछण एक

सायै लेयन गया। प्रधानमंत्री पापा नैं बुलायो, साफ-साफ कैह दियो—आप पार्टी रै निसान माथै चुनाव नीं लड़ सकोला।

पण नाम पाछा लेवण री तिथ निकळ चुकी, पापा रो नाम तो रह्यो, निसान भी रह्यो, पण पापा आप रै क्षेत्र में कोनी गया। पापा रै नाम रो इत्तो प्रचार हो, पापा इत्ता लोकप्रिय हा, पापा री प्रतिष्ठा इत्ती बढ़ी चढ़ी ही के आरा पुजारी घर घर हा।

इन्नैं राज रा राजामहा राजा चुनाव में कूदोड़ा हा, कई राजा महाराजा पापा री पार्टी रैं साथै हा, पण घणकरा विरोधी हा। कई सेठ साहूकार सत्ताधारी पार्टी रैं साथै हा तो कई विरोधी हा। पापा रा होठ सूकड़ो रैवता। मूंडो काळो टैंरो-सो रैवतो। घरे तो कदेई भूल्या भटक्या रात बिरात ही आवता तो घटा आध घटा ही रैवता।

चुनाव काई हो, पीसा रो खेल हो। पतो नी कठैऊ ओ पीसो आवतो, गरीब गुरबैं कनैं तो देवण हो ही काई, इसो लागै हो जाणै सेठ-साहूकारा, राजा-महाराजावा री तिजूरया चौबीस घटा खुली रैवती। साची बात आ है के ओ गरीब ही पीसै री रट लगाया राखै, पीसै आळै रै पीसो याद ही कोनी, ओ तो पीसै रो खेल करै, बो खेल नै ही बो ढूढतो रवै। जदै करोड़ री माया बेली पड़ी रवै, बो पीसै रो फिकर क्यू करै। पीसै रो फिकर तो बो करै जठै आथणनैं दाणा री विध कोनी।

एक दिन पापा आपरै खास आदमिया री मीटीग ओजू बुलाई, बानैं एक ही बात कयो—'आपा नैं हर हालत स्यू बोट बटोरणा है, जाति रै नाम पर, धरम रैं नाम पर, गांधी रैं नाम पर, नेहरू रैं नाम पर, जठै पीसो चालै पीसो फेंको, जठै दारू चालै, दारू री बोतल फेंको। देस रै लोगा में धरम री, मिन्दर री, मस्जिद री घणी कमजोरयां है, कोनैं खुदा री तो कीनैं भगवान् री, कीनैं गुरु ग्रन्थसाहब री सौगन्धा खुवावो, कोरै सिद्धान्त पर चाल्या तो पिट ज्यावोला। विरोधी आपरा हर हथकड़ा काम में लेरया है, चूकग्या तो मारया जावोला, राज हाथ स्यू निकळ जासी। राजा महाराजा रो भोत असर है, राज हाथ स्यू मत जावण द्यो।'

चुनाव आपरै पूरे रग में आग्यो। नेतावा रा पग धरती पर कोनी टिकै हा, जीयां टीबा रा टीबा चीर नाख्या, सड़कां नैं न दिन नैं न रात नैं

धैन हो। नैना मोग अबै हवा में घूमण लागग्या आभो गरणा यैं हो, परतो धूर्ज ही।

आखर एक दिन धैन आयो। वोट पड़ण लागग्या। पापा घरे आया सोग्या। पूरै दिन नींद में पड़या रहया। म्हारो सगळा री जी आवळ बावळ होरयो हो। पतो नी काई होसी, पार्टी जीतै जद् पार्टी रो राज होवै, पापा जीतै तो पापा राज में आवै, जद् ओजूं आ कोठी, कार, ओ आराम आ इज्जत रवै, बणी रवै। पापा री तो हालत ही अजीब, पापा तो राज री पार्टी में ही कोनी, पापा जीत भी जावै तो पतो नी, राज आवै के नी। जित्ता लोग जित्ती वाता। कई लोग तो कवै—विरमानंद रो पत्तो कटग्यो, म्हारो जी भोत ही खराब होवै। कई कवै—जी मत हिलावो, प्रधानमंत्री वावळा कोनी, बानै लोगा बहका दिया, थारै पापा रै काम नै देखन भोत खुस है, थारा पापा कठैइ कोनी जावै। म्हे रोज अखबार देखा, कोई की बकै, कोई की। इया लागरयो हो जाणै म्हे फांसी रै तख्तै पर चढ़रया हा, पतो नी कद् बटण दब ज्यावै।

दूजै दिन गिणती सरू, मसां छ बजाया, फेर रेडियै पर नतीजा सरू हुया, पापा जकै दिन कठैइ कोनी गया। पापा अर म्हे सगळा फोन कनै बैठ्या रहया। रात नै दस बजता ही, एक समचार फोन स्यूं आयो—मुख्यमंत्री हारग्या, फेर समचार आयो थी हलकै में पार्टी रो ही सफायो होग्यो, सगळै महाराजा रा आदमी आग्या, अबै तो म्हा सगळा रो जी हालग्यो, अबै ठोड कठै, पापा भी निरास होग्या, मुख्यमंत्री पापा रा खास आदमी हा, वांरै हारणैं स्यूं पापा दुखी भोत होग्या। म्हानै नींद कठै ही।

फेर रात नै दो बजे पापा रैं जीत री खबर आयी, म्हे सगळां ताळी बजाई, पापा री पार्टी रा घणकरा आदमी जीतग्या, फेर तो मा स्पेशल चाय बणान ल्यायी। दिन उगे ताई स्थिति साफ होगी। पार्टी मसां सरकार बणा सकैली। रात नै ही लोग बधाई देवण पापा कनैं आयग्या। दिन उगे तो भारी भीड होगी। पापा रा गळो माळावा स्यूं भरीजग्यो। करीब आठ बजे दिल्ली स्यूं फोन आग्यो—पापा रैं प्रति प्रधानमंत्री रो भ्रम दूर होग्यो, अबै वैं पार्टी सारू काम करैला। दूजैं दिन तो अखबारा नैं पापा रो नाम मोटैं आखरा में छप्यो। साची बात आ हुई के पापा रा निजी आदमी जिता

जीत्या वै कों नेता रा कोनी जीत्या। अबै राज रै नेता रो चुनाव आरी मुट्ठी में होग्यो, औ चावै जकै नै राज देवै, इयां करन राज में पापा री स्थिति सगळा नेतावां स्यूं मजबूत होगी, अबै लोग थारी हाजरी घणी भरै, राज में अबै पापा री चौधर रैसी, आ बात इण चुनाव स्यूं साफ साफ होगी।

6

मंत्रीमंडळ बण्यो अर पापा जको चायो बै मुख्य-मंत्री बण्या—गौड साहब। इया लागै हा जाणै गौड सा'ब आपरी कठपुतळी हुवै, दिन में दो बार हाजरी भरै गौड सा'ब अर पावली चलै पापा री, पापा नै ऊंचै हू ऊंचो विभाग मिल्यो—पुलिस रा मंत्री तो राज रै आई. जी. पी. स्यूं लेयर थाणैदार तक पापा री हाजरी भरै, की एस पी. नै कठै लगाणो, की थाणैदार न कठै लगाणो, ओ पापा रै हाथ में।

एक दिन स्वामी जी आग्या, स्वामीजी घणै दिनां स्यूं आया अर आवतां ही बोळ्या—कठै है बो विरमानद ?

पापा दौरै पर गयेड़ा, म्हे लोगा स्वामी जी नै घरे ठैरा लियो। पापा दो दिनां मे आया जद् ताई स्वामीजी पापा री काट ही काट करी, म्हे समझग्या, स्वामीजी पापा पर नाराज है।

पापा तो आवणा ही हा, पापा आया जद् म्हे बतायो, स्वामी आयेड़ा है।

पापा स्वामीजी साथै ही खाणो खायो। स्वामीजी तो पापा साथै लड़ण लागग्या। बोल्या—तू आ बता, थानै राज करणो है या देस बणाणो है।

पापा बोल्या—देस बणाणै सारू ही तो म्हे राज करां हां।

—ओ देस बणाणै रो तरीको है, स्वामीजी ओळमो-सो दियो।

—गलती तो बताओ, स्वामीजी, पापा कयो।

—तू आ बता, देस मे राज सही लोगां रो होवैलो जद् देस बणैलो या गलत आदमिया स्यू ।

—सही आदमिया स्यू, पापा जवाब दियो ।

दोनू साथै साथै भोजन अरोगा हा ।

—तू सिवमगल नै फंवयो अर बी रामदास नै साथै लियो जको एक नम्बर रो बदमाश, गुंडो, तस्करी अर कांई कांई बताऊं, बीनै तू एम. एल. ए री टिकट दी, बीनै जितायो अर वै अबार इलाकै में गुडागरदी फैला राखी है, कीनै मारै तो मारै अर बक्सै तो बक्सै, फेर तू होग्यो होम-मंत्री, फेर बो कौरै सारै। जका बीनै वोट नी दिया, भला आदमी है, बानै मुकद्मा मे फसा दिया अर जेळ मे दिराव दिया। इत्तो माडो राज तो अगरेजा अर राजावा रो कोनी हो, आ बीमारी तू कठैऊ पैदा करली। सिवमगल जको भलो आदमी, ऊमर मे पार्टी सारू काम करयो, अपणो सारो घर लगा दियो, लगा के दियो होम दियो, बीनै तू पार्टी स्यू काडयो, बण तनै मान्यो कोनी, आ ही तो बात ही, बीनै हरायो, अबै बो दर दर भीख मांगण जोगो होरयो है। बीरो घर बिकग्यो, बीरी जमीन बिकगी, अर बो हारग्यो, अबै बो तेरो रामदास बीरै अर बीरै आदमिया रै लैरै पड़रयो है। थो राज है जकै सारु आपा कुरबानी दी।'

पण पापा इण खेल रा अनूठा खिलाडी हा वै अगलै रै मनोविज्ञान नै भली भात समझता अर बीनै छाटा देवणा भी बै जाणता। दोना खाणो खा लियो। दोना चुळू करली ही, हाथ साफ कर लिया। पापा कैवणै स्यू पैली पूछ लियो—स्वामी जी, और कोई-ओळमो, थे पूरी हवड़ास काड लेइयो, फेर बात करूला।

—म्हू तो पूरी बात कैयदी, तू कह, स्वामी जी कयो, पापा बोल्या—स्वामीजी, ओ राज रो काम है, आप जाणो हो, म्हानै अबार ई चुनाव मे कित्ती टक्कर लेवणी पड़ी, राजा महाराजा म्हारै सामै आया, वा लोगां कनै कोई कमी कोनी ही, बांरो राज हो, बा कनै पूरा आदमी हा, पूरो खजानो, इत्तो खजानो कई पीढयां तांई खुला बरतै तो नीवडै कोनी। म्हे लोग सगळा ही गरीब घरा रा हा, जे आज आ जगां छूट ज्यावै तो आयणनै हीं रोटी रो सासो पड ज्यावै, चूलो कोनी सिलगै। म्हे गरीबां टक्कर ली बा लोगा

स्यू, फकत गरीबा सारू राज ल्यावण नै, गरीबां नै ऊंचा उठावण नै, आप जाणो हो, म्हे लोग आं गरीबा खातर कितरो काम करयो हां—जगा-जगा स्कूल, अस्पताल, सडक, बिजली, देस चमन बण ज्यासी, म्हारै सामै स्कीम है मोटी मोटी नहरा री, नहरा आवता ही आपणो इलाको गुलजार हो ज्यासी, अठै आज पीवण नै पाणी कोनी, लोग पाच पांच कोस स्यू मीठो पाणी ल्यावै है। अठै चप्पै चप्पै मे पाणी फैल ज्यासी, काळ पडया तो लोगां छोडा खाया, आज भी गावै है अठै अगूरा री बेलां ऊगसी, लोग खोखा री जगां अंगूर खासी। राजा महाराजा तो राज करयो ही, काई करयो, घोला पाळया, दारू पी, रांडा नचाई, वो ही काम ओजू करता, कित्तो टकराव हो, बिना पीसा आं होवै कया, चुनाव मे कित्तो खरचो लाग्यो। गरीबां कनै तो फकत वोट हा, पैट्रोल पाणी री तरिया फूंको ज्यो, जे राज रो खजानो छेड़ो तो राज जेळ मे धर देवै, ऊमर में कोनी निकळ सका, की सेठां रो सारो लेवणो पडयो, की पीसा आळा नै साथै लिया, बिना मतलब वै क्यू आवै वानै की मतलब दियो, की और मतलब री बात करणी पडी, जद ओ राज ओजूं हाथ आयो, जद् की काम करण जोगा होयां हा, आप तो एक सिवमगल री बात करो हो, राज न रैवतो तो कित्ता सिवमगला रै सिर में पडती, राजा म्हां सगळा सिवमंगला रो पीच'न पाणी काड नाखतो; जे वांरो राज आवतो। आप कनै बैठन कित्तो गुणावो हो। सुणा कोनी सकता थे मिल ही कोनी सकता, स्यो बात रामदास री, म्हू बीनै चुलान समझा देस्यू, फीकर मत करो, आप तो अपणी सस्था रो ध्यान राखो, ईनै वेगी ही कोलेज बणावणै री सोचा हा, आपणै गावां रा टाबर भणै, लायक बणै, ऊंचै ओहदा पर जावै।'

स्वामी जी पिघळ'र पाणी होग्या, भोळा आदमी हा, भावुक हा, कण ही बहकायो, बीया ही लगग्या। पापा तो स्वामीजी रै आंजूं पगां लाग्या, फेर चल्या गया।

दिन छिपणै स्यू पैली ही पापा रामदास नै बुला लियो। पापा बीनै एकलै नै समझायो—बावलिया, तू काई करै है? स्वामीजी नै नाराज कर राख्या है, वो सिवमंगल स्वामीजी स्यू मिलै है, आनै बहकावै है, जे बिचरग्यो तो तेरो अर मेरो दोनां रो भविस्य खराब होसी, ई रो

है, इसै त्यागी आदमी रो प्रचार भोत मूडो होवै है । फिर सिवमगल मामूली आदमी कोनी, बीरो त्याग है, बो मर्‌यो कोनी यो घणो जियो है, बीनै हारणै स्यू ज्यान आई है, तेरै कनै तेरो थाणेदार इण सारू भेज्यो है के तेरो धधो कर, धन बटोर, आगै थारै म्हारै काम आसी, पण कीनै तग करणो, परेसान करणो। आपा खतम होस्यां, राजनीति नै समझ, धक्को मत चला। स्वामी रै दो वकत हाजरी भर, संस्था में चदो दे, आरै पगां में धोक लगा, तेरो बेडो पार। तरकीब स्यू काम ले।'

पापा रामदास नै गुरुमंत्र दे दियो। बो सीधो स्वामीजी कनै आयो, पगां धोक दी, माफी मागी, कई देर बैठ्यो रयो बातां करी, स्वामीजी बाग-बाग होग्या, काळजो वरफ जैड़ो सीतळ होग्यो।

नेता री अकल काळै साप री तरियां चिकणी चुपड़ी होवै। बी जिसी ही चाल हुवै, पण जे डंक मारै तो अगलो पाणी कोनी मांगै। स्वामी जिसै भोळै मिनख नै लोग कांई काड देवै।

स्वामीजी खूब राजी होयन पूठा चल्या गया।

7

म्हारै ठाठ बाठ में अबार कांई कमी ही। पूरै पाच साल री पक्की मोहर लागगी। पापा रो रुतबो घणो ऊंचो होग्यो। अबार तो सारो मंत्री-मंडल मुट्ठी में, पापा कनै देस रा मोटा मिनख आवै मोटा मोटा आदम्या रो काम सारै। बड़ी बडी हुस्तियां पापा रै मूंडै कानी जोवै, मरजी आवै जकै नै झिड़क देवै। एक दिन तो एक सैक्रट्री पापा रै धक्कै चढ़ग्यो, बण पापा रो काम कोनी कर्‌यो, फेर पापा बीरै मांय एहड़ो करी के खा न कुत्ता खीर। बो पापा रै सामै हाथ जोड़यां खड़्यो, मनै बीरै पर बड़ी तरस आई। इत्तै मोटै आदमी नै ही पापा कोनी बक्सै, मनै पापा पर रीस आई। पापा नै अपणै पद रो गुमान होग्यो।

एकर पापा एक एम. पी. स्यू मिलै ही कोनी'। यो दो दिना [illegible] कार्ट । मनै आं दिनां पतो लागग्यो के एम० पी० कलक्टर, सेक्रेटरी कित्ता मोटा होवै। पण पापा सामै तो वै माखी की तरियां लागै हा, कीडी मकोडी-सी दीखै ही। फेर पापा दौरै चल्या गया। वै एस. पी. मेरै कनै आया, बूढा आदमी, टाबर टीकरां आळा, म्हू तो सफा टाबर, मनै कांई पतो। मनै कयो—थारी माताजी कठै ?

म्हू वांनै माताजी कनै लेगी। वै मां नै कैवण लाग्या—म्हानै सा'ब ससपैंड कर राख्या है, म्हारी एक लड़की ब्यावण सार्वं है। एक टाबर अठै पढ़ै है। म्हारा पिताजी सुरगवास होग्या, म्हू भोत दुखी हूं। सा'ब न कह म्हानै भाळ कराओ। म्हारो कोई कसूर कोनी। एक थाणेदार हो भोत नालायक, म्हीनै बेरो कोनी हो। आंरां आदमी है। म्हूं बीरो तबादलो कर दियो। म्हारी एक सिकायत री फाइल चालै ही। नौकरी में सिकायत कीरी कोनी हुवै। सिकायत भी कांई। एक नेता रो म्हू अमल पकड लियो, कांई करां, कांई पतो लागै, कुण नेता है, कुण नी, आज तो घणां ही खद्दर पैरया फिरै है, पण आ सिकायत करवा दी के म्हूं राजा रो आदमी हू, नेता पर झूठो अमल रो केस बणायो है, अमल एस० पी० खुद बीरी पेटी में दाब दियो, ओ बसणो कयां होसी, राजा के राज में बारा नौकर अर राज में आरा नौकर।'

वो मा रै सामैं रोवण लागग्यो ज्यू टाबर मां रै सामैं रोवै, मनै बी पर भोत दया आई। म्हारै हाथ में कलम होवै तो अबार इनै भाळ रो हुक्म देदयू।

मा बीनै पूरो आस्वासन दियो, आस्वासन ही कोनी दियो, पापा रै आंवता ही बीरो काम करवा दियो।

पापा रो व्यक्तित्व विचित्र हो अर बारो काम करणै को तरीको भी विचित्र। एकर री बात, पापा आई० जी० पी० नै खाणै खातर बुलायो। आई० जी० पी० नै खाणो परोस्यो—कांई? बाजरी री रोटी अर गुंवार फळी री साग — बस। पापा तो इण खाणै नै चाव स्यू खावै, पण आई० जी० पी० मदरासी, कांई खावै अर कयां खावै। पापा खांवता जावै, अर बात करता जावै—'आई० जी० पी० सा'ब, खाणो खावो, इण भोजन नै खावै आज देस री नव्वै फीसदी जनता, म्हे इण जनता का प्रतिनिधि, म्हे भी ओ ही खाणो

मुळक्यो तो म्हारो जीव जगा छोड़्यो, म्हूं काच स्यूं परनै हटगी, वो चल्यो गयो जद् म्हारो जीव टिक्यो ।

रेखा घणी वार मनै कार मे बैठाव आपरै घरे ले ज्यांवती, म्हूं बठै बीरै टावर साथै रमती । बीरै घरे बीरो धणी, एक नौकराणी अर बीरो एक टावर हो—छोटी-सी गुडिया जैड़ी नानकी, रेखा जैड़ी फूटरी, एक छोरो राख छोड्यो हो बीरै खिलावणै खातर । भोत खिलौणा हा, यां स्यूं बा खेलती रैवती । म्हूं जांवती ही बी गुड्डी नै गोदी मे ले लेंवती, नाम तो बीरो नीता हो, बण सगळा बीनै गुड्डी-गुड्डी ही करता । म्हूं गुड्डी नै भोत खिलांवती । रेखा जद् काम पर जावती अर काम करती तो गुड्डी नै कोनी राखती । एक दिन म्हूं गुड्डी नै म्हारै साथै घरे लेगी, कई देर पापा बीनै राखी, बण पापा री गोदी में पेसाब कर दियो, फेर तो सै ही हंसण लागग्या, पापा नै कपड़ा बदळना पड़्या । फेर मां बीनै गोदी मे ली, म्हे कई देर तांई बी स्यूं खेल्या, फेर ओजू बीनै घरे लेग्या ।

रेखा जद् बात करती तो बीरी बात में घणो मिठास हो, कई बार बा बात डूगी कर देंवती, म्हारै समझ में कोनी आवती । मेरै खातर बां कैंवती, 'तनै म्हूं मिनिस्टर बणा स्यू ।' जद् म्हू समझती, म्हू भी मिनिस्टर बण स्यू । मनै बां दिनां मिनिस्टरी नेड़ै-सी लागती ।

म्हू अबार इत्ती स्याणी तो होगी ही के दुनियादारी-री बात समझण लागगी ही । अखबार आळा इत्ता काड्यां होवै है के बै कीनै ही बक्सै कोनी । बै पापा अर रेखा न लेयन बात उछाळन लागग्या । म्हूं आ बात मां नै सुणांवती, मां पढेडी तो कोनी ही, पण लोग आग जकी बात करता, बा स्यूं ही बां सगळी बाता पढ लेंवती, लोग बागा री बातां ही बी सारू अखबार हा ।

मा कैवती—दुनिया भोत टेढी धुळबी गाठ है । ईनै समझावणी, समझणी अर सुळझावणी—भोत ओखी है, आ परायै सुख दूबली है, आपणै पर लोग भोत खार खावै है, लोगां नै बात मिलणी चाहिजै, फेर तो लै तेरी बदै के मेरी ।

एक दिन पापा भी इण बात नै लेया गभीर होग्या— बातो सार री बात कैंयदी—लोग पैली प्रचार-प्रसार सारू झूट्या करता । साची बात कैवता

ही डरता। अबै प्रचार-प्रसार री पूरी छट है। आ अखबारां तो सफा ही गपोळ खीचड़ी कर दी। जे आ अयां ही चालती रयी तो काम करण आळा काम करणो छोड देसी। माड़ै रै नीचै आछो दब ज्यासी, फेर लोग माड़ै करणै स्यू झिझकैला कोनी, भलाई बैठ ज्यासी बुराई दब ज्यासी।

अखबार चार दिन ची-ची करत थमग्या। बांरी कण ही ग्यान गिणती कोनी करी। रोळै रै सामी चालै तो रोळो वधै, रोळै नै कोई निजरा सामी नी करै तो आपी थमज्यावै, आ ही बात इण घटना सारू हुई, बात घणी बदी कोनी, आपी दबगी।

पण एक दिन दादी आगी तो वण घर मे तुरळ मचादी। आ आयन बैठी कोनी, सीधी इण बात नै छेड दी—अरै मुराजड़ी, थारी मा कठै है?

—मा, थारै सारू चाय वणावै, म्हू कयो।

—अरै चाय तो तू फेर वणा लेई, पैली म्हारी बात सुण।

मा आगी, सामै ऊबी होगी।

—बोलो, माताजी, मनै बुलाई, मां कयो।

—अरै आ रेखली कुण है?

दादी नाम बीगाड़न बोलती।

—क्यूं माताजी, वा तो मिनिस्टर है।

—लोगां गाव नै चक राख्यो है के बीरमै रेखली साथै घर वासो कर लियो, आ बीरी दूजी लुगाई है।

मां हंसण लागगी, म्हूं भी हसी।

मा हसी तो दादी समझगी, मां रसोई मे जायन चाय ले आई। दादी बैठगी, थोड़ो सारो लियो। फेर दादी चाय पीवण लागगी।

मा ध्यावस स्यूं पूछ्यो—अबै बताओ, काई बात है?

दादी बोली—म्हूं झूठ कोनी कूं, बीनणी। म्हूं इण काम सारू अठै आई। लोगां मनै टिकण कोनी दी। मनै तो भोत फिकर होग्यो। म्हूं सोच्यो—अवार टावरां रो कुण धणी। एक सिपाही हो पुलस मे, बीनै राजा देदी जागीर। बण मरज्याणै आपरी घर आळी नै छोड दी अर दूजो ब्याव कर लियो, तो ओ धन अर राज कुवध करावै। चोखै सै चोखै आदमी री खोपड़ी खराब हो ज्यावै। लुगाई की जात इसी होवै रे, रीसी मुनिया रो

रेखा दादी अर मनै पूठी गाडी में भिजवायी।

दादी बाग बाग होरी ही। आवतां ही बोली—बीनणी, लोग मर ज्याणा इया ही बकै है, काळजो बळै काळजो, ईस्कै रै मारै करै ए, म्हूं अबार समझी। रेखा है लुगाई लाख रिपिया री, देख, मनै एक वेस दियो है, सौ रिपिया।

मा दादी री खुसी नै आपरी खुसी मानी।

9

अबै कोठी अर कार म्हारै सै गै होगी। न कोठी म्हारै सारू नई चीज ही अर न कार, इसो लागण लागग्यो जाणै म्हारी जिन्दगी साथै आ जुड़ेडी हुवै। पापा कनै भीड़ रो कोई ठिकाणो कोनी, दिनगै मिलण आळा रो तांतो लाग ज्यावतो, मोड़ै ताई आ तगस टूटती कोनी। पापा न्हाधोयन बैठ ज्यांवता, हरेक री सुणता, आपरी जाण मे हरेक रो जीसोरो कर भेजता। म्हारै विचार मे ओ काम भोत दोरो हो, लोग भी की आस लेयन आंवता। सगळा जायज बात लेया आवता, आ बात कोनी ही। सगळ ही पापा रा आदमी होवता, आ बात भी कोनी ही। पापा नै आपणै आदमी री पहचाण साथै काम री भी पहचाण ही। पापा काम नै की तरीकै स्यू करणो है, काम करणो है या टरकाणो है, आ बात भी पापा स्यूं छानी कोनी ही। पापा नै कैवणै स्यू सगळा काम हो ज्यावता, आ बात भी नी ही, कई काम तो आपी हो ज्यावता, पापा रो नाम होवतो, कई काम पापा जद गोडी लगांवता जद होवता। पण कुल मिला'र भीड बणी रैवती, कई तो ऐन नेड़ै होवता, बै कोठी मे ठहरता, बा सारू कोठी मे जगा ही, रोटी और चाय कोठी स्यू ही मिलती। अबार मा घण करां आदमियां नैं सकल स्यूं पीछाण लागगी, बारा नाम तकात लेवती, ईस्यू पापा री राजनीति मे फायदो होवतो। इण बात नै मां आछी तरियां जाणती। पण मोटी बात आही के पापा रा आदमियां

रा काम होवता, ओरां रा काम कोनी होवता, ओ जनता रो राज हो, आ बात तो कोनी जचै, हो पार्टी रो राज हो। पण कदे कदे दुसमण नै दोस्त बणाणो होवतो अर पार्टी नै साथै लेवणो होवतो तो पापा बीरै काम में भी रुचि लेंवता, पण कदे कदे कई सांप भी दूध पी ज्यांवता।

पापा रो काम बदतो दीस्यो तो पापा आपरी मदद सारू दो आदमी राख लिया—चैनसिह जी अर रामनिवास जी। चैनसिंह जी आपरी कोठी म्यारी लेली, पण रामनिवासजी आवता-जावता रैवता, दोनू ही पाकेड़ी ऊमर रा हा।

चैनसिहजी जद् पैलीपोत आया, बांरी नाड़ निकळेडी ही, पेट में आळा पड़रया हा, जवाड़ा बैठेड़ा हा चाहे मुट्ठी दाणां घालद्यो, मूंडै पर भूर उडै ही, पामळा चाहे गिणल्यो, पण गिण्यां दिना में बांरो काघो मचग्यो, मूंडै पर लाली आगी, पेट आगीनै आवण लागग्यो, रोज सूट बदळया करता, इयां लागता जाणै बिना विभाग रा मंत्री होवै। बारै कनै नित नई कार होवती। फेर पतो लाग्यो कै राज रा लखपति, करोड़पति काम सारू बारै कनै आंवता अर आपरो काम करावता, म्हूं एक दिन पापा रै साथै बांरै बगलै में गयो, बंगलो काई हो, एक रहीस रो घर हो जाणै, कमरो पूरो सजेड़ो, माही टेली-विजन अर टेलीफोन। बंगलै रै बारै रहीसां री कारां खडी, म्हारी कार तो बांरै सामै की कोनी।

चैनसिहजी, लोग कैवता, बढ़िया ऊं बढिया दारू पीवता, बढ़िया ऊं बढिया भोजन करता, वां एकलां री खरचो दो हजार हो, बारा टावर टीकर वठै कोनी रैवता। ओ पीसो कठऊ आंवतो, राम जाणै, पण बांरै की बात री कमी कोनी ही, ओ म्हानै ठाव हो। रामनिवासजी ज्यूं त्यू बारै रैवता पण आवता, जद् बै भी बी रहीसी ठाठहू, बै तो पैली स्यू ही मोटा ताजा हा, वै जात रा बाणिया अर चैनसिहजी ठाकर।

आ दोनों नै लेयर फेर अखबारा में तुरळ मची, म्हूं पढ़ी, फेर पतो लाग्यो के बांरो काई काम हो। अै पूरै मंत्रीमंडल रा दलाल बताया गया जकां रै माध्यम स्यू सगळा मंत्री खावै, फेर तो एक दिन अखबार में निकळी आ खबर म्हारै पापा रै खिलाफ ही के म्हारा पापा चैनसिह रै मार्फत एक काण्ड में पूरा लाख रिपिया खाग्या। म्हारी पापा री बड़ी बदनामी ही—

म्हानै ओ तो दुख उठयो, पण पापा कनै एक लाख रिपिया आग्या, म्हारै मन ही मन मे लाडू-सा फूटया। मा नै कयो जद् मां सगळी बात ही धूड़ मे मिला दी—बेटा, सगळी बांता झूठी है, तेरै पापा नैं बदनामी दिराणै सारू लोग अै घधा करै है, पण म्हारै कम जमी क्यूंके बिना पीसा चैनसिहजी रै डील पर चरबी कोनी चढती।

एक दिन फेर स्वामीजी आग्या। स्वामीजी आवता जद् एक ओळमें री पोटळी बाधन ल्यावता। म्हू बारै आवता ही म्हू समझगी, बाबो ओळमो लेयन आयो है। स्वामी जी साची पूछो तो साधु ही हा, साधु रो मन पाप पुन स्यू दूर होवै है, वै पाप रै तो नेड़ै ही कोनी जावै, जद् पाप नै कांई समझै। बारो व्यक्तित्व दूध मो पवितर हो, बामे हळको सो उफाण आंवतो अर थोडा-सा ठडा छाटा दिया अर फेर शीतल। पण पापा रो व्यक्तित्व बेहद व्यापक हो। वै हंसता तो एहडा लागता जाणै परभात री बेळा मे भात भातरा फूल खिलैडा होवै अर बा मे एक झरणो चालै, चाणचकै एक पल मे वै गंभीर हो ज्यावता ज्यू हिंवाळो ऊभो है। जद् वै बोलता तो जाणै डूंगो दरियाव एक गतिस्यू हळवां हळवा चालै है। जद् वै रिसाणै होवता तो समदर आपरी सीव छोडतो सो लागतो फेर एक दम एहडी करवट लेवता ज्यू तूफान हो अर एक झटकै स्यू ठडो पडग्यो।

पापा स्वामी रै पगां लाग्या अर बैठाया बैजाणै स्वामीजी रै ओळमैं सारू त्यार हा। स्वामीजी समाज सेवी हा तो पापा राजनीतिक। पापा स्वामीजी नैं आपरा गुरु मानता, पण स्वामीजी आजादी न मिलणै तांई पापा रा गुरु रहया, जद् तांई स्वामीजी अर पापा रो एक मारग हो, पण सत्ता रैं आणै रैं बाद दोना रा मारग न्यारा न्यारा होग्या, पण स्वामीजी रैं ओजू तांई आ बात समझ में कोनी आई। स्वामीजी कयो—'बिरमानद, म्हूं एक बात सुणी कान पापी है, म्हूं कै नी सकू, बात कठै तांई साची है, पण मनै भरोसो है के आ बात झूठ हो नही सकै, जद् इत्तो रोळो होग्यो है तो की तो साच है ही, थे लोगा आ कर्मचारियां स्यूं इसी सांठगाठ कर राखी है के हर थाणै रो थाणैदार एस पी. नै पीसा देवै, एस. पी., आई. जी. पी. नैं पीसा देवै फेर आई. जी. पी. थनै पीसा देवै।

पापा बीच मे की बोलै हा, पण स्वामीजी मी कऊ हा, पण स्वामी जी

बानै बोलण कोनी दियो, वै बोलता ही रया—'जद् कर्मचारी भ्रष्ट होसी तो न्याय कठै, गरीब रो भलो कठै, राज तो वो ही बड़ा आदम्या रो, अमीरां रो, गरीब तो बया ही कूकता रया, कूकता रैसी, म्हारै माथै मे आ आजादी जमी कोनी ।'

पापा बात नै टाळता कयो—स्वामीजी, एक बात आप नै कऊ हू, या तो म्हे इण देस नै एहड़ो बणा देस्यां के ओ पूठो सोनै री चिड़िया बणज्यासी या इणनै एहड़ो बीगाड देस्या के आवण आळी पीढी इनै सुधार नी सकैली ।

—आ तो म्हारै जचै है, पण एहड़ो क्यू काम करो जीस्यू ओ खोइजै, स्वामीजी कयो ।

—राह आपी वणै है, स्वामीजी, कोरै बणाया कोनी वणै, आज संसार री रीसी, मुनि, विचारक, चिन्तक कित्तो सोच्यो, विचारचो, चिन्तन कर, आप आप रै ढंग री व्यवस्था दी, पण सृष्टि स्यू पाप नी मिट सक्यो, अन्याय नी मिट सक्यो, शोषण नी मिट सक्यो ।

स्वामीजी फिर सोच मे पड़ग्या अर बोल्या—तो आपा अयां ही तरळो मारचो, आपरै राज खातर गरीब आगै आयो, त्याग करचो, लोगा जेळा भरी ।

—आ बात सही, पापा कयो, ओ राज अबार भी गरीब सारू है, गरीबा नै जमीन देवां हा, गरीब नै स्कूल मे भरती करां हां, गरीब स्यूं राज सारू राय मागा हा, पण गरीब ओजू गरीब है, हर ढग स्यू गरीब हूं, मन स्यू गरीब, तन स्यू गरीब अर धन स्यू गरीब । बीरी ओजू कोई औकात कोनी, बीरी औकात बणाणी है, बीनै सिक्षा देस्या, राज मे सीर देस्यां, वो धीमै धीमै आपरी औकात बणा लेसी, बीनै आज सौंक्यू सौंपद्यां तो जेड़ो कुछ है, जेडो कुछ होवणो है, बीनै खतम कर देसी । बीनै आज देस रा कारखाना कया सौंपद्यां, एक झटकै स्यू राज रो वदळाव करद्यां तो देस रो नुकसान हो जासी, मार्क्स भी आ ही बात कयी है ।

स्वामीजी कै थोड़ी थोड़ी बात जमी, पण वै ओजू सिर हलावता ही रह्या, बारो जीव टिक्यो कोनी ।

पापा फेर कयो—म्हे लोग गरीबा रा प्रतिनिधि हां, आज सारा प्रेस पूंजीपतियां रा है, प्रचार मोटा सेठां रै हाथां मे है, बै चावै कोनी कि म्हे

लोग राज करां। म्हारी पार्टी में दो गुट है, एक सेठां रो, एक गरीबां रो, म्हे लोग गरीबा रा आदमी हां, म्हां लोगां रै खिलाफ प्रचार है, स्वामीजी। म्हूं आज होम-मन्त्री हूं तो प्रचार म्हारै लारै पड़ग्यो है, ओ गरीब जको म्हारै साथै जुडेड़ो है, इनैं म्हां स्यू पासो हटावणो चावै है, आ बात आपरै समझ मे आ ज्यासी, जकै दिन आपरै सगळी बात समझ में आ ज्यासी, आप ओळमो लेयन म्हारै कनैं कोनी आसो।

10

म्हारै डोल में बेजां फरक आवण लागग्यो। आसैपासै री लुगाया कैवण लागगी—आ तो ब्यावण जोगी होगी। ब्याव रो नाम लेंवता ही म्हारै *अंग अंग मे गुदगुदी होवण लाग ज्यावती। सीसै रै सामै ऊभी होंवती* तो म्हू आप ही लाज मरती। म्हू चालती तो एहड़ो लागतो जाणै म्हारी टागां मे स्प्रिंग लागगी होवै। चांद म्हानै हंसतो दीखतो, फूल म्हानै मुळकता। जुवान छोरां री आंख्यां म्हारी आख्या में देखणै री चेस्टा करतो, म्हूं नाड़ नीची कर लेंवती। म्हूं म्हारै उभार पर चुन्नी राखण लागगी। इसो लागै हो जाणै नई चीज जकी म्हारै मे अबार ऊभर आई है, इनै म्हूं ढाकणो, छिपाणो चाऊं हूं। टीगरां री हरकता मे रीस भी आवती पण जीसोरो भी होंवतो। अबै म्हारी आंख्यां काजळ बिना कोनी रैवती, मूंडै पर हळको हळको पावडर ओलै छानै मसल लेंवती। अबै म्हानै म्हारा केस लटकता कोनी सुहावता। जाण अणजाण मे म्हू सरीर नै सिणगार देखती।

विनोद ही और नेड़ै आवण लागग्यो। कनै बैठा पोथी पढ़ण लाग ज्यावतो, बात करणै री चेस्टा करतो, म्हारै मूडै कानी देखतो ही रैवतो। म्हानै बीरी हरकता भैड़ी लागती।

एकर बो एक कागद म्हारी पोथी मे मेलता पकड्यो गयो—माडो कागज, पढ़ता ही सरम आवै।

फेर एक दिन वो म्हास्यूं बातां लागग्यो। रात नै कोई पिक्चर देखन आयो हो। बीरी कहाणी कैवण लागग्यो। फेर ब्याळू कानी देखन बोल्या— स्वराज, तू म्हानै आछी भोत लागै। म्हूं बोली—म्हूं तो सगळा नै ही आछी लागूं, मां नै, बाप नै, म्हारै भाई नै, रेखाजी नै, दादी नै, सगळा नै जका म्हारै घर में रवै।

—नी, नी, म्हूं थांस्यूं प्रेम करूं हूं।

म्हूं फेर बोली—प्रेम तो भोत बड़ी बात है, प्रेम स्यूं ही दुनिया बसै है, भगवान ई धरती रै जीवा स्यूं प्रेम करै है, जद ही आ धरती बसै है, मा-बाप आपरी औलाद स्यूं प्रेम करै तो टाबर पळै, फेर बेटा बेटी आपरै मा-बाप स्यूं प्रेम करै जद मां-बाप आपरो बुढापो काटै, भाई आपरी बहन स्यूं प्रेम करै जद बो बीनै सासरै स्यूं ल्यावै। विनोद, तू इसो ही प्रेम करै तो तू म्हारै घर रो आदमी है, पण मनै तो तेरो प्रेम कोनी लागै, तेरो माथो सिनेमा सूं खराब होयोड़ो है। म्हूं सिनेमा देखूं ही कोनी, तू सिनेमा में ज्यूं टीगर टीगरी प्रेम करै बीसो करै है तो मनै माडो लागै, तू म्हानै कागज दियो, बींरै माय बाम आवै ही, म्हूं फाड़न लैट्रिन में गेर दियो। म्हूं आ बात तेरै पापा नै, मम्मी नै कैस्यूं के तू अबार सिनेमा आळो सो प्रेम करण लागग्यो है।'

विनोद हाथ जोड़ लिया। पतो नी, जुवानी एहड़ै प्रेम स्यूं क्यूं डरै, इण में जरूर कठैई माड़ोपण हुवै, माडै काम स्यूं हरेक डरै। आछो काम स्यूं तो आदमी रो सीनो फूल ज्यावै, बो सगळां री 'वाह-वाह' लेवण सारू आगै आवै। विनोद फेर तो म्हास्यूं कतरावण लागग्यो, वण ज्यूं स्यूं घर छोड दियो।

म्हूं कदे बडेरां री गोदी में चली ज्यावती, अबै बाही बडेरा रै सामी आवणै में मनै सरम आवण लागगी। अबै म्हूं पापा रै सामी भी कोनी बैठती, पापा भी मनै गोदी में कोनी लेंवता। पण म्हारो लाड भोत राखता —'बेटी मेरी, बेटी मेरी' करता ही रैवता। कदे कदे मनै भोत ही आछी बात बतांवता, जद बै मूड में आंवता, जद बानै बेल मिलती। पापा री गंभीर मुद्रा भी भोत सुहावणी लागती। कदे कदे चैतसिहजी म्हारी गाल पर हळकी चपत लगा देवता, लाड री चपत जकी में सुख मिठास होवतो।

जद् म्हूं रीसाणी होंवती तो मां स्यूं भी लड़ती कोनी चूकती, जद् चैनसिंहजी कंवता—'आ मिर्च है ततैया मिर्च'

नीरा अर निशा भी म्हारी तरियां जुवान होगी। नीरा भोत पिक्चर देखती, या भोत बातां सुणांवती। निशा पिक्चर कोनी देखती, बीनै बाता कोनी आंवती, बा तो पढ़ाई री बात करती। बा पढ़ाई में भोत हुसियार ही। बा स्कूल री, पोथ्या री बाता करती। म्हे तीनूं बैठती तो रळीमळी बाता होवती। म्हां तीनां री जोड़ी आच्छी ही।

म्हे तीनूं ही ग्यारवीं पास करली, तीनूं ही कॉलेज में चली गई, ईनै स्यूं आम चुनाव आग्यो—देस रो, साथै राज रो। लोकसभा रो साथै विधान सभा रो। मुख्य-मन्त्री पाडे अर पापा में खटपट होगी। पाडे दखणपथी विचारधारा रो मिनख जद के पापा वामपंथी। एक दिन पापा अर पाडे दोनूं आपणी कोठी में तूं, तूं, मैं, मैं होग्या। पापा बार बार आही कवै—थारी नीति गाव विरोधी है, किसान-विरोधी है। पांडे बारबार आपरी नीतियां रो पख लेवै। इस खटपट रो असर चुनावां री टिकटां में होयो। दोना आ ही चेस्टा करी के आप आपरै आदमियां नै टिकट मिलै। पापा एक चालाकी और करी, पाडे भी करी—जठै बांरै आदमी नै टिकट नहीं मिली, बठै दोनूं बीनै हराणै सारू आपरा आदमी खड्या करया। हकीकत आ ही के प्रचार पार्टी रो कोनी हो, आपरै आदमियों रो हो।

पैलडो चुनाव जठै राजा महाराजा स्यूं टक्कर रो हो तो ओ चुनाव आपस री टक्कर हो। राजनीति सीधी स्वारथ कानी चाल पडी, ओछैपण पर आगी।

म्हूं पापा साथै घणकरी सभावां में गई, अबै पापा री नीति म्हानै राजनीति में ल्यावणै में ही। पापा आपरै साथी सारू जम'र प्रचार करता, घर घर घूमता, हर तरियां रा हथियार आजमाता—जातिवाद रो वारो असली हथियार हो। पीसा अर दारू री भी खुली छूट दे राखी ही। पण जठै बारो आदमी नीं हो चाहे पार्टी रो हो, बठै या तो वै जावता ही कोनी, जावता तो कुबेळै जावता, जे टेम सिर पूच भी जावता तो पेट दूखणै रो बहानो बणा लेवता। आपरै आदमियां स्यूं ओलै मिलता अर पार्टी रै उम्मीदवार नै हराणै सारू कैवता अर आपरै आदमी नै समर्थन दिलवाता।

इण चक्कर में म्हे एक दिन म्हारै गांव भी गया।

गांव में म्हारी भोत आवभगत हुई। पापा रै स्वागत में गळी गळी में दरवाजा बण्या। मंच भोत सजायो गयो, पण म्हे ऊतरचा म्हारै घरे हीं। दादी वठै ही। दादी रै रहण-सहण में की फरक कोनी। बोही कच्चो कोठो जको म्हारै थकां हो। कच्चै कोठै में एक माचलियो अर बी माचलियै में एक गूदडो। म्हू दादी नै बोली—दादी, भोत गरमी पडै अठै तो।

दादी री तो बै ही बातां—अरै सुराजड़ी, भोत मोडी आई गरमी आळी, तेरै वडेरां अठै ही दिन काढ्या, तेरो दादो ईं कोटडी में, ईं गरमी में रयो, अठै ही मरयो। तेरो बाप अठै ही पढयो, तेरी मां अठै ही बीनणी बणन आई।

म्हूं कांई बोलती। बो वगत एहडो हो कै म्हारा जी हजूरियां री कांई कमी। पैली म्हारै ठैरणै सारू व्यवस्था नार्कं वणी ही, पण म्हारा पापा तो पूरा राजनीतिक, वां आंवतां ही फैसलो करयो कै म्हू म्हारै घरे ठैरस्यू। फेर तो इन्तजाम करण आळा मिनटां में घर रो रूप बदळ दियो। दरी गद्दा, मसद, ढोलिया, चादरां मिनटां मे आया बिछग्या, पण दादी एहडी जिद्दण के बण आपरी खाट, गुदडियो कोनी बदळन दीन्यो।

म्हूं हवा ल्यूं, पण पसीनो कोनी मिटै, मनै महसूस होयो, आदमी रो सरीर अमीर कोनी हुवै, रहत अमीर होवै। म्हारै रैवणै रो ढंग एहडो अमीरी होग्यो के अठै तो एक मिनट ही जीव कोनी टिकै। आखा गाबा पसीनै स्यूं भीजग्या, पवन लेंवता लेवता हाथ थाकग्या, जीव घुटै, कठै जांवा। दादी स्यूं मन री वात करती, पण जीव टिकै जद होवै। गांव री छोरचा आसै पासै खड़ी, म्हारै कानी घूरै, पण बोलै नी। म्हानै कोई जाणै ही तो कोनी। फेर म्हारो पैहराव, वेसभूसा एहडी के बानै अचंभो हुवै। बारै तो बोही घाघरियो, छोटो सो कबजियो। कठैइ फेर बदळहोयो कोनी। अबार ताईं फेर बदळ करण आळी चीज गाव में बापरी कोनी—लड़कियां री स्कूल अर सिक्षा। म्हूं मन में पूरी बात धारली के अठै छोरयां रो स्कूल जरूर खुलवास्यां। पापा तो दिन भर गाव में मिलणो जुलणो राख्यो। की ताऊ रै घरे तो कदे काकै रै घरे। की दादी स्यूं बात करै तो करै की भाभी स्यूं मिलै। पापा तो वै ही सागी हा, पण अबार जको मंत्री पद स्यूं बदलाव

जद् म्हूं रीसाणें होंवती तो मां स्यू भी लड़ती कोनी चूकती, जद् चैनसिंहजी कैवता—'आ मिर्च है ततैया मिर्च'

नीरा अर निशा भी म्हारी तरियां जुवान होगी। नीरा भोत पिक्चर देखती, बा भोत बातां सुणावती। निशा पिक्चर कोनी देखती, बीनें बातां कोनी आवती, बा तो पढाई री बात करती। बा पढ़ाई में भोत हुसियार ही। वा स्कूल री, पोथ्यां री बातां करती। म्हे तीनू बैठती तो रळीमळी बातां होंवती। म्हां तीना री जोड़ी आच्छी ही।

म्हे तीनू ही ग्यारवी पास करली, तीनू ही कॉलेज में चली गई, ईनै स्यूं आम चुनाव आग्यो—देस रो, साथै राज रो। लोकसभा रो साथै विधान सभा रो। मुख्य-मंत्री पाडे अर पापा में खटपट होगी। पांडे दखणपंथी विचारधारा रो मिनख जद के पापा वामपंथी। एक दिन पापा अर पाडे दोनू आपणी कोठी में तू, तूं, मैं, मैं होग्या। पापा वार वार आही कवै—थारी नीति गाव विरोधी है, किसान-विरोधी है। पांडे बारबार आपरी नीतिया रो पख लेवै। इस खटपट रो असर चुनावां री टिकटां में होयो। दोनां आ ही चेस्टा करी के आप आपरै आदमियां नैं टिकट मिलै। पापा एक चान्नाकी और करी, पांडे भी करी—जठै बांरै आदमी नै टिकट नहीं मिली, बठै दोनू बीनैं हराणै सारू आपरा आदमी खड़्या करया। हकीकत आ ही के प्रचार पार्टी रो कोनी हो, आपरै आदमियों रो हो।

पैलड़ो चुनाव जठै राजा महाराजा स्यू टक्कर रो हो तो ओ चुनाव आपस री टक्कर हो। राजनीति सीधी स्वारथ कानी चाल पड़ी, ओछैपण पर आगी।

म्हूं पापा साथै घणकरी सभावां में गई, अबै पापा री नीति म्हानैं राजनीति में ल्यावणै में ही। पापा आपरै साथी सारू जम'र प्रचार करता, घर घर घूमता, हर तरियां रा हथियार आजमाता—जातिवाद रो बारो असली हथियार हो। पीसा अर दारू री भी खुली छूट दे राखी ही। पण जठै बारो आदमी नी हो चाहे पार्टी रो हो, बठै या तो वै जांवता ही कोनी, जांवता तो कुबेळै जावता, जे टेम सिर पूच भी जावता तो पेट दूखणै रो बहानो बणा लेंवता। आपरै आदमिया स्यू ओलै मिलता अर पार्टी रै उम्मीद-वार नैं हराणै सारू कैवता अर आपरै आदमी नैं समर्थन दिलवांता।

इण चक्कर में म्हे एक दिन म्हारै गांव भी गया।

गांव में म्हारी भोत आवभगत हुई। पापा रै स्वागत में गळी गळी में दरवाजा बण्या। मच भोत सजायो गयो, पण म्हे ऊतरचा म्हारै घरे ही। दादी वठै ही। दादी रै रहण-सहण में की फरक कोनी। बोही कच्चो कोठो जको म्हारै थकां हो। कच्चै कोठै में एक माचलियो अर बी माचलियै में एक गूदड़ो। म्हूं दादी नै बोली—दादी, भोत गरमी पड़ै अठै तो।

दादी री तो वै ही बातां—अरै सुराजड़ी, भोत मोडी आई गरमी आळी, तेरै बडेरां अठै ही दिन काडघा, तेरो दादो ई कोटडी में, ई गरमी में रयो, अठै ही मरचो। तेरो बाप अठै ही पढचो, तेरी मां अठै ही बीनणी बणन आई।

म्हूं कांई बोलती। बो वगत एहड़ो हो के म्हारा जी हजूरियां री कांई कमी। पैली म्हारै ठैरणै सारू व्यवस्था नाकै बणी ही, पण म्हारा पापा तो पूरा राजनीतिक, बां आंवतां ही फैसलो करचो के म्हूं म्हारै घरे ठैरस्यूं। फेर तो इन्तजाम करण आळा मिनटां में घर रो रूप बदळ दियो। दरी गद्दा, मसद, ढोलिया, चादरां मिनटां मे आया बिछग्या, पण दादी एहड़ी जिद्दण के वण आपरी खाट, गुदड़ियो कोनी बदळन दीन्यो।

म्हूं हवा ल्यू, पण पसीनों कोनी मिटै, मनै महसूस होयो, आदमी रो सरीर अमीर कोनी हुवै, रहत अमीर होवै। म्हारै रैवणै रो ढंग एहड़ो अमीरी होग्यो के अठै तो एक मिनट ही जीव कोनी टिकै। आखा गावा पसीनै स्यूं भीजग्या, पवन लेंवता लेवता हाथ थाकग्या, जीव घुटै, कठै जांवा। दादी स्यूं मन री बात करती, पण जीव टिकै जद होवै। गांव री छोरचां आसै पासै खड़ी, म्हारै कानी घूरै, पण बोलै नी। म्हानै कोई जाणै ही तो कोनी। फेर म्हारो पैहराव, वेसभूसा एहड़ी के बानै अचंभो हुवै। बारै तो बोही घाघरियो, छोटो सो कबजियो। कठेइ फेर बदळ होयो कोनी। अबार ताईं फेर बदळ करण आळी चीज गाव मे बापरी कोनी—लड़कियां री स्कूल अर सिक्षा। म्हू मन में पूरी बात धारली के अठै छोरचां रो स्कूल जरूर खुलवास्यां। पापा तो दिन भर गाव में मिलणो जुलणो राख्यो। की ताऊ रै घरे तो कदे काकै रै घरे। की दादी स्यूं बात करै तो करै की भाभी स्यूं मिलै। पापा तो बै ही सागो हा, पण अबार जको मंत्री पद स्यूं बदलाव

आयो, यो लोगा नै अचंभो पैदा करण आळो हो। पापा आगै आगै, वारी गाडी लारै लारै। वै आधै गांव में गाड़ी पर कोनी चढ्या। जको भी बातं घरे मिलणै सारू कवै, वै जावै। वै बडेरा स्यूं घणा मिल्या। जुवान मोट्यार तो वारै साथै फिरै ही हा, पण लुगाई अर बूढ़ा कयां मिलै। पापा रै आवणे स्यूं गांव मे एक मेळो सो मंडग्यो, नई रणक होगी। थोड़ी देर पाछै मनै भी बुलाओ आग्यो। म्हू भी पापा साथै होगी। म्हारै जांवतां ही तो लुगायां अर छोरया री गट सो जुड़ग्यो। साची पूछो तो कई जगां म्हारै टिपणै सारू जगा कोनी मिलती, मोट्यार लुगायां नै पासैं हटावता। असलियत आ हुई के म्हारै आवणै स्यूं लुगायां, छोरा अर छोरयां रै एक अचभो होग्यो। कारण भी तो हो, म्हूं छक जुवान ही, गौरी निछोर, बाळा रै कटमे कतई नई फैशन, सलवार, जंपर पैरण नै, गांव आळा तो इसी छोरी देखी कठै। कई लुगाया तो कवै—आ तो परी-सी लागै, भई। आवभगत भी एहड़ी के कठै‌ई दूध, कठै‌ई हलवो, कठैई चाय। आदमी घालै तो क्यांमे घालै। कठैई पापा सीरै की एक डळी उठा लेवै, कठैई चाय रो एक गुटको ले लेवै, कठैई दूध रो एक पळियो। आ बात ही म्हू करती। दिन छिपै पाछै म्हे लोग घरे आया। बांरै मांचा ढाळ लिया, फेर तो मोकळी हवा ही, ठड ही। पण लोगां रो, लुगायां रो बोही जमघट। पापा गाव री ही बात करी, फसला री बात करी, घाटै बाधैं री बात करी, आपरी पुराणी बात करी। आपरै भायला री बात करी। राजनीति रो एक आक बा आपरै मूडै में कोनी घाल्यो। पापा मनोविज्ञान रा माहिर आदमी हा।

रात नै मीटिंग हुई, भोत मिनख भेळा हुया, लोग अर लुगाई। पापा आपरी पार्टी री बात कयी। बीनै मजबूत वणाणै री बात कयी, वोट देवणै री बात कयी। लोगा म्हानै बोलणै सारू जोर दियो। म्हू भी बोली। म्हू लाबो भाषण तो कोनी दे सकी, पण पार्टी री छोटी सी बात कैयी, सिक्षा सारू बात कयी, फेर एहडी घोषणा करी के जे म्हारी पार्टी राज में आई तो अठै छोरयां रो स्कूल जरूर खुलवा देस्यू। लोगां म्हारी बात पर बड़ी ताली बजाई। लोगा अचंभो कर्‌यो—अरै मिनख तो भाषण देवै ही पण आ री लडकी भी भाषण देवै।

पापा रस्तै मे मनै भाषण पर स्याबासी दीनी। बोल्या—तू तो म्हा

स्यूं भी कमाल करगी । म्हूं ताळी कोनी बजवा सक्यो, तू ताळी बजवाली । म्हूं घोषणा कोनी कर सक्यो, तूं घोषणा कर दी । पापा मौत खुस हा ।

म्हूं कयो—पापा, गांव आळा कित्तो लाड कर्‌यो आपणो, आपा इण रै बदळै में कांई दे सकां हां । कित्ता आछा मिनख है ।

पापा कयो—तू तो भावुक हो ज्यावै है, राजनीति अर भावुकता रो मेळ कोनी । भावुकता में दया री पुट है, जठै राजनीति साथै भावुकता मिली अर राजनीतिज्ञ मात खाग्यो । आपणो उद्देश्य पार होवणो चाहिजै, पण उद्देश्य सारू मौ आछा मदा करणा पड़ै, कोरा आदर्श अर सिद्धान्त तो पोथी में पढ़ावणै रा है, अै तो साध्य है, साधन सारू आ पर जोर देवणो, अकल री बात कोनी । पुलिस चोर पकड़यो चावै जे पुलिस सोचै के बेगुनाह क्यू भुगतै, तो गुनहगार भी ईं री आड़ में लुक ज्यासी ।

फेर तो चुनाव में जकी बातां होवण लगी, वै इत्ती माड़ी के जे कोई सुणै तो काना रा कीड़ा झड़ ज्यावै । वोट लेवणै सारु कोई कसर कोनी राखीजी अठै तक लोगां करी के भोळा मिनखा नै भुळान कठै रा कठै ही लेग्या, इण में न तो सत्ता आळी पार्टी लैरै रयी अरन विरोधी ।

म्हूं पापा नै निरास होयन पूछ्यो—'चुनाव रो ओ रूप कद ताई रैवसी ?

—जद तांई वोट रो राज रैसी, पापा रो जवाब हो ।

चुनाव रा नतीजा आया तो बात पेचीदा होगी । पापा तो जीतग्या, पापा रा घणकरा आदमी भी जीतग्या, पण पार्टी राज बणावण सारू बहुमत में कोनी आई । आनै बहुमत ल्यावणै सारू लाखू रिपिया बाळना पड़्या । राज तो बणग्यो, पण कित्तो दोरो । म्हूं मन में करती—जकै रा साधन पाक कोनी, फेर साध्य पाक कयां रैसी । अै लाखू रिपिया कठै हूं तो आवै ही है, राज रो खजानो कयां पाटै कोरा घर पाटै, फेर राज रै आं नुमाइंदा स्यू मनमानी क्यू कोनी करावै । बीरै बावजूद भी अै लोग दावो करै रै म्हे लोग भ्रष्टाचार दूर कर देस्यां, कित्तो झूठ अर फरेब है । पखपात अर भ्रष्टाचार तो आंरी जड में है, आम आदमी कांई चावै है, रोटी अर रोजी मिल जावै, कोर्ट, कचेड़ी में धक्का न खावणा पड़ै, न्याय सस्तो अर सोरो मिल ज्यावै । पण आं हालाता में तो राज पूंजी रै सारै लागर्‌यो है, भ्रष्टाचार रै कांधै स्यू चालै है, फेर सांतरै शासन की कल्पना करणी ही

फालतू है।

एक और मकट आयो पापा रै सामै। पापा री सिकायत हुई केन्द्र मे, के बिरमानन्द आपरै स्वारथ सारू आपरी ही पार्टी रै आदमियां नै हराया। केन्द्र स्यू जांच सरू हुई, पण अबार पार्टी मे दो दल आमै सामै होर्‌या हा, एक दूजै री टांग खीचै हा, ईंरी जड राज्यां मे कोनी ही, केन्द्र में हीं। केन्द्र मे पापा रा आदमी तकड़ा हा। बां पापा नै बचा लिया। उलटो मुख्य-मंत्री पर आरोप लाग्यो के वो राज में टीम भावना स्यू काम कोनी करै, समाजवाद सारू काम कोनी करै। पापा आपरै उद्देश्य में सफल होग्या। पांडे मुख्य-मंत्री रै पद स्यू हटग्या। घणां लोगां पापा नै मुख्य-मंत्री रो पद देवणो चाहै हा, पण बा एक ही बात कही—राजनीति टेढ़ी खीर है, मुख्य-मंत्री रो पद काठ री हांडी है, म्हूं काठ री हांडी कोनी बणणो चाऊं, आपां नै राज करणो है, समाजवाद सारू राज करणो है। आपा आपणै लवेज रो मुख्य-मत्री ले आवा, अर बा जानकी वल्लभ जी शर्मा रो नाम दे दियो, फेर बारी जीत होगी। पापा री पांचू घी मे, बांरी पावली ओजू चालण लागगी। अबै तो पापा को नाम अखबारां में जगमगावण लागग्यो, आं पर विशेष लेख लिखीज्या, प्रधान-मंत्री तकात पापा रै नाम नै पूजण लागग्या। पापा मे एक ही खास बात ही के बां आपरी जड जनता मे जमा राखी हीं। काम करावणै मे बै झिझक कोनी करता, चाहे कोई कठैऊं आओ। रसोवड़ै रो काम मां रै हाथ मे हो। टूक रो खायेड़ो नीचै न देखै, अर जूत रो खायेड़ो ऊपर न। आवण आळै नै रैवण नै जगा मिलज्यांवती, पीवण नै चाय, खावण नै रोटी। पापा काम करावणै री चेस्टा करता। वो रोवतो आवतो अर हसतो जावतो। बो गांवां मे जायन पापा रा गीत गांवतो। पापा री हवा गांव-गाव मे बणगी। पापा रो कैवणो साची हो—'राज री जड़ जनता में है, जनता री जड गांवा मे। गाव रै आदमी नै आदरो, राज री जड हालै कोनी। गांव रो आदमी गीत गावणै मे भाड स्यू भी बत्ती। पापा री आ राजनीति काम करै ही।' पापा एक बात कदे कदे कान मे कैवता—'धन आळै स्यूं धन खारयो, कोई गुनाह कोनी, गांव आळै रा पांच रिपिया ही लगादयो, वो च्यारूकूटा ठिठ करसी, बीरा पाच पीसा बचाद्‌यो, वो गीत गासी।'

11

एक दिन भूआ आयी, भूआ म्हारी गांव में रैवै, ठेठ गाव मे एक ढ़ाणी में। बा भात नूंतण आई, बीरी बेटी रो ब्याव। त्रण हट कर्यो—म्हू तो स्वराज नै साथै ले ज्यास्यू। म्हानै भी चाव चढग्यो।

मां तो इत्ती बात कयी—स्वराज नै पूछल्यो जावै तो, म्हारै कांई अठै अणसर्यो पड़यो है। बीरी पढ़ाई खोटी न हुवै।

म्हारै घर में आ खास बात ही के कोई कीरै काम मे टांग कोनी अड़ावतो। पापा तो कीनै की कैवता ही कोनी। म्हूं भुआ रै साथै होली।

भुआ रो गांव कांई हो—फकत च्यार घर, गांव रो नाम ही कोनी—ढाणी, कुणसी ढ़ाणी, जद् लोग कैवता—झुंवारजी री ढाणी—म्हारै भुआ रै सुसरै रो पडदादो अठै आयन बस्यो हो, बीरै नाम स्यू आ ढ़ाणी बणगी। ढाणी मे भी कांई-झूंपड़ा ही झूंपड़ा, एक दो खुड्डी। म्हारी भुआजी रै दो झूंपड़ा, एक खुड्डी अर एक चुन्नो लगायडो कोठो जकै रै ऊपरटैण। म्हू कोठी स्यू निकळन अठै आई तो सारो माहौल ही बेढव अर अजीब लाग्यो—ब्याव रा ओजू पन्दरा दिन—पन्दरा दिन अठै कयां आवडसी।

छोरयां अर लुगायां म्हारै आसै-पासै आऊ भी। म्हूं नहायी, धोमी, गाबा बदळया, भुआजी रै घरे एक गहरो नीम हो, बीरै नीचै माची घालन बैंठी जद् की जी सोरी होयो, फेर तो धीमै-धीमै छोरयां सैंदी हुगी। भुआजी री जकी छोरी रो ब्याव हो—बीरो नाम हो—कमला। बीरी छोटी बहन रो नाम हो—नीमा। दोनूं छोरयां ही फूटरी ही। एहडी लागै ही आणै बांरो रूप धोरां ऊपर बैठन घड़यो होवै—ऐन धोरां जेडी राती। बारो फुटरापो कुदरत स्यू जुड़ेडो, नकळीपन तो बांरै आसै-पासै नी, रूप ज्यू ढुळ-ढुळ पड़ै। सरीर पाटू-पाटूं होरयो हो। होवै क्यू कोनी—भुआ रै दो भैस अर दो गाय। च्यारूं पशु दूध देवै। दस-बारा किलो वकत रो दूध—सगलो खाणै-पीणै मे जावै। दूध री जगा दूध, घी री जगां घी, छाछ अर दही रो घाटो कोनी।

भुआजी रो मोटोड़ो छोरो ब्यायेडो। बींरी बीनणी भी अठै ही। बीनणी थोडी सावळी, *पण भोत ही हंसोड़, हरदम मुळकती रैवै, पूरो घूंघटो राखै।* सासु-बहू झांझरकै ही उठ ज्यावै। बांरी घड़ी कांई, पूरब मे एक तारो उगै,

बीरै साथै ही दोनूं भाभी छोड़ देवै। उठता ही भुआ तो चाय बणावै अर बहू डांगरां नै नीरै। डांगर चरण लाग ज्यावै अर भाभी दीगण लाग ज्यावै, गायां रै धामणै स्यूं जको मदरो-मदरो गुर फूटै बो सोवन भाळै नै सोरी रो काम देवै।

भुआजी बोलोपणो विसोवै, डरड़-डरड़—। टावरपणै में म्हे एक कल्पना-सी करता—डरड़ बिलोवणो गावै छा—। बो दरघाव अबै साली हो—पूरो रिलो पको चूंटियो भुआ काढै। टावर उठै, कोई दही लेवै, कोई छाछ, कई चूंटियो ल्या लेवै। यां टीलां पर रुगड बयू कोनी आवै। झारकै री चाय में तो सासू-बहू रो ही सीर हो। भाभी मनै बतायो के म्हूं चाय कोनी पीवती, पण मां-सा म्हानै हिलाली। मां-सा नै चाय तो बणावणी ही, बै म्हानै बुलान कंवती— मे बीनणी, एक घूंट पीलै। कांई लागै है, पण मां-सा रै बेरो कोनी हो के आ लागै है, फेर तो म्हारो ही जी करण लागग्यो।

चैतवाड़ो हो, गौर रा दिन नेड़ा हा, पौ फाटता रै साथै छोरयां खड़ी हो ज्यावती, म्हारै कानां में गीतां री भणक आंवती—सवारी ऊठस्यां म्हे, दूजो गीत, तीजो गीत, गीत ही गीत, आछै वर री कामना, ईशर अर गोरज्या री पूजा रो ओ ही आशय। काई वर चावै छोरयां—गूणी अर बीर, यारो चितराम बां गीतां में सांतरो माडीजै, पण नापसंद भी वांरी सामणै ही—चूल्है बैठी चानड़ो ए, हांडी रो सिरदार। म्हूं भी कदे-कदे चली ज्यावती, जद् भुआ बरजती—तू आज तांई गौर कोनी पूजी तो अबै मत पूज, गौर री फासी पड ज्यावै है, बा काडणी पड़ै। 'एक मानता जकी पीढ्यां स्यूं चली आवै। आ मानता में ही अै लोग जीवै, इण जीवणै में आनै दोरापो भी काई ? देस में क्राति रो दौर आरयो है, देस पुराणी मानता री जगा नई मानता री थरपणा करणै में जुट्यो है। पण आ पुराणी मानता में कमी काई ? अठै कदे सडक भी आवैली—बिजळी भी आवैली, स्कूल भी आवैला। देस रै विचारकां री मानता है के आज आपणा गांव अणपढ़ है, भोळा है, पण आरै साथै जुडेडी है एक अणमोल संस्कृति जको परम्परा स्यूं चली आवै है, बीरै मांय राम-सी मरजादा है, किसन रो रागरंग है, सीता-सी सत् है, कदे इसो न होवै के आ री जिंदगी रो ओ अनूठो मिठास अर आकरो रसराग नयेपण रै कोड में खोसल्या अर आनै आ कनै की नी छोडा, आनै

बीच में ही भटकता छोड़द्या ढिकड़ सड़कां रै माध्यम स्यूं आंगो दूध-दही घोसल्यो अर म्हालां रै माध्यम स्यूं आंरी जड़ी आपड़ी संस्कृति।

दिनगै उठता ही जको बादरियो चालै, टीबा पर बैठन बीरो आणद लेवै तो इसो लागै जे धरती कठैई सुरग है तो ओ ही है। नीचै धोरां री बाळू रेत जकी नै आखी रात इमरत स्यूं सींचै, पून म रैड़ी सोरम भरेड़ी कोई करै ई रै आगै कश्मीर रा बाग बगीचा। धोरां पर फोग अर खींप मानरा मागै, कठैई ही कोई कवि ई री जीती जागती रूप मांड देवै, नीमा पर मिजर अर सरेश पर जका फूलां रा झूमरा लटकै, बांमै अमलो गद भरी-जेड़ो। जी करै अठै बैठ्यो रवै। सूरज नै म्हूं मकू— है सूरज, तू तेरो घोड़ो रथ थामले, तू ई रूप रो आणद तो ले। पण आज तांई कोई वस्तु, कोई पल ई धरती रो थिर कोनी रयो, ओ पल थिर क्यां रवै। छोरया जद तांई पूजा गाइ पोगो रा टंबरा तोडै म्हूं थो आणद रो पान करती रऊं, फेर बारै माथै मीर हो ज्याऊं। वैं गीत गावती रवै, म्हूं बीरो रस लेवती रऊं। भुआ म्हारै माथै मजाक करती—तनै नी आवडै तो आवड़ियो घड़ा द्यूं, साच्याई मनै 'भुआ आवड़ियो घड़ दियो। म्हारो करै जी लागग्यो। बठै मिनखां रा नीपापा हिवड़ा कूंगै वेरा रै निरमळ जळ स्यूं धोयेड़ा हा, जका में कठैई छळ, छदम कोनी, गंगाजळ री उपमा आरै सामै फीकी पड़ै।

रूंखा पर बैठी कमेड़ी बोलै, कू-कू-ऊ, कू, कु-कु-उ कू, घड़ी अर झूपड़ा में चिड़िया री चीऊं-चीऊं, दूर कठैई मोरिया बोलज्या, पी-ओ, पी-ओ, इत्तै मे कठे कोई गाय रांभज्या—इंबाय, इंबाव, फेर कोई भैंस बोलज्या—टिरड़क, टिरटक। ऊंट करज्या—बल्लू-बल्लूं, टोरड़ी टीं-टीं करण लागग्या। ओ आखो समाज जको मिनखां, पंख पखेरू अर जिनावरा रो है वो एक सूत में बंधेड़ो है, कठैई कोई अलगाव नी, बिखराव नी जाणै सगळा ई धरती मा रा जलमेड़ा, बहन भाई हुवै, बरसां स्यूं हेत री इकलंग चालती धारा में चालता रह्या है, चालता रैसी, आ न होवै कोई ई तार न तोड़ देवै, अर ऐ मिणिया ओस री बूंदा ज्यूं बिखर ज्यावै, आ जिन्दगानी धूड़ मे मिलन बरबाद हो ज्यावै।

ब्याव रा दिन नेड़ा आवण लागग्या, अर अंधारो होवता ही [illegible]
लुगाया बनड़ी रा गीत सरू कर देवती, फेर तो आंधी रात तांई

धड़ाको, गीतां स्यूं आभो गरणान लाग ज्यांवतो, फेर एक ढोलकी आयो, छोर्‌यां गांवती अर नाचती। कद दिन टिपतो, कद रात पतो ही नीं लागतो।

दिन और नेड़ा आयग्या, जद् बटाऊ आवण लागग्या। दो दिन पैली भुआ रा जुवाई-सा आग्या, फेर तो गाळी-साळेल्यां बांनै एक घटा बुला लेंवती, गैली, गूंगी बातां में वो टेम टिप ज्यांवतो, जिन्दगी में जित्तो स्याणप री जरूरत है, बीस्यू थोड़ी भोत कम नही, पण गैली, गूंगी बातां भी आपरी ठौड राखै है।

कदे-कदे रूंख रै तळै बैठती तो पापा अर मा याद आंवता, और तो काई, पण म्हूं आथणगै री टेम रेडियो जरूर लगांवती जद् राज रा समाचार आंवता, पापा रो ज्यू-स्यू पतो लाग ज्यांवतो। बांरो नाम स्यात् ही चूकतो।

ब्याव रो एक दिन बाकी रयो, दूजै दिन बरात आवणी ही। बींस्यू पैली भात भरीजणो हो पापा अर मा नै जरूर आवणो हो। मनै भोत अडीक होवण लागगी। अबै तो एक ही रात काढणी ही। टेम सिर म्हूं सात बजे रेडियो खोल्यो ही--खोलता ही पैली पोत समचार आयो—विधायक हेमराज रै गोळी मार दी गई, बारी हालत खराब है, वै अस्पताल मे भरती है, गोळी मारणिया ओजू ताई कोनी पकड़ीज्या। म्हारो एकदम काळजो पकड़ीजग्यो। हेमराजजी पापा रा खास आदमी, दाया हाथ, ऐन नेडै। अबै पापा नै बेल कठै, पापा लागग्या होसी वांरै चक्कर में बी रात नै अठै रातीजोगो। स्याणी लुगायां देवी, देवतावा रा गीत गावै, आखी रात भांत-भांत रा गीत गाया, पण म्हारो जीव तो एहडो खराब होयो के पूछो मत। बारो रातीजोगो तो हो ही, पण म्हारो भी रातीजोगो होयो, एक पल नींद कोनी आयो, चैन कोनी पड़चो। हेमराजजी री सूरत आसै-पासै घूमती रयी। लम्बो अर पतळो डील, खद्दर रो चोळो अर धोती, हरदम सिर पर टोपी राखता, कर्मठ अर पक्का आदमी। पापा रा अटूट भगत। पापा हेमराजजी पर ज्यान देंवता अर पापा हेमराजजी पर।

दोरी-मोरी रात तो गई, दिन ऊग्यो, म्हूं पापा अर मां री अडीक मे। कदे आ जवै, स्यात् न आवै, न आया तो समाज में कोजा लागस्या। भुआ भी अडीकै। पापा, इत्ता मोटा आदमी, बहन तो भाई नै याद करै ही, नरसी

रो माहेरो दुनियां में एक उदाहरण। ओ ही तो दिन है जद् बहन आपरै पी'र पर गरव करै, आडां दिन कोई की देदचो कुण विचार करै। पण ईं दिन परिवार रा पूरा गिनायत भेळा हुवै, जद् भाई ईं औसर पर चूक ज्यावै तो बहन नै ऊमर भर कोई बोलण कोनी दे, ऐड़ी बाता रोज लुगाया करै। टेम टिपतो जारयो हो, म्हूं कदे लैरै जाऊं, कदे आगै, कदेइ जीप रो घरघराहट सुणै। रोटी तो खाई, पण जीसोरो कोनी होयो।

ठीक दो बजे एक जीप आवती दीसी, जीप घर रै आगै थम्मी। पापा आग्या, पापा री जीप रै लैरै एक और जीप जकै मे राज रा लूटा अहलकार।

मां सीधी घर मे आई। पापा अर बांरै साथै लोगां रै ठैरणै रो, प्रबन्ध पैली स्यू हो ही। मां आंवता ही कयो— फकत म्हारै कनै एक घटो है, टेम मत लगावो, भात लेल्यो। हेमराजजी री हालत खराब है। आं बिना बठै सरै कोनी, मसां मेरै कैवणै स्यू इत्तो टेम काढयो है। पापा अर साथ्यां नै फटाफट चाय प्यादी। भात लेवणै में देर कोनी लगाई, पापा इत्तो देग्या के बी गुंवाड मे बो इतिहास बणग्यो। सगळां ही बोल्या—कोई नरसीजी आ बापरया, रिपिया, कपड़ा कोई छेह ही कोनी रहयो। आसै-पासै रै गावा रा मिनख पतो नी कठैऊ था बापरमा, मेळो मडग्यो। भात रै बाद पापा चल्या गया, मां रैगी। मा नै ब्याव रै बाद जावणो हो। पापा जावतां-जावता पाच मिनट रो लोगां नै भाषण दे दियो।

बारात आई, फेरा होग्या, दूजै दिन बारात चली गई। कमला भी चली गई। एकदम सुनेड़, पलपल में रोवणो आवै, एक घड़ी जी नी लागै। वो दिन बीत्यो, तीजै दिन कमला पूठी आगी—हसती खिलती गुलाब रै फुल-सी। ऐहडो टेम लुगाई री जिन्दगी मे एकर ही आवै। दिन भर कमला स्यू बतळावती रैयी। दूजै दिन म्हारी जीप आयगी अर म्हे मा-बेटी आपरै घरै आ बापरया।

12

म्हे मा-बेटी आंवतां ही हेमराजजी स्यू मिलवानै अस्पताल गया। हेमराजजी अमरजैसी वार्ड में एक पलंग पर सूत्या हा। अबार बारी हालत की सुधरेडी ही, खतरै स्यू बारै होगी ही। म्हे देख्यो बांरै एक हाथ रै पट्टी बधरी ही। कदे-कदे की बोलै हा। म्हानै पतो लाग्यो के बांरै हलकै में अठै स्यू वै विधायक पद सारू खड्या होया अर जीतग्या वठै बांरै विरोधी आ पर गोळी चलवादी। अै एक ठेसण पर खड्या हा, गाडी पकडू हा, चाण-चकै दो आदमी घोडै स्यू ऊतरया, आ पर गोळी चला दी। बांरै निसानो मैं तो आंरै सीनै पर मारणै रो हो, पण आडै हाथ आग्यो, हाथ रै गहरी चोट आई, अै तो ठौड ही पडग्या, ठेसण पर मिनखा री कमी कोनी, फेर अै चावता आदमी हा, फटाक स्यू लोगा आनै उठा लिया, फटाफट एक जीप करी अर साकडै ही एक अस्पताल पूचा दिया। बात रो हाको तो फूटणो ही हो। च्यांरूकानी फोन खड़कग्या, पापा खुद चालन आनै अठै ले आया, खून तो छोटियै अस्पताल में ही बन्द होग्यो हो अठै असली इलाज चालू होग्यो। पूरी सरकार आनै बचाणै मे लागगी, डाकधर अर दवाया रो टोटो कोनी रैवण दियो।

बात आ ही के आं रो विरोधी एक लूठो आदमी, घर स्यूं सैंठो, मिनखा अर धन रो टोटो कोनी। पण हेमराजजी गरीबा रा मसीहा—पूरा सेवाधारी। पुराणा कार्यकर्ता अर दीन रा दास। आधी रात नै कण ही जगा लियो तो जाणै रो आळस नी, काम रो आळस नी। आपरै हलकै मे की रो काम अटकण कोनी दियो चाहे की दफ्तर मे हो। जगां-जगां स्कूल खुलवा दिया, घणी जगां अस्पताल बणा दिया, पाणी री डिग्गी बणा दी। गांव-गांव पैदल फिरणो, लोगा रो दुख-दरद पूछणो, लोगा कनै गुवाड मे बैठ ज्याणो, बांरै दुख-सुख री करणी, लोग ऐहड़ै मिनख नै वोट नी देवै तो कीनै देवै। विरोधी मोटै घर रो, मोटै घर रो आदमी, मिनखा रो आछो धडो, पण गरीब री ताकत नै कुण पूचै, वो जिनै झुकज्या, वीरो बेड़ी पार कर देवै। हेमराजजी कनै घर कोनी हो, पण गरीबा री ताकत भोत सातरी ही, ईंरै आगै विरोधी कया टिकै। हेमराजजी वीनै दोनू बार ही हजारां वोटां स्यू जित

मार्‌यो। विरोधी रो और तो बस चाल्यो कोनी, दो आदम्यां नै मारणैं सारू त्यार कर्‌या, हेमराजजी तो बचग्या, पण विरोधी मार्‌यो गयो, मिनखां की निजरा स्यूं तो गयो ही, पण अबै जेळां री हवा खाओ। दोनूं आदमी गिरफ्तार होग्या, साथै वांरो हिमायती।

रात री टेम, पापा, मां, म्हूं अर छोटो भाई, पूरो परिवार छात पर बैठ्या हा। गरमी की करड़ी मौसम ही। दिन में तकड़ी तपत पड़ै, बारै निकळन जी कोनी करै, पण रात की ठंडी होवै। बारा बजे ताई फेर जी कोनी टिकै। म्हे लोगां ऊपर दरी बिछा राखी ही, एक एक तकियो लिया पड़्या हा।

पापा कीं सोच में डूबर्‌या हां। बोल्या—सुणै है।

—कांई कैवो हो, मा कयो।

पापा मां नै नाम स्यूं कोनी बुलावता, सदा स्यूं पापा नै वाण पड़ेडी ही, 'सुणै है,' ही मां रो नाम हो। कदे-कदे स्वराज री मा कह देंवता। पण नाम लेंवता वानै सको आवतो। पापा रो ब्याव टाबरपणैं मे ही होग्यो हो, जद् स्यूं पापा मां नैं 'सुणै है' कैवता। दादी रो घर मे पूरो दवदवो हो, अबै मोटा मिनखां मे बैठता जद् मां नैं नाम स्यू बुलांवता, जद् बो नाम भोत ही अपरोगो लागतो, म्हानै भी, पापा नैं भी।

पापा फेर की अफसोस में बोल्या कोनी।

मां ओजूं पूछ्यो—बोल्या कोनी ?

एक बात और ही—मा भी पापा नै 'सुणै हैक' कैवती, कदे-कदे मां स्वराज रा पापा कैय देवती। मां तो पापा रो नाम लेंवती ही कोनी। जे की दूजै रो नाम ही बिरमानद होंवतो तो कैंवती—वारो नाम रासी, स्वराज रै पापा रो नाम रासी। मां पड़दो छोड़ दियो, घूंघटो छोड दियो, सगळा स्यूं बोलै, चाहे जेठ हो, सुसरो हो, पण अठै मां बठै ही खड़ी ही, जठै पैली ही। मां आं संस्कारा स्यू लैरो कोनी छुडा सकी। पापा पूछ्यो—हेमराज जी कानी गई ही आज ?

मां कयो—गई ही।

—कांई हाल है ?

—ठीक है, इलाज चालू है।

पापा फेर चुप हो ग्या। पापा दरी पर ही सूत्या हा। पापा रै कदे

मोट मुरजाद कोनी हो। वैं कठै ही सो ज्यांवता, चाहे दरी हो, पलंग हो, बिस्तर हो या ना हो, सिराणो हो या ना हो, अर बठै ही नींद ले लेंवता। कदे-कदे तो इसी बात होवती कै जद् सोंवता जद् तो हळको कपड़ो लेया सोवता, झाझरकै जद् ठारी औसरती तो बी कपड़ै में गिंडी-सी बण ज्यावती, घणी वार मां सभाळती जद् वां पर कोई मोटो कपड़ो गेरती। खाणं-पीणं, सोवणं, ओढणं मे वांरै नखरो कोनी हो, पण वारैं निवळता तो वैं आपरै डील रो ध्यान राखता, सेव रोज बणांवता, कपड़ा रोज बदळता।

पापा बिया ही पसर्या-पसर्या बोल्या—आ तो आछो हुई, हेमराज बंचग्यो, नी तो ईरो टावर रुळ ज्यांवता।

—टावर तो रुळता ही, मिनख रै लैरै ही है-- सो क्यूं। मां कयो।

पापा कयो—तनैं बेरो है, हेमराज कनै की कोनी। जमीनड़ी अण ईं जनसेवा मे एडै लगा दी। दो चुनाव तड़्या, घरे की हो कोनी। की लोगा रो सारो मिल्यो, कीं म्हे लोगा दियो, की पार्टी दियो, पण चुनाव मे तो छायां चढै, गोगैजी रा डैरू बाजतां ही गोगैजी रै भगता रै छाया चढ़ै ज्यूं। जमीनडी एडै लागगी। खरचो के सहज है आं चुनावां में, पीसो पाणीज्यूं चालै।

—अण की कमायो कोनी, मा पूछ्यो।

—कमावै काई हो, अण तो खोयो, सेवा री धुन है ईं रै, टाबरा रो काई हाल होवतो, लोग तो बारा दिन रोवै, फेर भेडा-भेली भेड, कुण कीनै याद करै, काई याद करै, लोगां री आपरी कोनी समै।

—वात तो ठीक है, मां बोली।

—म्हूं फिकर मे डूबर्यो हू, राजनीति तो गंदो खेल है, इण जिसी गदगी की धधै में कोनी। म्हूं अबार राजा हू अर एक पल में की कोनी। म्हूं अबार महल मे हूं, एक छण बाद ही जेल मे। मौत तो अठै चप्पै-चप्पै पर है। घर स्यू निकळूं अर पूठी लाश आ ज्यावै। तूं सुणै कोनी, रोज एहडो खबरां आवै, फलाणी जगां राष्ट्रपति अर प्रधानमंत्री नैं मौत री घाट उतार दिया अर सेना रो शासन होग्यो। पाकिस्तान मे लैरै-सी होयो ही हो।

—गाधीजी जिसै भलै आदमी नैं ही कोनी बकस्यो, मा बोली, दूर क्यू जाओ, वा कीरी काचळी मे हाथ दियो हो।

पापा बोल्या—जद्‌ही तो म्हूं कहूं हू, ई राजनीति रो कोई भरोसो कोनी, कद् कांई हो ज्या, म्हूं एक बात सोची है।

—कांई ?

—आज हेमराज सार्थं आ बात बीती, आपणं सार्थं भी बीत सकं है।

—थूको मूंडै स्यू इसी बात चेतावो ही मत।

—बात सगळी सोचणी पड़ै, फेर थारो कुछ घणी, बैंठण नै ढाव कोनी, टाबर रुळता फिरै, लोग हंसै—अै है सा-बै।

मा बोली कोनी, फिकर में डूबगी। पापा आगै कयो—आपा एक मकान तो बणाल्या, आज तो चलतो चक्कर है। इण मौकै सौ क्यू हो सकै है, वकत बीत्यां की कोनी।

—मकान आळी बात ठीक कयी।

—म्हारै निगाह मे एक जगां है। एक आदमी मोल देर्‌यो है, बीरै माय ही खेत है, पूरो पचास बीघा। बिजली है, बीच मे मकान सारू जगां बणा लेस्यां।

बात तय कांई हुई, बठै पांचवै दिन तो कारीगर लागग्या, चिणाई सरू होगी अर दो मीना में मकान त्यार—च्यार कमरा, ऊपर पापा सारू एक चौबारो, चोखी खुली आगणवाई, रंग-रंगन लगा'न त्यार, बारै एक मोटो झूपड़ो आयां-गया सारू। पूरी पचास बीघा जमीन, मायनै एक बेरो, जमीन में बेरै रै पाणी री सिचांई। टेम पर की बीजो।

मकान मंत्री रो हो, बिजली अर टेलीफोन जरूरी, सगळी व्यवस्था सरकार रै खरचै पर हुई, म्हे लोग एक दिन चोखो दिन देख थरपणा कर दी, कोठी अर इणमे भोत फरक, पण इणमे जको अपणायत रो मिठास हो, बीरी होड कठैई कोनी।

म्हे लोग भोत राजी हुया, दादी नै पतो लागणो ही है, दादी एक दिन आगी।

दादी आंवतां ही सगळै घर नै देख्यो। वा बोली—थुथकारै जाओ, घर आछो बणा लियो।

दादी नै मकान दाय आयो। पण दादी री बातां तो मजेदार होवै, म्हे सगळा दादी री बातां सुणन बैठ ज्यावा।

दादी माय री वातां बनावै । दादी बोली—वो मर ज्याणो, थींवतो है न, कवै, तेरे बेटै धन कमा लियो, अवै राजधानी में कोठी बणाई है, कोठी।

म्हू बोली, अरे मरज्याणा, तेरो काळजो क्यूं तळतळीजै, बणाई है, पीसा कमाया है, अगलै रो हिम्मत है, तू ही बणा ।

वो बोल्यो—नाम तो जनता री सेवा रो, जनता नै गूरड़-गूरड खावै है ।

म्हू तो सड़ मरी—रोवणजोगा, तू त्रिलोक जायन दियो हो, कै तू नाम बता, जकै रो खाग्यो । पण एक बात है । मेरो पूरो जी सोरो जद होवै, जद् आपा इसो ही मकान गांव में बणाया, जद् आं राम-मार्‌यां रै काळजै मे खोबा लागै ।

—बठै कांई करा, मा, कुण रैवै ? म्हू बोली ।

—अरै, थे पढ तो गया, पण गुणीज्या कोनी, बावळी रैवणो भाड़या मे हो चाहे बैर ही । बठै है न, वो भैरियो, चूनियो, थां खीवलो, रोवणजोगा, चूतरयां पर बैठ ज्यासी, ऊंचा गोडा कर कर, थारी काट करै, और साप-खाद्‌यो, थारै चूंचाड़ी लागै, थे थारो आपो संभाळो, वो एक री राड तो कूंऐ मे पडन मरगी, वो एक दूसरो, फिरै इया ही दोजक ढोवतो, राड तो आधै दिन हाडती फिरै रोहियां मे, घाघरियै री लावण मूंडै मे ही रवै, आप करै चौधर । एक ही छोगरी कोनी व्याहीजै, वीस साल री होगी, बाड़ पाड़ती फिरै ।

—थारो कांई लेवै, मा बोली, आपां क्यूं लोगां री आछी मदी करां ।

—बीनणी कहवै जको कुहावै, दादी बोली । कांई वा रंडवा रो लेयन खायो है, म्हू तो की कनै ही उधारै नै ही कोनी जाऊं, मनै क्यू सेकै, रोवै आपरै जामणिया नै, अरै वो है न डूमडो, नाम है की बीरो, हां, घोटियो, अरै छाज बोलै जकै तो बोलै, पण, छालणी बोले जकै रा सत्तरसौ छेज, ऊतगयेडा, तेरी राड तो तेरै वस मे ही कोनी, वो ही कवै—विरमानंद, सेठा नै लूट-लूट खावै, तो बेटी रा काड़, अगलै री हिम्मत है, खावै, तू ही खा, म्हू तो सीधी मूंडै पर मारी । पण, म्हू तो एक ही बात कऊं—आपणै *बठै एक कोठी बणावो, जद्, म्हारोजी सोरो होवै ।*

—थारै कनै पीसा है, थे ईंट गिराद्‌यो, बणा म्हे देस्यां, म्हू कयो ।

—म्हारै कनै पीसा, क्यांरा हुवै, दादी बोली, दो सालस्यूं तो काळ ही पड़ै है, गुंवार तो सेर ही कोनी हुयो, अळ लागली, बाजरी हुई चावण जोगी, अबकै हाडी में ही दम कोनी, मावठ हुई कोनी, की पवन पान न मार्यो, तो की सरस्यूं बण ज्यासी, पण पक्की ईंट गिराणी सोरी बात कोनी, बेटा, मामा लागै माया, माया दादो कनै कठै। एक मरज्याणै फूमियै नै दे राख्या है हजार रिपिया, बो कवै—देस्यां ताई, देस्यां, अरै देसी कद् तेरे छोरै रै ब्याव मे दिया हा बीरै टाबर चार होग्या, पण तेरै म्यू मारला पीसा कोनी देइजै, पण बिचारो गरीब आदमी है, काई देवै, कठैऊं देवै।

मां कयो—माताजी, आप तो अबै अठै ही आ ज्याओ।

—अरै, कांइ आ ज्याऊं, दादी बोली, मेरो जी अठै रैवण न करै अर बा जगां भी कोनी छोडीजै। म्हारो भी वा बिना जीवडो कोनी टिकै, बां मरज्याणा नै दो सुणाद्यूं अर दो सुणल्यूं जद् काळजो दव्वै, खायेड़ो पचै। म्हूं बी तो खोडली हूं बा जमीनडी री लोर है, दो डूढिया है, बारै सारै पडी हूं। जे अठै आज्याऊं तो वो घर तो गोर बण ज्यावै, बी जमीनडी में की होवै तो की भेईं कोनी, म्हूं तो हाड वठै ही नाखस्यूं।

दादी अर मा बयां ही बातां में लागा रह्या, म्हू तो उठ परी पढणै में में लागगी, म्हारा दो दिनां पाछै इम्तिहान हा।

मां नये मकान नै सजावणै मे लागगी, म्हूं भी मा नै मदद करती। सामान तो म्हारै कनै हो ही कठै, कई दर्‌या मां मंगाई, फरनीचर मंगायो, सोफासेट मंगाया, पापा रै कमरै नै ढग सिर बणायो, मा आपरो कमरो न्यारो बणायो, म्हारो कमरो न्यारो, म्हारै कमरै मे म्हू अर भइयो जको अबार दसवी में आग्यो हो।

मां आपरै कमरै मे एक आलमारी में देवी देवतावां री फोटू मंगान सजाली। मां अबार देवी देवतावां नै ऐहड़ी सजाई के पापा नै भी अचभो होग्यो। आ बात लांबी चाली। पापा बोल्या, स्वराज, आजकलै तेरी मां आपां सगळा नै छोड़ दिया जकां में जीव है, निरजीवां री पूजा सरू करी है, बै मा नै हंस्या। पापा ज्यू-त्यू नास्तिक हा। मां री आस्तिकता भी ओजू तांई सामै कोनी ही।

—आं रा ही दिया दिन है, मां कयो, जेल तो दुनिया गई हो, कीनै ही

मनीस्टरी कोनी मिली।

—तो आ बात है, पापा कयो, म्हारली करी कराई अयां ही गई, सारो श्रेय अण तो आ फोटूआं नैं दे दियो।

—आपा नैं ओ बहम है, मा बोली, जो कुछ करै है भगवान् करै है, मिनख तो बीरै हाथ री ही कठपुतळी है, मेरो तो जी हालण लागग्यो जद हेमराज जी रै गोळी लागी। बानैं भगवान् ही बचाया है, मारण आळै तो बानैं मार ही दिया हा। बो ही न्यायकारी है।

—न्याय करण आळी बात म्हारै कोनी जचै, पापा जवाब दियो, बावली तू देख, आज इण धरती माथै कित्ता गरीब बिखर्‌या पड़्या है। दिन-रात कमाई करै है, अर भूख मरै, न्याय कठै है, पण जका चौबीस घंटा खोटा घड़ै, बै ऐश करै है, महलां मे रवै, कूलर रै नीचै सोवै, कारां अर हवाई जहाजां मे चालै, म्हूं कया मानल्यू के बो न्याय करै।

—इसी बातां मनैं कोनी आवै, म्हू तो एक ही बात जाणू के खोटा करन जे कोई भगवान् री सरण में आ ज्यावैं, बीनैं ओ माफ कर देवै, ईरी किरपा होवै तो डूबतै नैं तार ले, आगस्यू बचाले, मौत रै मूडै स्यूं काडण आळो ओ ही है, मनैं तो ओ ज्ञान आग्यो, थारी बात थे जाणो, म्हूं तो आं रै ही चरणा मे हूं।

मां री इत्ती डूंगी आस्था देखन पापा भी तरकां री तलवार कोनी चलाई। आ ही बात मजाक मे कहदी—कोई बात नी, तूं तो म्हारो आधो अंग है, थारी करणी में म्हूं आध रो हकदार हू।

13

म्हूं म्हारै मकान री छात रै आथूणै पासै कुरसी ढाळन बैठगी। म्हानैं म्हारै इम्तिहान री त्यारी करणी ही। पोथी म्हारै हाथ मे ही। म्हारो मकान पूरो एकान्त में हो, एक सड़क ही फकत दिखणादै पासै, बी पर अबार ताई

ट्राफिक तेज कोनी ही। पांच-चार बस दिन में आया-जाया करती, कदे-कदे कोई कार, जीप टिप ज्यावती। पण उतरादो पासो तो सफा उजाड़ हो। दूर डूंगरां री एक लांबी कतार ही, डूंगरा अर म्हारै मकान रै बीचै कोई मकान नी, बीहड़ जगल हो जठै मोकळी किसमा रा झाड बोझा खड़्या हा, जगळ सुहावणो कोनी, डरावणो हो। डूंगरा पर बादळा रा मोटा-मोटा टोळ उठै हा, जका भोत ही मन भावणा लागै हा। म्हूं पढणै सारु बारै आई ही, पण बी दरसावनै देखन म्हारो जी इण दरसाव में रमग्यो। सोचण लागगी स्यात् बिरखा आ ज्यावै। बिरखा तो ई दरसाव नै भोत ही मनोहारी बणा देवै। म्हूं बा बादलां नै देखती रही—देखती रही। बादळ धीमै-धीमै ऊपर उठै हां, दूर टीकां में बिरखा री धारा चालण लागगी ही, डूंगरा पर बिरखा भोत मजेदार लागै, फेर धीमै-धीमै छांटा ओसरण लागगी, छाटा घणी तेज होगी। म्हूं छांटा ओसरता ही कुरसी मायनै लेगी अर फिर ई आछै चितराम रो आणद लेवण लागगी।

मेहा क्यूं बरसै? धरती प्यासी होवती होसी, प्यास तो हर जीव नै लागै, धरती भी कोई जीव है, धरती री आ मांग है, मेहा आ, म्हानै अबै प्यास लागरी है, धरती बुलावै, मेहा आवै—बुलबुलावतो, गरजतो, चमचमावंतो, झबझबावंतो, आपरी जुवानी रो प्रदर्शन करतो। धरती आपरी बाबा फैला राखी है—आलिंगन सारु, मेहो बरसण लागर्यो है।

दादी ओखता ही कही ही—अरे, स्वराज तो अबै जुवान होगी, थानै फिकर कोनी, जद मा कयो हो—हा, छोरो देख राख्यो है, अठै बी. ए. में पढ़ै है, घर रो तो गरीब है, पण छोरो भोत आछो।

पापा अर मां भी आ ही बात करी। मनै तो बड़ी सरम आई, बारै सारै ही कोनी बैठी, पण एक जी करै, वात पूरी सुणल्या, एक जी करै, सुण्या कोनी करै है, इसी बातां, दूर जाणो ही आछो।

विजय भइयै भी एक दिन एक बात कही ही—पापा अर मां तेरै ब्याव री बाता करै हा।

म्हूं सीसै में मूंडो देखू तो म्हूं ही लाज मरूं। चालू तो धरती लाज मरै। सड़क पर चालती नै छोरां घुर-घुर देखै, कई सीटी बजा देवै, कई सारै कर टिपता गाणो गा देवै। एक दिन तो म्हूं साइकल पर जा री ही,

म्हारै साथै ही बैठन चाय पिया करती, पण आपरै काळजै नै दाबणै में भोत पटु ही, फटाक स्यूं मुळकी, फेर हसण लागगी, पण बीरां आसू ओजू वीरै गाल पर ही पड्या हा, सूक्या कोनी हा।

—माताजी लड़ैली, आ बात कहर बा नीचै गई, म्हूं चाय पीवती रही, पीवती रही, राधा री जिंदगी नै लेयन सोचती रही।

राधा म्हारै अठै दो मीना पैली तो आई ही। बीरो बाप अठै छोडग्यो, मां नै वो जाणै हो। बींरो मां पर जी टिकै हो। पाच साल पैली ई रो ब्याव होयो, बस ब्याव ही होयो, बण तो ईंरो ताल ही कोनी ली। वो दीसावर चल्यो गयो, पाछो आयो ही कोनी, वठै ही रमग्यो। राधा मा बाप रै भार होगी ही, मां, बाप राधा रै भार होग्या हा। मा वीनै आपरै कनै बुलाली। नारी री जिंदगी री आ ही तो विडम्बना है। पण राधा री जौवन कदे उमड़ची ही होसी, पण अबार तो वो सूसण लागर्‌यो हो जाणै हवा भर्‌योड़ो ढोल सूसण लाग ज्यावै है।

म्हूं नीचै गई तो पापा आग्या हा। कोठी रै आगै गाडी खडी ही।

पापा कमरै मे हा, बांरै कनै एक आदमी बैठ्यो हो। म्हू नेड़ै गई तो पतो लाग्यो—वै तो मोहनसिंह जी हा। म्हूं वानै पीछाण्या ही कोनी।

मंत्री बणणै रै बाद अबार ही आया, वैं तो म्हारा पड़ोसी हा। पापा जेल मे हा—जद् वै ही म्हानै सभाळ्या करता। बारी लुगाई भोत आछी ही, बांरी लडकी म्हारी सहेली ही, म्हारै साथै रम्या करती। पण अबार तो वै ऐन बूढ़ा होग्या, सिर धोळो होग्यो। मूंडै सळ पड़न लागग्या।

म्हानै देखता ही बै खड्या होग्या, म्हारै माथै पर हाथ फेर्‌यो। बोल्या—म्हारली सुमित्रा री तरियां होगी। तू भी तेरै पापा रो फिकर होग्यो।

पापा बोल्या—सुमित्रा भी बड़ी होगी होसी।

—वीरो ही तो फिकर होर्‌यो है, मोहनसिंहजी बोल्या।

पापा ओळमो दियो—भई, मोहनसिंह, इत्ती कांई नाराजगी, तू आयो ही कोनी।

—अरे बडा आदम्यां, काई आवां, किरायो कोनी लागै, कोई काम होवै तो आवै, नी ईंया ही आयन काई लेवै।

—म्हू तो घरे बैठ्या घणी वार याद कर लेंवता, पूछो स्वराज स्यू, पापा कयो, सगळा ही आया है अठै, मारामसिह मिल लियो कई बार, फूसाराम घणी बार मिलै है, म्हू गयो हो बठै आपणै क्वार्टरां मे गयो हो, सगळां हू मिल्यो घरे जाय जायन पण तू कोनी मिल सक्यो, छुट्टी पर हो।

—हा सुणी ही, थे आया, मनै बडो पछतावो रयो, पण अबार झक मारणी पडी, बिना मतलब आवणो भी आछो कोनी, अबार मतलब हो तो आयो।

—बोल, चाय प्याऊ, छाय प्याऊं, कॉफी प्याऊं।

—की कोनी पीऊं, अण राज थारलै पाणी प्याय दियो, वी चकरी मे एहडो चढर्‌यो हूं पूछो मत।

—ना, पीवणो तो पडसी ही।

इत्तै मे मां आयगी, आवतां ही बोली—ओ हो हो, आज सूरज कीनै ऊगैलो, थे तो भोत ईद रा चाद होया, कवै है के पांडव मरता मरग्या, पण सोमवती अमावस कोनी आई, म्हूं कू, म्हारै मोहनसिहजी कोनी आया।

—आंवतो तो अबार हो कोनी, भाभी-सा, पण झक मारन आवणो पड़्यो, रांड तो रंडापो काटै पण रंडवा कोनी काटण दे।

इत्तैन मोहनसिह सारू चाय आगी, पापा अर मा भी साथ दियो।

—अबै बताओ, थानै आवणो कया पड़्यो, थानै तो कागज स्यूं काम कर देवा, म्हूं थारो गुण कोनी भूलू, मा बोली, पण थे सुमित्रा री मा नै साथै क्यू कोनी ल्याया।

—अठै टेम सिर रोटी रा सांसा पडर्‌या है, थानै सुमित्रा री मा री लागी है, म्हूं मैंकडू रिपिया खराब कर चुक्यो, ओ तो हारी रो आक बाम्यो है।

—बात तो बताओ, मा बोली, आधी रात थारै सारू हाजर हां, मोहनसिहजी तो इत्ता सालां मे एकर ही तो कोनी आया।

—कांई कूं, सरम आवै, थारो खास आदमी, मूछ रो बाळ कोडाराम एम० एल० ए० म्हारो तबादलो करा दियो कोसां दूर जाण-बूझन।

पापा हम्या, थानै तो नीति रो ज्ञान हो जकी तबादला पाछै बणा राखी ही।

—कोडाराम जी थास्यूं नाराज है, थे वांरा वोट बिगाड दिया, पापा कयो।

—म्हूं एक बात कू आपनै, मोहनसिंह कयो, कै तो आप जनतंत्र रो ढोंग रचो मत, जे रचो तो फेर ऐहड़ो कोजी अर ओछी बाता पर मत आओ। म्हूं जाणूं हूं राज रो नौकर राज रै पक्ष अर विरोध मे बोल नी सकै, भाषण नी दे सकै, कनवेसिंग नी कर सकै, फकत वीनै वोट देवणै रो हक। म्हूं कठै ही बोल्यो हूं, वोट मांग्या हूं, वोट सारू मजबूर करयो हू, तो थारो जूतो अर म्हारो सिर, काई हुवै कठैई दुकान पर बैठन वात करली, भाया मे बैठन वात करली, इत्तो ही नी कर सका तो फेर आपणो राज काई? आ पाबन्दी तो राजा ही कोनी लगाई ही। थे म्हे बैठन राज नै गाळी काडता ही, छोडो इण वात नै, म्हूं थानै मदद करी, थे म्हारा भायला हा, म्हू कर दी, पण थारा आदमी तो खुल्लम-खुल्ला प्रचार करै, गांव-गांव फिरै, घर-घर घूमै, म्हे जे बोलग्या तो गुनाह होग्यो।

—तो कोडाराम करयो ओ काम, मां बोली, थे कोडाराम कनै गया?

—गयो क्यूं कोनी, गयो, मनै के कोडाराम स्यू डर लागै, बो कवै म्हूं करायो, जाण-बूझन करायो, भोत तबादला कराया हा। थे लोगां म्हारो विरोध करयो। म्हू कयो—जनतंत्र उठाल्यो, वोट मांगो क्यों, कहद्यो—राज म्हारो अर म्हारै बाप दादै रो। क्यूं करोड़ू रिपिया जका जनता रो धन है वीनै फूको, आग लगाओ।

मोहनसिंह जी काफी ताव में हा, पण पापा तो रोज ऐहड़ी वातां सुणै, वां पर ऐहडी वातां री कोई प्रतिक्रिया कोनी हुवै।

मां ही बोली—थे कठै ठहरेडा हो, आ बताओ।

—धरमसाळा में, मोहनसिंह कयो।

—ओ घर कोनी, मां ओळमो दियो, जाओ थारो सामान अठै ली आवो, म्हू गाडी भेजू हूं।

—मा ड्राइवर साथै मोहनसिंह ने भेज दियो।

लैरै स्यूं मा पापा नै कयो—आ कांई व्यवस्था करी है, राज रा नौकरां नै क्यू परेशान करो हो।

पापा कयो—राज करणै सारू सौ कौतक करणा पड़ै, अै डरता रवै तो-

काम करै या नी करै, वोट तो देंवता रवै। म्हानै तो राज करणो। मैं डरावा, मी डरां जद काम चालै।

—मोहनसिंह रो काम कराणो है, मां कयो।

—काम तो कराणो है, एकर झटको लागग्यो, अबार काम होंवता ही ओ ही सागी गीत गावतो फिरसी। ओ कोडाराम रो तो फेर भी वो कोनी हुवै, पण आपा भी तो कोडाराम नै सदा कोनी राखा, बीनै अगली बार बदळदेस्या। आ राजनीति है, देवी जी।

पण मां ई राजनीति नै कोनी समझती। मोहनसिंह जी घरे आग्या हा। वै आपरा बोरिया बिस्तर बंठै ही चक ल्याया।

मा नै चैन कठै, वण तो कोडाराम नै दिन छिपै सूं पैली बुला लियो। वो अठै ही आपरै क्वार्टर मे मिलग्यो।

पतो नी मा रै कांई जची, बण कोडाराम नै आंवता ही लब्बडधक्कै ले लियो।

—कोडाराम जी, मां बोली, आ ही है थारी राजनीति, बाड में मूत्यां ऊ कोई बंर कोनी नीसरै, मारो तो कोई शेर री शिकार मारो, कोड़ी छिमकणै स्यू कोई लाभ कोनी मिलै।

—माताजी, कोई बात तो।

—बात भी बतास्यूं, थ्यावस राखो। थे मोहनसिंह जी नै कोनी जाणो। थे तो काल मारै नेड़ै आया हो, अै मोहनसिंह जी थारै सामै बैठ्या है, जद म्हानै दुनिया भर रा संकट घेरेडा हो, कोई म्हारै नेडै कोनी आंवतो, अै सगळा ई धरती पर ही मरै हा जका ऐन एक नम्बरी देसभगत बण्या फिरै है, घोळपोसिया होर्‌या है, खद्दर मे कठै ही नावड़ै ही कोनी, बै एक ही म्हारै सारै कोनी आया, अै मोहनसिंह जी म्हारै आधी रात रा काम आया करता, आरो हू गुण कोनी भूलू।

—कांई बताऊं, कोडाराम कयो, अै म्हारै खिलाफ रह्या, म्हानै वोट कोनी दिराया, म्हारी खिलाफत करी।

—ओ तो थारो इसो ही डोळ है, अै काई करै, पढ्या लिख्या आदमी है, अै मै समझै है, थारा कारनामा है इसा ही, म्हारै ऊं तो छाना कोनी, ओ ही म्हारो आदमी थारै इण पडपच मे है, नी तो म्हूं थानै वोट कोनी

द्यूं। लोग म्हारै कनै रोज अठै आवै, इण राज रा संतायोड़ा। की रो तबादलो करा दियो, कीनै ही नौकरी कोनी, कीरै ऊपर झूठो मुकदमो चला दियो, कठै ही फौजदारी करा दी, कीनै पाणी कोनी, कठै स्कूल कोनी, कीनै पुलिस आळा कूट दियो, म्हूं तो आखै दिन ओ ही रांडी रोवणो देखू है, थारा कांटा म्हानै बुहारणा पड़ै, राजनीति रो मतलब ओ तो कोनी के थे मिनख पणै नै ही भूल ज्यावो। यो भगवान तो देखै है, तड़कै नै बठै काई मूंडो लेयन जावैला।

कोडाराम नै काटै तो खून कोनी, पण तो नीचो मूंडो कर राख्यो हो।

मां तो बोलती ही रयी जाणै बा आपरो सो हवड़ास काडै ही—काल म्हारै कनै एक लुगाई आई, आयन पग पकड़न रोवण लागगी। बुरी तरियां, झरर-झरर थीरी आख्यां झरै, बोल कोनी पाटै, म्हू मसां बीनै थमाई। पण कयो—म्हानै पुलिस आळा संतावै, म्हारै एक कुवारी छोरी है, म्हू काई बताऊं, रोज दारू पीयन आ ज्यावै।

म्हूं आई० जी० पी० नै फोन कर्‌यो। वै तो धरमात्मा आदमी, बोल्या—काई बतावा, च्यारूं कानी आग लागरी है, इनै बुझावा तो परनै लाग ज्यावै, बीनै बुझावा तो इनै लाग ज्यावै। घणां तो थारा एम० एल० ए० दुख देवै है। अै थाणेदारां साथै मिलन पीवै। काई करां। थारै एम० एल० ए० री नी राखां तो थे कोनी पार पड़न द्यो, राखां तो ओ हाल है, म्हानै तो नौकरी करणी है, रिटायरमेंट रा थारा मीना रह्या है।

आ बात आई० जी० पी० कवै, मा बोली, जको पुलिस रो मलिक है। अरै भाई कोडाराम जी, राजा जुल्म कर्‌या करता, म्हू जाणू हू, पण जुल्म करण आळा हा कित्ता ? गिणती रा, पण अबार तो राज अणगिणती लोगां रै हाथां मे है, एम० एल० ए० थारां मरजीदान, गिणती ही तो कोनी। क्यू बिचारै गांधी रै मूंडै पर तोवो मसळो हो। अै थोड़ा-सा धरम-करम आळा आदमी पुराणा राज मे है, गिण्या दिना में सगळी ही सेळभेल होवण आळी है।

मा ठेरै बयारी, बीनै तो आज बोलणो हो, बोलती तो गई। इयां लागै ही जाणै रीस विचरगी।—म्हू तो भाई, म्है नौकरी में हा तो भोत सुखी हा, आपरी नीद उठती आपरी नीद सोवती। स्वराज रै पापा टेम सिर काम

पर जावता अर टेमसिर आ ज्यांवता। पण अबार तो झांझरकै उठू हूं अर आधी रात री सोऊ हू। रोटी खावणं रो ही पतो नी, कदे-कदे बा ही भूल ज्याऊ, कठै ही कूणैं-कचूणैं मे बडन आय झबकू तो लोग वाही कोनी झबकण दे, लोग कवै—आ (विरमानन्द) कोठी बणाली, बो तो मनैं बेरो है, काई बणाली, कया बणाली, ओ सगळो म्हारै माथै पर करजो है, म्हानै रात नै सूतो नैं नींद कोनी आवै, अखबारां आळां रो राम नीसरयो है। भाई, लोगां रा मुंह खुलग्या, सरम गेर दी, मरजी आवै ज्यू बक ज्यावै, मरजी आवै ज्यू लिख मारै। बानैं कवै तो कुण कवै ?

मां इत्ती बोली, इत्ती बोली के मा रो जीव टिकग्यो, मां में इत्ती बातां छिपी पडी ही, म्हानै बेरो ही कोनी हो।

कोडाराम बैठयो-बैठयो सुणतो रयो, मोहनसिंह जी भी कोनी बोल्या, बैं जाणैं हा, माताजी आज कोई कसर कोनी राखी।

मां इण दुनिया नैं देखन भोत स्याणी होगी ही। आखर मे वण एक स्याणी बात कयी—देख कोडाराम, तबादलो तो आंरो तनैं कैनसिल कराणो है, बण जे तू गाठ बांधै के मोहनसिंह म्हारी स्थान पटादी तो म्हूं आरो तबादलो है ज्यू ही रैवण दयू, बय् के तू तो बदळो लेवण री सोचै लो, और कोई कबाडो करा देसी, आनैं संतासी, उळझादेसी अै फेर म्हारे कनैं भाजन आसी। म्हू कठै आडी आस्यू, पण तेरो मन साफ होवै तो तूं अबार ही आरै साथै बात कर ले, आदमी कोजो भोत होवै है, ईंरै काळजै में बडी गाठ्या है, छुरा है छुरा तीखा-तीखा।

मां तो चली गई, बीरै नाम स्यू फोन आयो हो। मोहनसिंह जी अर कोडाराम दोनू मिल बैठन बात करण लागग्या, दोनूं हंसता दीखै हा, घुट-घुटन बात करता दीसै हा, साथै चाय री चुस्की लगावै हा।

तीन दिन पाछै मोहनसिंह जी आपरो हुकम लेग्या।

14

—तू कठै गई ही ? मां पूछयो ।

—ऊपर तो ही, म्हूं कयो ।

—कांई करै ही एकली ?

—एक उपन्यास मिलग्यो हो, पढ़ण लागगी, म्हू कयो ।

—ठीक है ?

मा रो जी टिकग्यो, मा मेरो ध्यान राखती, कठैइ ऐरी गैरी जगां न चलो ज्याऊं । घर मे भी सौ भांत रा मिनख आंवता, मा बारो भी ध्यान राखती। म्हूं को साथै ज्यूं-त्यूं हंसती, बोलती भी कोनी, फेर भी मा टोक देंवती ।

म्हूं कह देवती—मां कांई बावळी हूं !

मा कैवती—तूं तो बावळी कोनी, बेटा, आ ऊमर बावळी है। आपणै हा न एक कलक्टर सा'ब, बांरी छोरी नै मां-बाप घणी छूट दीनी, बेरो है कांई होयो ?

—हां, बेरो है, मां ?

—बस तो, बा छोरी बावळी तो कोनी ही, स्याणी ही बी० ए० में पढ़ै ही, कित्ती बदनामी हुई ?

म्हू तो चुप ही, कांई कैवती, म्हां स्यू की छानी कोनी ही, कुण किसी, कुण किसी । पण राम जाणै कांई बात ही, नौ जुवान छोरा ही हिम्मत ही कोनी ही, म्हा स्यूं बात करै । आ बात कोनी ही के म्हू फूटरी कोनी ही, पण वडै बाप री बेटी ही, वासना री आख म्हा पर गडांवता बानै डर लागतो ।

पण आ बात कोनी ही के म्हू सफा भाटो ही, म्हारै भी मन हो काळजो हो, म्हारै भी हिवडै मे कल्पना रा पंखेरू उडाण भरया करता । रात नै सुहावणा सपना अधबीच मे नींद उचाट देंवता । आभै रा तारा मुळकता दीखता, चाद हसतो दीखतो । मोरियै री पीऊ'''पीऊ'''टीटूड़ी री टी उ '''टी उ मन में गुदगुदी पैदा कर देवती ।

म्हूं छात पर घणी वार एकली बैठ ज्यावती, बैठी रैवती, बैठी रैवती,

म्हारै आसै-पासै की रो ही घर कोनी हो, की रो छात कोनी ही, म्हारै नैणा रै सामै सुध प्रकृति होवती, हर्‌या-भर्‌या मोटा-मोटा रूख, दूर आभो धरती जठै मिलै वठै ताई रूख ही रूख दीखता, एक कानी परवत ही परवत, बादळ री टोखा सुहावणा, मन भावणा। कठै-कठै ही रोहिडै रा लाल-लाल फूल भोत फूटरा लागता। एक कानी पूरो नगर आपरी ऊचाई साथै टिक्योडो, जम्योडो मन नै ओपतो। दिखणादी सडक पर कदे-कदे मोटर री घर्‌र-धर्‌र स्कूटर री भर्‌र-भर्‌र, कार री सर्‌र-सर्‌र सुणती रैवती। म्हूं मोटर नै जनता मानती तो कार नै रहीसी अर स्कूटर नै जवानी री उपमा देवती, साइकिल तो गरीबी रो रूपक हो ही। पगा चालता जका—गरीबी री रेखा स्यू नीचा, कीनै ही आंकड़ा त्यार करणा है तो की सड़क पर खड़्या हो ज्याओ।

आ दिना म्हारी जिन्दगी मे एक ठहराव सो आग्यो हो। इम्तिहान तो खतम होग्यो, करू भी तो काई करूं। राजनीति में भी कोई हलचल कोनी, पापा आपरो काम करता रवै, मा अपणो, विजय भइयै ने इम्तिहान देवणो है, फिर वो तो छोरो है, छोरो तो कठैइ आपरा दोस्तां में चल्यो जावै, अबै म्हारी सहेल्या भी दूर पडगी, अठै इत्ती दूर आवै कुण ? आसै-पासै कोई ढग रा घर नी, इनै-वीनै छोटी-मोटी झूपड्या जका मे लोग आपरी जूण पूरी करै, म्हारै घरै की नौकर-चाकर आपरै धन्धै लाग्या रवै, म्हारै सारू वेल कोनै।

म्हूं कदे छात पर चढ ज्याऊं, प्रकृति नैं देखती रऊं, कदे नीचै आ ज्याऊ, रेडियो सुणती रऊ, लोग आवै जका सीधा मा कनै जावै या पापा नै पूछै, म्हूं ऊब-सी गई, काई करां।

ऊपर वैठी ही विया ही ज्यूं रोज वैठ्या करती। सामै हो दरखतां रो बीड। विरखा रुत मे ईं रो रंग सातरो हो ज्यावै, सारा रूख पत्ता स्यूं लद ज्यावै, न्यारा-न्यारा पण एक साथै, डाळ स्यू डाळ जुड़्‌या हा, जिया वै बाथ घालन मिलै, कठै खेरडी ही तो कठै कोकर, कठै झाडकी ही तो कठै ही जाळ, कठै ही रोहिड़ो हो तो कठैइ कैर। वधणै मे कीकर रो मुकाबलो कोनी, पण खेरड़ी न तो पसरणै में तकड़ी न वधणै मे, आ मध्यम श्रेणी री प्रतीक

जाळ रो फैलाव आछो सातरो, गहरी चोखी छिया ही घणी, पण रोहिड़ा

आपरै रूपरंग में नाकै ही दीखै, नखरै मैं डूब्योड़ो। आंरी भी एक दुनिया है, अठै भी गरीब, अमीर है, आपरी-आपरी ठौड़ में सगळा खड़्या है पूरै जी सोरै स्यूं, वठैइ कोई टकराव नीं, बाथ स्यूं बाथ घालेन मिलेड़ो। कठैई पीपळ अर बड़ भी खड़्या की पूंजीपति-सा भारी भरकम, वारै नीचे छांव तो घणी पण वांकै आसै-पासै कीं वच्चू नै पागरण दे नी।

इत्तै नै राधा भाजन आई—बाई-सा, बाईसा थारो ब्याव मंडग्यो।

ब्याव मंडग्यो, म्हूं अचंभै में पड़ी, कोई बात नी चीत नी, ब्याव कया मंड्यो, म्हू मन में करी। म्हूं की पूछती, पण राधा खुद ही कह बैठी---दस दिन पाछै पच्चीस तारीख नै।

म्हारै पगां रै बड़ा बंधग्या। म्हूं पढी-लिखी छोरी ही, म्हा स्यू पूछ्यो तक कोनी, म्हानै कण ही देखी तक कोनी, म्हूं कीं नै देख्यो तक कोनी, स्यात् एक बात चालै ही, एक लडको है, अठै ही बी० ए० में पढै है, गरीब है, स्यात् वो ही हुवै। पापा नै तो बेल कोनी, मां तो स्याणी है। जमानो बदळग्यो है, ईं बदळाव नै दोनां ही महसूस क्यूं कोनी कर्‍यो, म्हारी राय तो कोनी ली, लड़को वो ही है तो बीनैं तो म्हूं देख्यो है।

ब्याव तो साच्चाई मंडग्यो। ब्याव रा दिन ही दस रह्या। मन में कीं और तारियां होवण लागगी, एक अजीव तरां री उदासी, एक अजीव तरां री जिज्ञासा, एक अजीव तरां री खुसी। म्हूं भुआ री लड़की रै ब्याव में गई ही, मोत धूम-धड़ाको हो—बनड़ी गावती छोर्‍यां, पण अठै तो कोई छोर्‍यां ही कोनी ही, पड़ौस ही कोनी हो, हा जका ऐन गरीब-गुरबा, खेतां मे मजूरी करण आळा, भात-भात रै देस रा, आपणा गीत वानै आवै भी कोनी। मां रो घणो जी करै, पण करै काई? म्हारी छोरी रो लाड कोड कोनी होयो। भुआ री छोरी नै तो एक मीना पैली गूंद जमान दियो, म्हारै वो भी कोनी दियो। तीन दिनां पैली म्हारा पीळा हाथ कर दिया, कठैऊं एक पंडत बुलायो, दो छोर्‍यां मिला एक दो गीत गा दिया, नाम सो कर्‍यो। पापा नै फुरसत कोनी, मा नै फुरसत कोनी, कुण भात नूतण जावै, दादी नै भी कोनी बुलाई। घर में ब्याव सो लागै ही कोनी हो, न बान, न बनौरा। पापा कह्यो—आपा आदर्श ब्याव करां हां, सगळा पड़पच है, फरेब है, ढोंग है, फकत फेरा, न कोई दाइजो न कोई जनेत, पांच आदमी आसी अर फेरा

करन ले ज्यासी।

सागण दिन बारात आगी पर जीप में पाच आदमी। न टुकाव, न माडो, एक पडत आयो, फेरा करावण लागग्यो, म्हू नया गाभा पैरन एक पाटै पर बैठगी। पापा आया ही कोनी, हा मुख्य-मत्री हा, विधायक भी हा, कई मत्री भी हा। मुख्य-मन्त्री पापा नै फोन कर्‌यो वै कठै ही दौरै पर हा। पापा उत्तर दियो बतायो—म्हूं काई करस्यू, आप भी तो बाप री जगा हो। म्हू उघाडै मूडै फेरा लिया।

दूजै दिन ही म्हू तो भीर होगी, मा मनै विदाई दीनी, भीर होवता-वकत कण ही कैयो—स्वराज अर आनन्द रो किसोक मेळ है। म्हारै आख्यां मे आसू आया, म्हू रोई, म्हारै रोवणै रै साथै गीत भी हुया करै—लस्कर पाछो घेर, ओळ्यू तो आवै'''भुआ री छोरी बिदा हुई तद ओ गीत गाइज्यो, छोर्‌या भी आपरी सायण नै भीर करै—म्हारी सायण चाल पड़ी, म्हारा डब्-डब् भरि आया नैण', इण धरती रो तो रोवणो भी गीत साथै होवै, म्हारा फेरा मे न ही गीत कोई गूज्या—चौथो ए फेरो'''हुई पराई, म्हूं इण गीत बिना ही पराई होगी। 'गोवर पसर्‌यो ए, जामी तेरी धीय बिना' अै सगळा गीत म्हारै मन मे गूज्या अर गूजता रया, आखै मारग म्हानै याद आवता रया।

जीप एक गाम मे जा ठैरी, एक घर रै आगै, जकै री हर ईंट कच्ची ही, छोटो सो बारणो, गाम री लुगाया अर छोर्‌या मनै घेर ली, पतो नी क्यू, म्हू आखै मारग उघाडै मूडै ही, पण बठै आवता ही म्हू घूघटो खीच लियो।

इण घूघटै में जको मनै आणंद मिल्यो, बो उघाडै मूडै मे कोनी हो। आवै जकी छोरी अर लुगाई म्हारो घूघटो करन म्हारै मूडै नै देखै अर म्हानै सरावै—'ओ हो बीनणी तो भोत फूटरी।' इण फूटरै सबद स्यू ही म्हारो पाव खून वदै। लुगायां री बातां बड़ी मजै री ही—'बीनणी, आख उघाडी ?'—म्हूं आख उघाड़ द्यू, पतो नी क्यूं सरम आवै ही, म्हू लाज स्यू माय ही माय गडी जावै ही, अठै आंवतां पतो लाग्यो के नारी चाये कित्ती ही पढल्यो, बीं रो मूळ रूप लुक नी सकै, लाज तो नारी रो खास लखण है। आख उघाडता ही छोर्‌या कवै—ओ हो, आख्या तो गट्टा-सी है। 'ओठ देख ए, कित्ता लाल है, ए मरज्याणी, रच्येडा है कांई' 'ना तो, रच्याड़ा-सा

लागै है, बेई घर री है, भोत बड़े घर री, ए रंग देख, राममारी, लाल सुरख,....' इसी बातां करती रयी, फेर म्हारो गंठजोड़ो बाधीज्यो, म्हारी सासू म्हारो स्वागत कर्यो—'लाडो आयो जीत रे ?' एक रिवाज, एक परम्परा, पुराणै जमानै मे जमीन अर जोरू जीती जाया करती, जद् स्यू ही ओ गीत जीवतो है। फेर तो आखो आगणो ही गीता स्यू गूजण लागग्यो। रात नै रातीजोगो लाग्यो, सगळै देवी-देवतावा नै याद करीज्यां। आदमी आपरी कमजोरी में देवी-देवतावा अर भगवान री सारो चावै चाये बो हो या ना हो। कदे-कदे म्हारी निजर मकान री भीता कानी चली ज्यावै, आखो मकान ही कच्चो, गोबर लिपीज्यो, पण मकान मे जगा-जगा सौरम ही सौरम ही, नयै भात री सौरम—मेहदी री ज्यू हुवै।

मनै दो छोर्‌या पकड़न छात पर लेगी। म्हूं छात पर बैठगी। म्हारो जिन्दगी में अै सगळी अजीब बातां ही, जाणै कोई सपनो हुवै, म्हूं कदे इसी बातां री कल्पना तक कोनी करी कै कदे म्हारै मे इगी भी बीत सकै, कदे दादी कांणी कैवती—एक राजा हो, बीरै सात बेटी, राजा आपरी बेटी नै पूछै—तूं कीरै भाग रो खावै—बापू थारो। राजा खुस। एक बेटी कह दियो—म्हूं मेरै भाग री खाऊ—तो लेज्याओ इनै जगळ मे, मोर, कागलो मिलै जकै नै ब्याव दीज्यो। फेर बीरो ब्याव मोर सागै होयो।'

म्हानै वा कोठयां, बंगला मे रमा'र पापा थां कांई करयो, काई पाप करयो हो म्हूं।

म्हूं एकली पड़ी-पड़ी मन ही मन मे रोवती रयी, ऊपर चांदणी म्हारी पीड़ नै देखन मुळकै, बो ही सागी चाद जको म्हारी कोठी पर चमक्या करतो, वो लैरै ही आयो; म्हारी मजाक उडावण सारू।

आगणो जद् ऐन चुप होग्यो तो धीमै-धीमै कीरा ही पग बाज्या, म्हारी आख्यां में नीद कठै ही, पत्तो नी, म्हारो काळजो क्यू धड़कण लागग्यो—धड़क-धड़क। म्हूं तो नीचै पड़ी ही, एक सूत्ती बिछावणो हो। वा आवता ही म्हारा दोनू हाथ पकड़न मनै माची पर विठादी। फेर पत्तो नी वानै काई सूझी, बोल्या—'म्हानै माफ करदयो, स्वराज, म्हारो कोई कसूर कोनी, थारै पापा री ही आ जिद् ही, वा म्हानै थारै सागै ब्याव दियो। म्हूं आपरै कतई लायक नी।

म्हूं काई बोलती, म्हूं तो रोवण लागगी, चसर-चसर, पतो नीं म्हारो रोज क्यू फूट पड्यो।

—म्हूं हाथ जोडं, आपरै आगै, वां कह्यो, आप रोओ मत, म्हारो भी तो गलती कोनी। म्हारै बापू नैं मना लियो। म्हू बापू स्यूं कैंवतो रयो—म्हारो बीरो कोई जोड कोनी। आपां गरीब आदमी। मसा गुजारो करा, बै मनीस्टर, कोठी, कारां आळा। पण थारै बापूजी कयो के वै मनै आपरै कनै ही राखसी। वठै ही पढ़ासी, नौकरी लगासी। म्हारै बापूजी रै लाळ पड़ण लागगी, थारै बापूजी रै आगे म्हारी चालती भी कया, बांरी बात टाळं कयां।'

म्हारो रोवणो बीसो तो कोनी रयो, पण म्हूं बसबसिया पाटती रही, फिर वानै भी नीद आगी अर म्हानै भी। म्हारी सुहागरात रो चांद इण राडीरोवणैं मे ही छिपग्यो अर परभात रै साथै ही म्हारी जीप पूठी चाल पड़ी, म्हारी मा रो एहड़ो ही आदेश हो।

आनद बारो नाम हो, पण मा वानै कवरसाहब कैंवती। कवरसाहब भी म्हारै साथै हा। कवरसाहब भी दो दिन ठैरया अर पूठा आपरै घरै आग्या। इनै कवरसाहब गया अर बीनैं स्यू दादी आगी।

दादी तो अबार विकराळ रूप धारण कर राख्यो हो, पूरी चंडी बणरी ही। मौको भी इसो पड्यो के पापा अर मा दोनू एक जगा बैठ्या मिलग्या। आंवतां ही बोली—थां दोना री अकल मे तो फाको ही कोनी।

—क्यू मा, पापा कयो।

—तू स्वराज रो ब्याव करयो, मनै तूं ठाव ही कोनी पडन दियो।

—टेम कठै हो, मा

—टेम तेरै कनै कोनी हो, बीनणी कनै कोनी हो, आ ज्या फिरै तेरै आगै पीछै, कोनै कयन दो आक मंडवा देंवतो, म्हूं आ ज्यावती।

—काम मे म्हू तो सूनो होरयो हूं, मां, की ध्यान कोनी रयो, म्हू भी कोनी हो।

—तो आ आछी बात ही? मनै सो ठाव पड़ग्यो, छोरी रा कोई लाड कोड होया नी, गीत गायाजी नै, बान बनौरा होया नी, दान-दाइजो ही कोनी, तनै तो तेरी अक्कल पर घमड होग्यो, तूं मनीस्टर कांई बणग्यो,

भगवान् बणग्यो, दूजे नै की गिणै ही कोनी ।

—आ बात कोनी ही, मां, तू समझी कोनी ।

—म्हू काई समझू, तूं अबै वडेरो होग्यो, मनीस्टरी तो म्हू कोनी कर जाणू, पण ब्याव-म्यावा नै आपस्यूं वडेरा नै पूछन करै है, बांरो काण कायदो राख्या करै, बांस्यूं सलाह लिया करै है, तेरै तो भातवी कोनी आया, बानै भी कोनी बुलाया। तेरै स्यू सांसी-सरड़ा आछा, जका आपरी रीत तो कोनी छोडै, तूं तो सफा ही मनै नीची दिखादी, मेरी नाक काटली, मनै अबै मिनखां में कोई बोलण कोनी दे, आ तो करी तो काई करी ।

—मां, तू पैली चाय पाणी पीले, न्हाले धोले थकेडी है न, फेर बात करस्या ।

—म्हूं तो तेरो पाणी कोनी पीऊ, तू चाय री वात करै ।

—मा इत्ती नाराज मत हो। म्हू तनै समझास्यू ।

—तू काई समझासी ? मेरै पर तेरै जित्ती ही अक्कल कोनी । बावळी घून, काई देख्यो तूं, वीं जीवणियै रो बेटो है बो, म्हू जाणू हू वी घर नै, बैठण नै ढूढा कोनी, पैरणनै पूर कोनी, खावण नै दळियो कोनी, बठै तू छोरी नै डोवी है। चुनावा में फूकण नै तेरै कनै धन है, लांखू बाळै है, की ढग सिर घर देख लेवतो, छोरी उमर मे सुख पावती, आ बता, तेरो धन ई छोरी रै काई काम आयो, ओ कोठी काई काम आई। आतो बीं जीवणियै रै घरे पोठा गेरै ली, तू अर तेरी लुगाई अठे कूलर री ठडी पवन भखोला, धूड़ तेरी ई कमाई में ।

पतो नी, मां रै कांई हुयो, बीरै आंख्या मे पाणी आग्यो, बा उठन मांयनै चली गई ।

पापा एकदम गंभीर होग्या, जद पापा गंभीर होवै तो बांरो मूडो की तपसी मिनख स्यूं कम कोनी दीखै। पापा बोल्या—मां, आपां समाज नै जाणबूझन बिगाड़ राख्यो है। छोरी आपणै भार होवै है, आपा छोरी जामतां ही रोवा हा, करळावां हा, बीनै भाटो माना हा, दगड माना हां, फकत ईं वास्तै के आपानै बीरै ब्याव में दान-दाइजो देवणो पड़ै, कोरी कमाई ऊं कोनी सरै, लोगां रा घर फोडणा पड़ै, लोगां रै जमीन गिरवी राखणी पड़ै, ओ रिवाज, बोल, कित्तो माड़ो है। फेर तू ही तो कया करै है—काई तो हूत

रो सरावै, कांई भणहूंत नै बिसरावै। जगां-जगां लोग छोरयां नै कूटै, मारै, सामूळी बाळ देवै है, तू सुणै कोनी।

—सुणू तो हू, दादी बोली।

—फेर म्हे लोग जका आज समाज रा अगुआ हां, लोगां रै सामै आ आदर्श राखा कै ब्याव इयां भी हो सकै है, न दान, न दाइजो, न बरात, न बान, न बनोरो। तू जाणै है, इण छोरी रै ब्याव रै नाम स्यूं म्हूं लाखू रिपिया बटोर सकै हो। दस-दस हजार रिपिया मनै बान रा देवण त्यार बैठ्या हा, पण काई करा बी धन रो, कठै मेलता। मा, जकै कनै धन नी होवै, बीनै धन भोत प्यारो लागै, जकै कनै धन है वो धन स्यू धाप्यो बैठ्यो है। दाळ रोटी मिल ज्यावै, बीस्यू मोटो धन कोनी। लड़की नै लड़को चाहिजै, लड़को चज रो है तो धन हो जीसी, लड़को चज रो नी है तो धन चाहे टीबा वधेड़ा हो नीवड़ ज्यासी।

—आ बात तो साची है तेरी।

—तू। मां, सगळी बात साची मान लेसी, ज्यू म्हे करयो है लोग करण लाग ज्यावै तो साची मान, लोग बस ज्यावै, ब्याव तो अबार उजड़णं रा ढंग बणरया है, दोसै-दोसै आदमी बरात मे, कांई बठै लड़ाई रोप राखी है, फेर बठै दारू पीवणो, तुरळ मचाणी, कोई बात है आ, लाख-लाख रिपिया री समठूणी, फेर भी सगो राजी कोनी।

—बात है तो ठीक, तू जे लाख रिपिया लगावतो तो लोग बयां कोनी टिकण देंवता, कैंवता, खाग्यो खुरड़'र देस नै।

—आपां समाज बणाणो चावा हा, मां, आपणो देस कया आछो बणै, रीत री बात छोड, रीता तो नई बणाणी पड़सी, पापा कयो।

—बात तो तेरी ठीक है, पण लोग कोनी मानै।

—तू लोगा री छोड, समाज ने नई दिसा देवण सारू लोगां री चिन्ता नीं करणी। स्वामी दयानद अर गाधी हरिजना सारू जकी बात कयी, कित्तो विरोध होयो। चूतरिया पर बैठण आळा लोग देस नै कोनी बदळ सकै। देस नै बदळन सारू मर्द चाहिजै जका विरोध री आग नै चीड़ फाड़ आगै निकळ ज्यावै। लडको म्हूं देख्यो है लाखा मे एक।

बात पापा री साची निकळी, आनद जी आपरै बी. ए. रै इम्तिहान

मे विश्वविद्यालय में दूजै नम्बर पर आया, बांरा नम्बर इकत्तर प्रतिसत हा। बानै देखतां म्हूं तो रोहिडै रो फूल हो। वां सारू कोठी में एक कमरो थरपीज्यो। बानै सहकारी विभाग में नौकरी मिलगी, वा अबै कानून री पढ़ाई सार्थ चलाली।

15

म्हारो पीर अर सासरो एक जगां होग्यो। आनंदजी रै कमरै में बडतो तो सासरो अर बांरै मे आंवतां ही पी'र। आनदजी डील रा साफ-सुथरा हा। रंग गोरो, पण डील पतळो, न लांबा न ओछा। म्हूं बांरै आगै मोटी लागती, तकड़ी लागती।

बाकै टैम पणकरो पढणै में बीततो। रात नै पढता ही सोंवता अर चार बजे उठ'न पढ़ण लाग ज्यावता। म्हू बांरी इत्ती ही सेवा करती, उठन बांनै चाय बणा देवती, कम बोलता पण बोलता जद नाप-तोलन बोलता। मनै बांरी बोली मीठी लागती, ज्यूं-ज्यूं बै नेड़ै आवण लाग्या, म्हूं बानै समझण लागगी, बै मनै समझण लागग्या, पण बै एक बात बांरै माथै स्यू कोनी मिटी—बै मेरै सामै अपणै आपनै ओछा मानता, मनै हुकम देंवता संकता। बां मनै कदेही कोई काम कोनी कयो, म्हूं खुद ही आपणो फरज समझन करती। झांझरकै जद बै उठता, म्हूं आपी जाग ज्यावती, वां मनै जगायो कोनी। कदे मनै नीद आवती रैंवती, तो बै खुद ही उठन चाय बणा लेंवता। जद म्हूं कैवती, 'मनै जगा लिया करो।' बै आ ही कैवता—'मनै काई जोर आवै है, आछो है, नीद उड ज्यावै।'

एक दिन म्हारा सास-सुसरा कोठी मे आग्या। म्हू बारै पगां लागी। सास-सुसरा ठेठ देहाती आदमी। देहाती भेस, देहाती बोली, देहाती चाल, न मोट न मुरजाद। सासू रै घाघरियो ओढणो, काचळी अर सुसरै रै कुड़तियो अर धोती, साफो। मां बानै कुलर री शीतळ हवा मे सुआया, पण बानै नै

बा सुहायी कोनी, बै दोनूं एक नीम रै नीचै माचो ढाळन बैठग्या ।

म्हूं बानै आ दिना में ही बोली—मां-सा, बाप-सा आ भी समझे के म्हे वारै बेटै नै खोस लियो ।

आनदजी बोल्या—आ कदे हो सकै है, म्हारी तनखा रा पीसा बानै पूचाद्यू हूं । नौकरी करै बांरो इत्तो ही तो सीर होवै है ।

मां बानै विदा कर्‌या—तीवळ अर कामळै रै साथै मां बानै हजार रिपिया दिया । मां, बाप ज्यू-त्यू पीसा ऊं राजी होवै, बै राजी होयन गया ।

दीवाळी रो सै दिन । दीयां रो त्योहार, अंधारो पड़तां ही च्यारू कूदा में दीयां री जगमगाहट स्योचन्नण । म्हूं अर आनदजी कोठी पर दीया जगावां । माटी रा दिया, दीया मे तेल अर बाती, फेर लौ स्यूं लौ मिलावां, एक दीयै रै साथै दूजो दीयो, दीया री पूरी लंगस, भोत सातरी लागै । आनंदजी तेल घालै, म्हूं बाती मेलू, लौ स्यू लौ जगावणै रो काम म्हे मिलन करां । दोनूं ख्यांत राखां, लेरला जगायेडा दीया बुझ न जावै, बायरो दीयां न झटको दे सकै, पण पवन तो एकदम थमेड़ी ही, झटको लागै कयां । आनदजी इण बात न लेयन दर्शन पर उतर आया, जिदगी रो दर्शन । नारी अर-पुरुष मिलन इण संस्कृति रो निरमाण करै ज्यू आपां करां, ख्यांत भी राखणी पडै, कोई इण संस्कृति रा दीया बुझा न देवै ।

आज कोठी मे बटाऊ कोनी, सगळा आपरै घरे गया, आपरै घर री दीवाळी मनावण नै, त्यूहार सिर तो घरे जावै ही । जिदगी रा झंझट तो कदे मिटणै रा ही कोनी, अै तो चालता ही रैसी । पापा भी घरे हा, बै भी *आगणै मे बैठ्या हा । मां खावणै-पीवणै रै सामान में लागरी ही ।*

पापा वेला हा, कोई आज मिलण आळो कोनी । पापा जद् वेला हुवै तो भोत खुस होवै । बै भी पेड्या-पेड्या ऊपर आग्या । म्हे दीया जगावै हा ।

ऊपर आवता ही बोल्या—'भई कमाल है, भोत ही फूटरी दीयां री लंगस लगाई है, अबै म्हानै कोई फिकर नी, स्वराज एकली ही भोत दुख पांवती, अबै स्वराज साथै आनद ।

मनै भोत मंको आयो, पण अबै बड्ड कठै । अब तांई म्हे बात करता, बा बद होगी, पण काम बद कयां होवै ।

पापा तो बात करै जद् घणकरी बात ही बांरी दर्शन री होवै । अबै तो

वैं चूकै ही क्यां। बोल्या—स्वराज सागै आनद रो मेळ हुवै, जद ही बो स्वराज हुवै, पण बो आनंद होवै क्यां जद् शासन चालै फेर समूचो सहयोग जरूरी है।

पापा भी काम में लागग्या, वैं दीया भेळा करण न एक साथै मेलै।

म्हूं कयो—थे जावणद्यो पापा। बां कयो—अरै, म्हूं म्हारी मां रै एकलो बेटो हो, म्हारी मां तो खाणो-पीणो बणांवती, म्हू दीया जगांवतो, म्हानै दीयां री बड़ी अटकळ है।

अबै म्हे तीनूं दीया जगावणै रै काम में लागग्या।

दीया झिलमिल-झिलमिल भीत ही सुहावणा लागै हा।

इत्तै नै पापा, ध्यान कर्यो, कई लैरला दीया बुझग्या हा।

पापा कयो—बेटा, लारला दीयां रो भी ध्यान राखो, ओ भोत जरूरी है। वै फेर दर्शन री बात ल्याया—नई विचारधारा आपरी थरपणा सारू पुराणी नै मारणी चावै, कवै, पुराणती मर्‌यां बिना म्हानै कुण पूछै, पण वै भूल ज्यावै है के थे पुराणा पड़स्यो जद् रोग थानै मार देसी। जकै दीयै में तेल है, बाती है, बो आपी तो कोनी बुझै, तेज बायरो बुझा सकै है, पण एक-दूसरै को बुझावण लागग्या फेर ओ रंग कया लागै जको अब लागर्‌यो है, आपणी सस्कृति नयै पुराणै रो ओपतो मेळ है, भारत जद् ही भारत है, लारली नै सावत राखांला—जद् ही आपां जीवतां रैस्यां। आ कहन वैं लारला दीया नै ओजूं जगाया।

अबै म्हे च्यारूं कूटा लगस सही करदी, फेर बी दरसाव मन भरन खूब देख्यो। च्यारूं कूंटा जको दीयां रो नजारो हो वो भोत ही सांतरो हो, हियै मे कोड गहरो उठै, टाबरां रा पटाका, फुलझड़ियां नैं इण रग नै और ही बढावो देवैं हा। विजय भइयै गुवाड़ में आपरै आसै-पासै रा टाबर भेळा कर राख्या हा, वो पटाका में लागर्‌यो हो। हर काम ऊमर सारू होवै है।

इत्तै में मां हेलो मार्‌यो—आओ जीमल्यो।

—म्हे तो अडीकै ही हा।

मा सगळो सामान लेयन चौक में आगी। पापा बोल्या—आज तो आपा पुराणै तरीकै स्यूं जीमस्यां।

पापा ही नीचै बैठन जीमता। कदे मेज पर बैठता तो कैवता—अरै

क्यूं फांसी पर लटकाओ हो ?

मां सगळा साल दरी बिछादी। मां सदा ही देसी चीज बणावती—सीरो, सब्जी, पटोळिया, रोटी।

पापा नै पटोळियां रो भोत कोढ हो। मनै सीरो आछो लागतो, भइयै नै भी सीरो आछो लागतो। पण पापा नै मां हरी सब्जी घणी खवावती।

म्हे कदे-कदे अया भेळा होयन जीम्या करां। आज राधा कोनी ही, बा आपरै घरे गई ही। सगळो काम मां न ही करणो पड़चो।

—सीरो किसोक बण्यो, मां पूछ्यो।

—तेरै हाथ री चीज कदे माड़ी बणी ही कोनी, पापा कयो।

मा फेर पूछ्यो—पटोलिया।

म्हूं कयो—पटोळिया तो भोत सुवाद है।

भइयै कयो—सब्जी आछी कोनी, मां।

—अरे, आ तेरै पापा री है।

—ओ घास-फूस मेरै खातर होवै है, भाई, पापा कयो।

पापा नै सब्जी ज्यादा खावणी पड़ती, वानै डाक्टर बताई ही वै पालक री सब्जी घणी खांवता।

आनंदजी भी साथ देवै हा, पण वै बोलता क

मां वा सारू कंवती भी—स्वराज ! कंवर र

तूं ब्यारा जिमा दिया कर।

मनैं तो मां बोळी बात समझाई—गाम मे बड़ता ही ज्यू घर नेड़ै आवै, तनैं रोवणो सरू करणो है, घरे जावता ही तनैं घर आळा थमावै जद् ही थमणो है, लुगायां थारै री आवै, जद् थैं दूर स्यूं कूकणो सरू करै जद् तेरी जिठणी रै साथै बैठ रोवणो है। बारा दिन तांई मूंडै रै आगै घूघटो राखणो है, आद, आद। घणकरो उपदेस रोवणै पर ही हो, मनैं रोवणै रा बोल भी बताया। अै सगळी बातां आनंदजी स्यूं न्यारी करन बताया, क्यूंके आनदजी रो दरद तो साचो दरद हो, बांरी मा मरी ही, जामणजायी मां, म्हारो नकली हो, क्यूंकै म्हूं तो बानैं देखी-देखी ही, देखणै स्यूं मोह कोनी बणै। रोवणो तो मोह रो है, फेर भी लुगाई जात और पार्ट करणै मे चूक सकै है, पण रोवणै रै काम मे बा मात कोनी खा सकै, इण काम मे इत्ती उस्ताद होवै है के बा नकली नैं असली बणा सकै है अर कोई माई रो लाल बीरी पीछाण कोनी कर सकै, मनैं ओ ही डर लागै हो के म्हू कठैइ मात नी खा ज्याऊ, म्हारी अब ताई री जिंदगी मे हंसी रो जोग घणो रयो है, पण म्हारो मोह आनदजी में हो, जद् आनंदजी दुखी है तो म्हानै सुख क्यांरो। आनंद जी मा सारू दुखी हा—अर म्हूं आनदजी रै दुख में दुखी ही, फेर मनैं नकली नैं असल में मिलाणै मे जोर कोनी आयो। आनंदजी रो तो ओ हाल हो के बांरो सफा मूंडो उतरग्यो, बारो रोवणो थम्यो ही कोनी। चेहरो ही और तरियां होग्यो, पीछाण मे ही कोनी आवै।

जीप नै पूंचणै मे काई देर लागै ही। म्हू सगळा काम मां ज्यूं बताया कर लिया, कठैई चूक कोनी हुई। मा कयो हो—बेटा, छोटो गांव है, बठै छोटी-छोटी बातां पहाड़ बण ज्यावै। लोग बीया ही बातां बणावै हा, फेर आपणी कठैई चूक होगी, लोग बठैरा तरै सासरै आळा नैं बोल मारता रवैला, आपणै खातर वै बोल क्यू सुणै।

मासरो ब्याव में तो फेर ही लीप्यो ढोळ्यो हो पण अबार तो भोत ही भूंडो लागै हो, फेर मौत तो भोत माड़ी होवै। दुनिया में सगळां ही माड़ी चीज ही मौत होवै। सारो घर खावण नैं आंवतो। म्हारी जिठाणी बतायो—'बारां तो बोलतां बोलतां प्राण निकळग्या। दो दिन बुखार चढ़ी ही। बानैं दिखाणै रो विचार करयो हो, बीनैं बींस्यू पैली ही बै तो चल्या गया। ऊमर भी तो कांई ही, साठ बरस। मन री बात ही कोनी कर सक्या।'

क्यूं फांसी पर लटकाओ हो ?

मां सगळा मारू दरी बिछादी। मां सदा ही देसी चीज बणावती—सीरो, सब्जी, पटोळिया, रोटी।

पापा नै पटोळिया रो भोत कोड हो। मनै सीरो आछो लागतो, भइयै नै भी सीरो आछो लागतो। पण पापा नै मां हरी सब्जी घणी खवांवती।

म्हे कदे-कदे अयां भेळा होयन जीम्या करां। आज राधा कोनी ही, बा आपरै घरे गई ही। सगळो काम मां न ही करणो पड़्यो।

—सीरो किसोक बण्यो, मां पूछ्यो।

—तेरै हाथ री चीज कदे माड़ी बणी ही कोनी, पापा कयो।

मा फेर पूछ्यो—पटोलिया।

म्हूं कयो—पटोळिया तो भोत सुवाद है।

भइयै कयो—सब्जी आछी कोनी, मा।

—अरै, आ तैरै पापा री है।

—ओ घास-फूस मेरै खातर होवै है, भाई, पापा कयो।

पापा नै सब्जी ज्यादा खावणी पड़ती, वानै डाक्टर बताई ही बै पालक री सब्जी घणी खावता।

आनंदजी भी साथ देवै हा, पण बै बोलता कोनी, बै भोत संकाळु हा।

मा वां सारू कैवती भी—स्वराज ! कंवर साहब, संको भोत करै, वानै तूं न्यारा जिमा दिया कर।

—सको तो करता ही होसी, पण थारो सुभाव ही है !

—की पीसा वापरण द्यो, म्हूं थारो मकान ही न्यारो बणा देस्यूं।

दूजो दिन रामरमी रो हो, शहर रा भोत लोग पापा स्यूं मिलण सारू आया। दिन छिपै रे आसै-पासै पापा आपरै लोगां स्यूं मिलण चल्या गया।

पण दूजै दिन एक तार स्यूं म्हारै झटको लागग्यो। म्हारी सासू चालती रयी। म्हूं तो रोयी कोनी, म्हानै बेरो ही कोनी हो, पण आनंदजी भोत रोया, वानै थमाणै में म्हूं रोवणो भूलगी। म्हानै रोवणो जद् आगो जद् मां कयो—तनै साथै जावणो पड़सी।

म्हारै मारू जीप त्यार होगी। मां आनंदजी नै दो हजार रिपिया ल्यान दिया, जे कोई काम पड ज्यावै।

मनै तो मां बोळी बात समझाई—गाम मे वड़तां ही ज्यू घर नेड़ै आवै, तनै रोवणो सरू करणो है, घरे जांवता ही तनै घर आळा थमावै जद ही थमणो है, लुगायां थारे री आवै, जद वै दूर स्यूं फूकणो सरू करै जद तेरी जिठणी रै साथै बैठ रोवणो है। बारा दिन तांई मूडै रै आगै घूघटो राखणो है, आद, आद। घणकरो उपदेस रोवणै पर ही हो, मनै रोवणै रा बोल भी बताया। अै सगळी बातां आनदजी स्यू न्यारी करन बताया, क्यूकै आनदजी रो दरद तो साचो दरद हो, बांरी मा मरी ही, जामणजायी मा, म्हारो नकली हो, क्यूकै म्हूं तो बानै देखी-देखी ही, देखणै स्यूं मोह कोनी बणै। रोवणो तो मोह रो है, फेर भी लुगाई जात और पार्ट करणै मे चूक सकै है, पण रोवणै रै काम मे या मात कोनी खा सकै, इण काम मे इत्ती उस्ताद होवै है कै बा नकली नै असली बणा सकै है अर कोई माई रो लाल बीरी पीछाण कोनी कर सकै, मनै ओ ही डर लागै हो कै म्हूं कठैइ मात नी खा ज्याऊ, म्हारी अब ताई री जिंदगी मे हसी रो जोग घणो रयो है, पण म्हारो मोह आनदजी में हो, जद आनदजी दुखी है तो म्हानै सुख क्यांरो। आनंद जी मा मारू दुखी हा—अर म्हूं आनदजी रै दुख में दुखी ही, फेर मनै नकली नै असल मे मिलाणै में जोर कोनी आयो। आनंदजी रो तो ओ हाल हो कै बांरो सफा मूडो उतरग्यो, बारो रोवणो थम्यो ही कोनी। चेहरो ही और तरिया होग्यो, पीछाण में ही कोनी आवै।

जीप नै पूगणै मे कांई देर लागै ही। म्हूं सगळा काम मां ज्यू बताया कर लिया, कठैई चूक कोनी हुई। मा कयो हो—बेटा, छोटो गांव है, बठै छोटी-छोटी बातां पहाड बण ज्यावै। लोग बीया ही बाता बणावै हा, फेर आपणी कठैई चूक होगी, लोग बठैरा तरै सासरै आळा नै बोल मारता रवैला, आपणै खातर वै बोल क्यू सुणै।

मामरो ब्याव में तो फेर ही लीप्यो ढोळ्यो हो पण अबार तो भोत ही मूंडो लागै हो, फेर मौत तो भोत माड़ी होवै। दुनिया मे सगळां ही माड़ी चीज ही मौत होवै। सारो घर खावण नै आंवतो। म्हारी जिठाणी बतायो—'बारां तो बोलतां बोलतां प्राण निकळग्या। दो दिन बुखार चढ़ी ही। बानै दिवाणै रो विचार करयो हो, बीनै बोस्यू पैली ही वै तो चल्या गया। ऊमर भी तो कांई ही, साठ बरस। मन री बात ही कोनी कर सक्या।'

स्वामीजी सारू मुख्य मंत्री री कोठी रै आगै एक तम्बू तणग्यो। आछा पथरणा बिछाया, तकिया लागग्या, स्वामी जी बठै जम'र बैठग्या। अखबारां मे स्वामी जी री फोटू छपी, भूख हड़ताल रो कारण छप्यो। मुख्य मंत्री पर क्षेत्रवाद रो लाछण लाग्यो। स्वामी जी कयो—म्हारो ओ आमरण अनशन है, कॉलिज खुलसी जद् ही अनशन टूटसी।

दूजै दिन फेर खबर छपी जकै मे मुख्य मंत्री आपरो वक्तव्य दियो। मुख्य मंत्री आपरै हलकै मे कॉलेज खुलणै रो कारण बतायो, स्वामी जी री बात नै काटी। मुख्य मंत्री स्वामी जी पर हठधरमी रो लाछन लगायो।

तीजै दिन फेर खबर छपी—स्वामी जी आपरी कॉलिज री माग रो कारण बतायो, मुख्य मंत्री पर घणा लाछण लगाया, वा अठै तक कहदी रै इसो मुख्य मंत्री राज रै लायक कोनी, जको आपरै ही हलकै मे घणकरो पीसो खपावै, मुख्य मंत्री आखै राज रो मुख्य मंत्री होवै है, एक हलकै रो नी।

कई अखबारा में स्वामी जी नै एक सूठो समाज-सेवी बतायो, बारी पूरी ओळखाण छापी, वारा फोटू छाप्या। इनै स्वामी जी रो नाम चिमकण लाग्यो तो बीनै बारी हालत पतळी पडन लागी। वै नीबू रै रस नैं छोडन की कोनी लेवै। बांरो भार घटण लागग्यो। स्वामी जी पर एक डाकधर री ड्यूटी लागगी, वो हरदम स्वामी जी कनै रहवै। पुलिस तो तैनात ही। पत्रकारा री भीड़ लागी रहवै।

चौथै दिन मुख्य मंत्री जी पापा कनै आया। वां पापा पर लाछण लगायो के थे म्हानै बदनाम करणै सारू ओ काम करायो है। पापा अर मुख्य मंत्री तू तू-मैं मैं भी हुई। फेर मुख्य मंत्री जी स्वामी जी कनै भी गया।

जकै दिन अखवार इण हड़ताल न लेयन रग्या पड्या हा। हर आदमी रा दोस्त अर दुसमण तो होवै ही, फेर जित्तो मोटो आदमी होवै बीरा बित्ता ही मोटा दुसमण। मुख्य मंत्री रा जठै दोस्त तकडा हा तो दुसमण भी सैंठा हा। अबै मुख्य मंत्री री बदनामी रा चोखा बहाना दुसमणां नै मिलण [illegible] ो एक भ्रष्टाचारी आदमी है, अण लाखूं रिपिया रो [illegible] ी आदमी है। अण दूजै इलाकां री कीमत [illegible] अर करण लागरयो है। ओ आपरै क्षेत्र

म्हू मन मे करी—अठै ढंग रो डाकघर नी, वैद नी, इयां ही गोळी गुटका देंवता फिरै, वानै वेरो काई ?

—वठै ले आंवता तो ठीक रैवतो, म्हू कयो।

—म्हानै कांई पतो हो, आ होवैली, आ तो सोची कोनी ही, बुखार तो घणी वार चढ ज्यांवती।

—कोई बीमारी ही इसी ही जकै रो थानै वेरो ही कोनी लाग्यो।

—वीया तो अै माड़ा होवण लागग्या हा, म्हे जाण्यो, बुढ़ापो है। रोटी भी कोनी भांवती, डील मे करण-करण होवती ही रैवती।

—खैर, वानै जावणो हो, चल्या गया, आपणो इत्तो ही संस्कार हो।

मोकाण आळा दिन में आंवता, मोकाण आळा नै चाय प्यावणी पड़ती, वारै आळा नै रोटी भी खुवावणती पड़ती, जद् लुगाया मोकाण सारू आवती, म्हानै रोवणो पडतो। रोवणै मे म्हू अर जेठाणी, पडौस री म्हारै ही भाया में म्हारी एक द्योराणी अर सासू ही, जकी भाजन आंवती। चाय करणै रो ड्यूटी मानै सभाळणी पड़ी। रोटी जिठाणी बणावती।

म्हारै घरे डागरा री पूरी रुणक ही। एक भैंस दूध देवै ही, दो पाडचां ही, एक पाडी पाच मीना पाछै ब्यावण आळी ही। एक पाडकी छोटी ही। एक गाय जकी पाव, आधसेर दूध देंवती। वा चाटै पर दूध देंवती। एक बच्छो हो, एक टोगड़ती ही। म्हू कयो—ओ काई, थारै तो आ डांगरा रो भोत खरचो है।

जिठाणी कयो—ओ कजियो तो है, पण जमीदार रै डांगर धन है। आपणी भैंस अबार पाच हजार री है। रोज रो सौळा किला दूध है। धाप'र टावर दूध पी लेवै. घी खा लेवै, चाय पी लेवै। ओ घीणो है जीसयू इत्ता बटाउ आपा पौसावा हां, पतो ही कोनी लागै।

वात साची ही, चाय रो पतीलो तो चढ्यो ही रैवतो, दूध आळै नै दूध, चाय आळै नै चाय। सगळा नै आ भैंस ही धपा देंवती।

जिठाणी जद् दूध काडती, म्हूं सारो देवण लागगी। म्हू पाडकी नै पकड़ लेंवती, खूटै रै बाध देंवती। जिठाणी दूध काड लेवती। जिठाणी दूध दूवता ही, आपरी चाय वणांवती, कड़ी वरगी चाय, मनै एक कप देंवती। वी चाय ... ो हो ्यांवतो।

ज्यूं-ज्यूं म्हूं जिठाणी रै नेड़ै गई, जिठाणी रो हिवड़ै रै रूप सामैं आवण लागग्यो। बींरो काळजो काच जेड़ो साफ सुथरो, कठै ही काळस कोनी। बा तो आ ही कैवती—थारो डील भोत अमीर है, म्हागे तो की कोनी बीगड़ै, ये काम मत करो पण मनैं तो काम में जी लागण लागग्यो।

जिठाणी दिनउगे स्यूं पैली ही उठती, बठै तो कोई घड़ी कोनी ही, म्हूं घड़ी जरूर राखती, पण अठै तो टेम ही रोळदट्ट होग्यो जिठाणी रो टेम हो—एक तारो उठ्या करतो अगूण नै, सगळा ऊं मोटो, बो तारो उगता बीनै जिठाणी मोटो झांझरको कैवती। डांगरां नै नीरणो, चाकी पीसणी, बिलोवणो करणो। भोत धधा हा, पण म्हूं भी सूरज उगणै स्यूं पैली उठ ज्यावती, म्हारो काम तो उठता ही चाय वणावणो हो।

आनंद जी अर जेठजी—वारै ही सोवता। दिन में वेल ही कोनी मिलती। रात नै जिठाणी बाता आवती—म्हारी सासू आछी भोत ही, कदे ही वण आपरै नाड़ियै रै चाबी कोनी राखी। सोवयू म्हारै साह खुली पड्यो रैवतो। कदे ही बां मनै तूकारो कोनी दियो। होठ री भी चोट कोनी मारी, फटकारो कोनी दियो। कैवती—बेटी म्हारो काई है, सोवयू थारो ही है। वै कदे ही माचौ पर कोनी सोया। कमजोर हा, पण काम करता ही रैवता। डील मे घोवा चालता ही रैवता, पण कदे ही सारो कोनी लैवता।

एक दिन आनद जी नै पढ़ाणै री बात चाली—म्हारै सुसरै जी री बडी नियत ही रे घर मे एक तो पढ़ै। सगळी ही पढाई बांरै हुई पण सदां ही फस्ट-फस्ट आया। खरचो तो लाग्यो पण खरचै रो हक आग्यो, नी तो थारो अर म्हारो काई मेळ। थानै काई बताऊं थारी ब्याव होया पछै म्हारी इत्ती इज्जत वदी है रे पूछो मत, आसै-पासै रा मोटा-मोटा मिनख म्हारै अठै धोक देवै है, ओ पढ़ाई रो ही पुन परताप है। म्हूं देवर नै कऊं—अरे देवर, तू म्हानै भी कोठी दिखा, म्हू तो सहर ही कोनी देख्यो, मेगे जी मोटर मे चढ़णै सारू करैं, जिठाणी हंसन बोली।

—अबार म्हारै साथै चालियो, म्हूं बोली।

—कठै वेल है, जिठाणी कह्यो, भैंस धुहारकी है, म्हूं भैंस रै कारणै पीर कोनी जा सकूं, म्हारो बाबो बीमार है, रोज समचार आवै पण भैंस मेरै टाळ दूध कोनै देवै कोनी, जिठाणी रै दो टाबर हा—एक छोरो अर एक

म्हूं मन में करी—अठै ढंग रो डाकधर नो, वैद नी, इयां ही गोळी गुटका देवता फिरै, वानै वेरो कांई ?

—वठै लै आंवता तो ठीक रैवतो, म्हूं कयो।

—म्हानै कांई पतो हो, आ होवैली, आ तो सोची कोनी ही, बुखार तो घणी बार चढ ज्यांवतो।

—कोई बीमारी ही इसी ही जकै रो थानै बेरो ही कोनी लाग्यो।

—बीयां तो अै माड़ा होवण लागग्या हा, म्हे जाण्यो, बुडापो है। रोटी भी कोनी भावती, डील मे करण-करण होंवती ही रैवती।

—खैर, वानै जावणो हो, चल्या गया, आपणो इत्तो ही सैसकार हो।

मोकाण आळा दिन मे आवता, मोकाण आळा नै चाय प्यावणी पड़ती, बारै आळा नै रोटी भी खुवावणती पड़ती, जद लुगायां मोकाण सारू आंवती, म्हानै रोवणो पड़तो। रोवणे में म्हूं अर जेठाणी, पडौस री म्हारै ही भायां मे म्हारी एक दयोराणी अर सासू ही, जको भाजन आंवती। चाय करणै री ड्यूटी मानै सभाळणी पड़ी। रोटी जिठाणी बणावती।

म्हारै घरे डांगरा री पूरी रुणक ही। एक भैंस दूध देवै ही, दो पाडचा ही, एक पाडी पाच मीना पाछै ब्यावण आळी ही। एक पाडकी छोटी ही। एक गाय जकी पाव, आधसेर दूध देंवती। बा काटै पर दूध देंवती। एक बच्छो हो, एक टोगड़ती ही। म्हू कयो—ओ कांई, थारै तो आ डागरा को भोत खरचो है।

जिठाणी कयो—ओ कजियो तो है, पण जमीदार रै डांगर धन है। आपणी भैंस अबार पाच हजार री है। रोज रो सौळा किला दूध है। धाप'र टावर दूध पी लेवै. घी खा लेवै, चाय पी लेवै। ओ पीणो है जीस्यूं इता बटाउ आपा पोसावा हां, पतो ही कोनी लागै।

वात साची ही, चाय रो पतीलो तो चड्यो ही रैवतो, दूध आळै नै दूध, चाय आळै नै चाय। सगळा नै आ भैंस ही धपा देंवती।

जिठाणी जद दूध काडती, म्हूं सारो देखण लागगी। म्हू पाडकी नै पकड लेवती, खूंटै रै बांध देंवती। जिठाणी दूध काड लेंवती। जिठाणी दूध दूवता ही, आपरी चाय बणावती, कड्डी बरगी चाय, मनै एक कप देवती। वी चाय स्यू जीसोरो हो ज्यावतो।

ज्यूं-ज्यूं म्हूं जिठाणी रै नेड़ै गई, जिठाणी रो हियड़ै रै रूप साम्है आवण लागग्यो। धोरो काळजो काच जेड़ो साफ सुथरो, कठै ही काळस कोनी। बा तो आ ही कैवती—थारो डील भोत अमीर है, म्हारो तो की कोनी बीगड़ै, थे काम मत करो पण मनै तो काम में जी लागण लागग्यो।

जिठाणी दिनउगे स्यूं पैली ही उठती, बठै तो कोई घड़ी कोनी ही, म्हूं घड़ी जरूर राखती, पण अठै तो टेम ही रोळदट्ट होग्यो जिठाणी रो टेम हो—एक तारो उठ्या करतो अगूण नै, सगळा ऊ मोटो, वो तारो उगतां बीनै जिठाणी मोटो झाझरको कैवती। डागरा नै नीरणो, चाकी पीसणो, बिलौवणो करणो। भोत धधा हा, पण म्हूं भी सूरज उगणै स्यूं पैली उठ ज्यावती, म्हारो काम तो उठता ही चाय बणावणो हो।

आनंद जी अर जेठजी—वारै ही सोवता। दिन मे वेन ही कोनी मिलती। रात नै जिठाणी बाता आवती—म्हारी सासू आछी भोत ही, कदे ही पण आपरै नाडियै रै चाबी कोनी राखी। सौक्यू म्हारै सारू खुलो पड्यो रैवतो। कदे ही बा मनै तूंकारो कोनी दियो। होठ री भी चोट कोनी मारी, फटकारो कोनी दियो। कैवती—बेटी म्हारो काई है, सौक्यू थारो ही है। बै कदे ही माची पर कोनी सोया। कमजोर हा, पण काम करता ही रैवता। डील में घोवा चालता ही रैवता, पण कदे ही सारो कोनी लैवता।

एक दिन आनंद जी नै पढ़ाणै री बात चाली—म्हारै सुसरै जी री बड़ी नियत ही रे घर मे एक तो पढ़ै। सगळी ही पढाई वारै हुई पण सदा ही फस्ट-फस्ट आया। खरचो तो लाग्यो पण खरचै रो हुक आग्यो, नी तो थारो अर म्हारो कांई मेळ। थानै कांई बताऊ थारो ब्याव होयां पछै म्हारी इत्ती इज्जत बदी है रे पूछो मत, आसै-पासै रा मोटा-मोटा मिनख म्हारै अठै धोक देवै है, ओ पढ़ाई रो ही पुन परताप है। म्हूं देवर नै कऊं—अरै देवर, तू म्हानै भी कोठी दिखा, म्हू तो सहर ही कोनी देख्यो, मेरो जी मोटर मे चढ़णै सारू करै, जिठाणी हूंसन बोली।

—अबार म्हारै साथै चालियो, म्हूं बोली।

—कठै वेल है, जिठाणी कह्यो, भैस घुहारकी है, म्हू भैस रै कारणै पीर कोनी जा सकू, म्हारो बाबो बीमार है, रोज समचार आवै पण भैस मेरे टाळ दूध कीनै देवै कोनी, जिठाणी रै दो टाबर हा—एक छोरो अर एक

आगो जी मानलो।

मा बोली—बेटा, म्हारा तो ऐ भाग रा दिन देखणा है, स्वराज स्यू काई छानो हो, टाबर तो हो, पण भूरो चोखो ही, ऐ दिन तो भगवान् कोनै ही न देवै, फेर अठै आपणै मिनखा रो जाट है, म्हूं कोठी में जरूर रऊं हूं, पण बठै आपणा कुण है, ऐ तो लोग आपणा आवै जावै है, जो साग ल्यावै, कदे-कदे कोई गी होवै तो उजाड़ गो लागै, जी लागै ही कोनी।

मा अर जिठाणी घणी देर बात करी। जिठाणी अर मा दोनां रो ही जी सोरो होग्यो।

मा नै जाणो ही हो, मा चली गई। म्हूं अर आनन्दजी दो दिना पाछै गया।

16

म्हू कोठी मे गई जाणै एक जुग बीतग्यो हो। दिन तो पूरा बारा-तेरा ही बारै रही, पण लाग्या जाणै बारा मीना पाछै आई। पापा अबार दोरै स्यू पूटा आया ही हा, सरकारी गाड़ी बारै खड़ी ही। म्हूं जाय'र मा रै पगा लागी, मा म्हानै पैली मिली, फेर पापा कनै गई, पगां लागी, पण पापा कनै दो आदमी बैठया हा, जका मे एक स्वामी जी हा, पापा खाणो खावण लागर्या हा। म्हू पगा लागी, पापा सिर पर हाथ फेर्यो। फेर म्हूं स्वामीजी रै पगा लागी, स्वामीजी भी सिर पर हाथ फेर्यो। पापा स्यूं पैली ही स्वामी जी बोल्या—'विरमानन्द, तू स्वराज रो ब्याव कर्यो, म्हानै कोनी बुलायो।

पापा बोल्या—म्हूं खुद ही कोनी हो, बुलावतो किनैं। आपणै अठै काळ पड़्यो हो, कलकत्ते गयो हो पीसा ल्यावण नैं।

स्वामी जी बोल्या—भोत आछो काम कर्यो, म्हूं अखबारां मे पढ़ी ही, [illegible] ब्याव होयो, भोत आछो होयो, जनता जे एहड़ो अनुकरण करै तो

लोग न्याल हो ज्यावै, पण आजादी रै बाद आदर्श जाणै मरणासन होग्यो है, लोग दिखावै पर घणा उतरया है, पण कारण भी साफ है। गलत कमाई गलत खरचो।

पापा की कोनी बोल्या, चुळू करण लागर्या हा। स्वामी जी कयो—पढ़ाई-लिखाई भी बदी है, पण ज्यू-ज्यू लोग पढ़ै है, सुरळी भंग होयां बगै है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वत बढ़ती जारी है।

पापा बैठ्या हा, थोड़ा आडा होग्या, फेर वांरो की दिमाग जम्यो। बोल्या—स्वामी जी, कया याधारणो होयो, अबार तो थे बोळा मोडा दरसण दियो।

स्वामीजी कयो—म्हू तनै कागज लिख्यो हो, बा ही बात। म्हारै कॉलिज होवणो चाहिजै।

—बात करी ही, और बात करस्यां। पण थारै साथै ओ मोटयार कुण है?

—*हां, आ सुणो, स्वामीजी बोल्या, ओ है थाणैदार, मोत्तल होयोडो।* आंरी कहाणी सुणो, बेहद अजीब, आज रै जमानै री जीवती जागती तसवीर। ओ थाणैदार—बेहद ईमानदार। न खावै, न खावण दे। नतीजो कांई—अफसर नाराज, नीचै रा अहलकार नाराज। आंरै ईलाकै मे अमल री एक सैंठो व्यापारी। जीप स्यू अमल भेजै। अण भाई, बीनै पकड़ लियो—ढाई मण अमल। बो व्यापारी बोल्यो—दस-बीस हजार लेल्यो, म्हानै छोडो, अण छोड़्यो कोनी। जीप थाणै मे चली गई, नीचै रा अहलकार रपट बणाई बीरै बोझ ढ़ाई मण री जगा तीन मण अमल लिख दियो। जाण-बूझ'र एहडी रपट बणाई के ओ भाई फसग्यो, ऊपर आळा अफसर नाराज हा ही, ईं भाई नै सस्पैंड कर दियो। अण भाई मेरो नाम सुण्यो, म्हूं ईनै तेरै कनै ल्यायो हूं, ईनै संकट स्यूं बचाणो है, जे ईमानदारी अयां मरसी तो फेर ईमानदार रैसी कठै।

पापा फेर भी इत्ती बात करी—देखस्यां, म्हूं आई० जी० पी० स्यू बात करस्यूं। पापा नै स्वामीजी री बात पर कोई टिप्पणी कोनी करी, देस में ईमानदारी री बेकदरी पर अफसोस कोनी जतायो, ईमानदारी री सजा पर बांरै काळजै में दरद कोनी उठ्यो, रीस कोनी आई।

पापा फेर बो मोटयार कानी देख्यो, फेर बोल्या—भाई, कानून आंधो है, ईंरै आख कोनी, जदै ईंरै आख होसी, जकै दिन अन्याय मिट ज्यासी, पण न तो कानून रै आख होवै, न अन्याय मिटै। कानून री निगा मे तू तीन मण अमल पकड़चो, आधो मण अमल अण उडवायो, अबै ओ बचै कया, ओ ईमानदार है, ईंरो कोई सबूत कोनी, ओ बेईमान है, ईंरो सबूत है। जद् तनै बेरो हो के लोग म्हारै लैरै लागर्‌या है, तनै सावळचेत रैंवणो चाहिजै हो, सावळचेत न रैंवणं री सजा भुगतणी पडसी।

फेर पापा स्वामीकानी मुड़्या—स्वामी जी, आज देस में ईमानदारी अर बेईमानी री लड़ाई कोनी। राज बेईमान है, आ बात म्हे कया करता, अबै लोग म्हानै बेईमान बतावै। फेर ओ कोई सरकार आ ज्यावो, म्हे फेर बानै बेईमानी म्हे बतावण लागस्या। इण बात न लेयन चाला तो राज एक दिन कोनी चालै। एक साफ सुथरो राज तो 'यूटोपिया' है, पण ओ 'यूटोपिया' भी जीवतो रैंवणो चाहिजै, नी तो आदमी आगै कोनी बदै। म्हे लोग भी आछै राज री कल्पना लेयन आगै चालां, जनता सुखी रवै, आखै जगत रो कल्याण हो, आ भावना लेयन चालां, पण इण सारू भी कई खोटा काम करणा पड़ै। आप ऊपर आयन देखो तो आ बेईमानी, ईमानदारी टाबरा आळी सी बात लागै, अठै तो शुद्ध 'पावर' री लड़ाई है। राज कीरै हाथ मे रवै, आ लड़ाई है। म्हारा शर्मा जी यानी मुख्य मंत्री जी आजकाल म्हारै साथै जूझणै री चेप्टा मे है। बानै मोटी कुरसी म्हूं दिरायी, आप जाणो हो, पण वो आ सोचै, आज इण मसीन रै जुग मे जद् गाडी बिना बळद, ऊंट चाल सकै तो फेर राज चलाणै मे की दूजै मिनख रो सारो क्यूं। बो म्हारै मिनखां नै काटण लागग्यो, आप कानो लेवण लागग्यो, बो एक ही बात कवै है—ईं विरमानन्द कनै काई पड्यो है, ओ तो अडवो है, न तो खावै न खावण दे, राज भी करो अर भूख मरो, आ कुणसी थ्योरी है। चकाचक उडावणी है तो म्हारै साथै आओ, लोग तो छायां में माचो ढाळै, म्हारै कानी क्यूं रवै, म्हूं थारै कॉलेज सारू बात करी, मूंडै ऊं बोल्यो कोनी, बीरी नियत ही कोनी कॉलेज खोलणै री, आप तो एक ही काम करो—बीरी कोठी रै आगै भूख हड़ताल करन बैठ ज्याओ, फेर म्हे जाणा अर म्हे जाणा।

स्वामीजी मुख्य मंत्री रै कोठी रै आगै भूख हड़ताल पर बैठग्या।

स्वामीजी सारू मुख्य मंत्री री कोठी रै आगै एक तम्बू तणग्यो। आछा पथरणा बिछग्या, तकिया लागग्या, स्वामी जी बठै जम'र बैठग्या। अखबारां में स्वामी जी री फोटू छपी, भूख हड़ताल रो कारण छप्यो। मुख्य मंत्री पर क्षेत्रवाद रो लाछण लाग्यो। स्वामी जी कयो—म्हारो ओ आमरण अनशन है, कॉलेज खुलसी जद हीं अनशन टूटसी।

दूजै दिन फेर खबर छपी जकै मे मुख्य मंत्री आपरो वक्तव्य दियो। मुख्य मंत्री आपरै हलकै मे कॉलेज खुलणै रो कारण बतायो, स्वामी जी री बात नै काटी। मुख्य मंत्री स्वामी जी पर हटधरमी रो लाछन लगायो।

तीजै दिन फेर खबर छपी—स्वामी जी आपरी कॉलेज री मांग रो कारण बतायो, मुख्य मंत्री पर घणा लाछण लगाया, बा अठै तक कहदी रै इसो मुख्य मंत्री राज रै लायक कोनी, जको आपरै ही हलकै मे घणकरो पीसो खपावै, मुख्य मंत्री आखै राज रो मुख्य मंत्री होवै है, एक हलकै रो नी।

कई अखबारा में स्वामी जी नै एक लूठो समाज-सेवी बतायो, बारी पूरी ओळखाण छापी, बांरा फोटू छाप्या। इनै स्वामी जी रो नाम चिमकण लाग्यो तो बीनै बारी हालत पतळी पड़न लागी। वै नीबू रै रस नै छोडन की कोनी लेवै। बांरो भार घटण लागग्यो। स्वामी जी पर एक डाकधर री ड्यूटी लागगी, बो हरदम स्वामी जी कनै रहवै। पुलिस तो तैनात ही। पत्रकारा री भीड़ लागी रहवै।

चौथै दिन मुख्य मंत्री जी पापा कनै आया। बा पापा पर लांछण लगायो के थे म्हानै बदनाम करणै सारू ओ काम करायो है। पापा अर मुख्य मंत्री तू तूं-मैं मैं भी हुई। फेर मुख्य मंत्री जी स्वामी जी कनै भी गया।

जकै दिन अखबार इण हड़ताल न लेयन रंग्या पड़्या हा। हर आदमी रा दोस्त अर दुसमण तो होवै ही, फेर जित्तो मोटो आदमी होवै बीरा बित्ता ही मोटा दुसमण। मुख्य मंत्री रा जठै दोस्त तकड़ा हा तो दुसमण भी सैठा हा। अबै मुख्य मंत्री री बदनामी रा चोखा बहाना दुसमणा नै मिलण लागग्या—मुख्य मंत्री एक भ्रष्टाचारी आदमी है, अण लाखूं रिपिया रो धन हड़प कर लियो, ओ क्षेत्रवादी आदमी है। अण दूजै इलाका री कीमत माथै आपरै क्षेत्र रो निरमाण करयो अर करण लागरयो है। ओ आपरै क्षेत्र

रा आदमियां नै ऊंचै होदै पर चढावै, वानै आछी जगा देवै, दूजै इलाकै रै मिनखा री बेकदरी होरी है।

औ अखबार जका मुख्य मंत्री रा हिमायती हा वै पापा पर लांछण लगाणो सरू कर दियो के ओ मुख्य मंत्री रो पद लेवणो चावै है, स्वामी जी नै हथियार बणायो है, मुख्य मंत्री पर झूठा लांछण लगावण लागरयो है, ओ खुद जातिवादी आदमी है, आपरी जाति अर हलकै सारू काम करणो चावै है। अण ही लैरलै मुख्य मंत्री नै टिपायो, अबै ओ ईरै लारै लागरयो है।

स्वामी जी री हालत और पतळी पड़ण लागगी, वांरो दिल कमजोर पड़ण लागग्यो— रगत-चाप कम होग्यो; बोली भी ढीली पड़गी।

मुख्य-मंत्री जी स्वामी स्यूं मिल्या, बात हुयी। मुख्य मंत्री जी आस्वासन दियो के इणसाळ आप जिद छोड़द्यो, आगली साळ म्हूं आपरो कालिज खोल देस्यूं। स्वामी जी कयो—म्हू म्हारी जिन्दगी टाबरां री पढ़ाई सारू होम कर राखी है, ओ डील इण सारू चल्यो ज्यासी—तो म्हू म्हारो सौभाग समझस्यूं म्हानै इंरां पीसा तो कोनी बांटणा। म्हू म्हारी बात कोनी छोड़ूं।

ऐ दोनूं बातां अखबारां में छपी। पापा स्वामी जी नै तीनूं वकत संभालै, मा भी जावै, म्हूं भी जाऊ। स्वामी जी ऐन कमजोर पड़ग्या, बूढो शरीर हो, नाज मिल्यो कोनी, फेर पाणी स्यूं कीसो शरीर चालै। मुख्य मंत्री आपरी जिद पर टिक्योड़ा, स्वामी जी आप री जिद पर।

राजनीति बडी अजीब चीज है। अठै झूठ-साच कोई माइनो कोनी राखै। आ राजनीतिज्ञां री कहेड़ी सगळी बातां भेळी करर अर तोला तो सौ मऊ नब्बै बात आंरी झूठ निकळसी अर पांच-च्यार बात साची। स्वामी जी रो दसवो दिन हो अर आ जचरी ही के स्वामी जी दो-चार दिन मसा काडैला। मुख्य मंत्री जका साफ-साफ कहदी ही के स्वामी जी री बात जायज कोनी, सरकार की कीमत पर आंरी बात नी मानैली, बा ही मुख्य मंत्री ग्यारहवै दिन स्वामी जी री बात मंजूर करली। अर वानै आपरै हाथ स्यूं सतरै री रस प्यायो। म्हूं जकै दिन स्यूं ओ अंदाजो लगायो के जद् सरकार जोर स्यूं दहाड़ै जद् समझ लेवणो चाहिजै के आ बीती ही कमजोर है।

पापा भी हसन कयो—बेटा, जनतंत्र मे सरकार री मूंछो थेर रो है तो

ईंरी पीठ भी शेर री सो है। फेर म्हारली सरकार तो शेर री खाल ओढ़ राखी है, सांपस्यूं तो आ भेद है। मनै तो अचमो आवै है रे अण दस दिन कया काट दिया।

स्वामी जी री भूख-हड़ताल टूटगी, वै म्हारै घरे आयग्या, पांच दिनां रै खावणै पीवणै स्यूं सारो डील ठीक होयग्यो। कॉलेज री मजूरी लेयन वै तो विदा होग्या, पण पापा अर मुख्य मंत्री में घणी ठणगी।

17

पापा उदास रैवण लागग्या, वानै रीस भी आवण लागगी। लोगां रो तांतो बीयां ही बंध्यो रयो, भीड़ कोनी टूटी, दस आवै दस जावै। कीरो तबादलो करावणो तो कीनै नौकरी लगावणी, कीरै फौजदारी होगी तो कीरै दीवानी होगी। मां रो असर भी दिन-दिन बधतो जावै। लोग मां नै माताजी कैवण लागग्या। फोन आवै—माताजी, है कांई? मां फोन करै—'म्हूं माताजी बोलू हूं।'

अफसर लोग मां नै माताजी रै नाम स्यूं ही जाणै। एकर तो पापा फोन करयो तो मां बोली—'म्हूं माताजी बोलू हू।' पापा कयो—'तू म्हारी ही माताजी बणगी।' पापा तो हंस्या, मां नै सरम आई। पापा घरे भी कैवता :'तू जगत-माता होगी।' पण मां तो मां ही, कोई आंवतो, आपरी दुख गाथा सुणावतो, मा रो हियो दया स्यूं पिघळ ज्यांवतो। बात एक ही ही, अठै कोई सुखी कोनी आवतो, इयां लागै ही जाणै आखी धरती दुख-दरद स्यूं भरी पड़ी है। मां बीरी पूरी कथा सुणती, फेर एक ही बात कैवती —'म्हानै तो तू था वता, कीनै कैवणो है, काई कैवणो है।' मां बीरो कस्ट दूर करणै सारू पूरी चेस्टा करती। मां जाणती—फोन रा पीसा लागै है, पण मा जित्ती वार भी फोन करणो होंवतो, मा करती। वो दस दिन ठैरतो तो ठैरतो मा कदेई नाक सळ कोनी घालती। वा जाणती—रोटी रा पीसा

लागै है। हर आदमी सारू सोवण नै जगां होवती, ओढ़ण नै बिस्तर होंवता, कई आदमी तो इता धरू होग्या हा, वानै गाडी ठेसण पूचावण जांवती। मां एक ही बात कैवती—'परमात्मा आपानै आरै भाग सारू देवै है, आपानै भी मिल ज्यावै है।' लोग रोवता आवता, हसता जावता। अबै पापा रो काम करावणो रो काम की हलको पडग्यो। जको काम पैली चैनसिंह जी करावता, वो काम मा साम लियो, चैनसिंह जी रैवता पण काम घणकरो मा करावण लागगी।

अबार एक बात साफ-साफ दीखण लागगी ही के प्रशासन राज पर हावी होवण लागग्यो हो। सारा 'पावर' तो प्रशासन रै हाथ मे, सरकार करै तो काई। इसो लागै हो जाणै राज रै हाथ में तो फोन हो, कोई फोन री बात सुणले तो बा भला, नी सुणै तो नी सुणै, सरकार बीरो करै काई, राज री नौकर री जड़ पताळ मे।

एकर रेखा पापा कनै आई, बोली—'काई करूं, म्हारो डाइरेक्टर कयो कोनी मानै।' पापा रो दबदबो तकडो। पापा फोन उठायो, डाइरेक्टर स्यूं बात करी—'डाइरेक्टर, म्हूं बीरमानन्द, बोलू हू।'

पापा नै रीस आवती जद् बै तुकारै पर आ ज्यावता, न आगलै रै 'जी' लगावता न आपरै।

पापा कयो—'सुण, तनै बैरो है, ओ राज कोरो है, जनता रो, जनता ईं राज री मालिक है, 'तू राज रो नौकर है। जे नौकर मालिक रो काम नी करै तो बी नौकर नै रैवणै रो कोई हक नी। मेरै कनै रेखा बैठी है, बा सिकायत करै है के तू बीरो हुकम मान्यो कोनी, तेरी इत्ती औकात।'

डाइरेक्टर सझ्या स्यू पैली पापा स्यू मिलण आयो, रेखा फेर कदेइ सिकायत कोनी करी।

पापा कया करता, इण व्यवस्था में जनता अया ही रोवती कूकती रैवसी, अै नौकर जनता पर राज करसी, मनीस्टर, विधायका कनै कांई है। बै आ भी कैवता—आरो तो डोळ भी कोनी। आज जनता रा प्रतिनिधि ही वेडोळा है, पंच स्यूं लेयन केन्द्र रै मन्त्र्यां ताई पीसै रो राज है, कठैई ईं वस्था में खोट है।

पापा तो फेर आ मोटोड़ां अफसरां रा कान खीच देवता। एकर एक

संक्रेट्री पापा री बात कोनी मानी। बा बीनै 'सरपलस' कर दियो, फेर बण छ मीना तांई चक्कर काटतो रयो।

आं दिनां राज रै नोकरा री हड़ताल हुई, हड़ताल हुई तो एहड़ी हुई के आखै राज रो कामकाज ठप्प। स्कूल बन्द, कचेड़्यां बन्द, दफ्तर बन्द। दफ्तरा, स्कूलां, कचेड़्यां में कबूतर बोलै। चपड़ासी स्यूं लेयन बाबूआं तांई कोई काम पर कोनी। अफसर बैठ्या माखी उडावै।

असेम्बली चालै ही, पापा असेम्बली में भोत जोरदार भासण दियो। पापा कयो—आज राज रो नौकर हड़ताल पर है, बो तनखा बधाणो चावै है, बो भूखो है। बानै बेरो ही कोनी, भूख कांई हुवै है। भूख देखणी है तो गांवां में चालो। लोगां कनै बावण नै पूरी-सूरी जमीन कोनी, जमीन है बठै दाणा कोनी। झाझरकै उठै, आधी रात रा सोवै। भूखा उठै, भूखा सोवै। बारै पैरणनै कपड़ा कोनी, ओढ़णनै बिछावणा कोनी, टाबर नागा रवै, लुगायां काट्या देदे आपरी लाज ढकै। गरमी मे गरमी मरै, सर्दी मे सर्दी, बिरखा बारै डील पर बरसती रवै, न्हाणं-धोणं रो तो बठै जिकर ही कोनी। नाज नै पाणी रै लगा-लगा खावै। कोई दुकानदार बानै उधारो कोनी दे। संज्या नै कमायन नीं ल्यावो तो भूखा सोवो। खेतीखड़ री आ हालत है के पांच साला में एक साल जमानै रो होवै, कदे बिरखा कोनी, तो कदे घणी बिरखा, कदे ओळा पड़ ज्यावै तो कदे पवन चाल ज्यावै, आखी जिंदगी भूख अर करजै में पिसीजती रवै, बठै है भूख। राज रो नौकर भूख री बात करै जकां रा टाबर आछो पैरै, आछो खावै, स्कूला में पढै, नौकर अर नौकर री लुगाया पखा रै नीचै सोवै, बांरी तनखा पर न ओळा पड़ै, पवन न चालै। आपां जकी व्यवस्था दी है, ईरै मांय पूंजी पूंजीपति कानी चालण लागरी है, गरीब घणो गरीब होवण लागर्‌यो है। आपणा बणायेडा कानून नौकर री आलमारी में सड़ण लागर्‌या है, आपणा हुकम नौकर री फाइल रा मजाक बणर्‌या है, आपणो समाजवाद नौकर री ठोकर मे रुळन लागर्‌यो है। मनै खुद नै ईं राज में रैवता सरम आवै है, कीं जात रै संगटन होवै ईंरो मतलब ओ तो कोनी के बीरो बै नाजायज फायदो उठावै। आज नीचै स्यूं लेयन ऊपर तांई आ नोकरां रिस्वत री तबाही मचा राखी है, आनै न डर है न आं पर रोब। आठै तांई के आपां भी आंरै साथै मिल दोनूं हाथां स्यूं खावण

लागर्‌या हां, आ जनता थानैं म्हानैं धक्सैली नी ।

पापा रो भासण अखबारां में छप्यो, ईं भासण री भोत चरचा हुई । सगळा ही इण साची बात नैं सराही, पण नौकरां री आलोचना पापा रैं महगी पड़ी । नौकर रोज जलूस तो निकालता ही, मुख्य-मंत्री रो पुतळो जळावता, पण दूजैं दिन म्हारी कोठी रैं आगैं नौकरां प्ररदसण करचो, पापा रो पुतळो जगायो । म्हानैं भोत रीस आई, पण जोर कांई ?

कोठी रैं आगैं पुलिस रो इन्तजाम हो, कई देर ताई पापा रो नाम लेयन—'मुरदाबाद' रा नारा लगाया, 'हाय-हाय' करी, पण आखता होयन, आपी चल्या गया ।

मा बोली—'आपा कित्ता आरैं दुख में पडा हा, कित्तो आंरो भलो करा हां, फळ ओ मिल्यो है ।'

पापा हंसन बोल्या—'ओ जनतंत्र है देवी, अठै तो सगळा ही रंग देखणा पड़ै ।' तू म्हारैं साथै कोनी चालैं । साथैं चालैं तो पतो लागैं, लोग म्हानैं काळा झंडा दिखावैं, म्हारैं ऊपर भाटा फेंकैं, एकर तो मनैं पाटड़ै नीचैं बड़न ज्यान बचावणी पड़ी, एकर एक मीटिंग में म्हानैं बीच में पुलिस री गाडी में बैठन भाजणो पड्यो ।

हैं, मा रो सांस नीचैं रो नीचैं अर ऊपर रो ऊपर रैग्यो, म्हारो जी तो भोत ही खराब हुयो ।

मा बोली — इसी बात है तो बाळो फूको इण जंजाळ ने, म्हूं तो भाजती भाजती आखती होगी, म्हू तो एकर गई तो दरवाजा बण्या हा, फूल-माला घली ही, नोटां री माळा डली ही ।

—हा, तेरी बात भी साची है, पण कठै-कठै जूता री माला भी घलैचा है, एक जगा तो म्हूं गयो तो राम जाणैं लोग कठैऊं खूंसड़ा भेळा करन ल्याया हा के बिरखा होवण लागी तो म्हानैं गाडी पूठी मोड़णी पड़ी, रस्तो बदळ्यो जद् नाको लाग्या देवी, ओ राज है, राज में सगळा धंधा करणा पडै । पण अबै म्हूं भी आखतो होर्‌यो हू, काम री कदर कोनी, हथकडा है, जोडतोड है, तोर-तरीका है, राज में अबै कुरसी री लडाई है, खींचताण है, उठाव-पटक है, जको सजोरो है, बो रैसी; बाकी जासी ।

मुख्यमंत्री रा नया-नया हुक्म निकळै, पण नौकरां री हड़ताल चालू ।

मुख्य-मंत्री एक दिन रेडियो पर भासण दियो जकै में राज री माली हालत भोत माड़ी बताई, फेर बतायो के नौकरां री मांगा स्यूं राज रो करोड़ूं रिपियां रो घाटो जको राज रै खजानै री सामरथ स्यूं बारै। इण वास्तै नौकरां री सोच सही मारग पर चालणी चाहिजै बानैं हड़ताळ तोड़ देणी चाहिजै। फिर मुख्य-मंत्रीजी गरजन कर्यो जे नौकर हड़ताल चलू राखी तो राज बुरो पेस आसी —बारी नौकरी खतम करदी जासी। मुख्य-मंत्री एक तारीख दीनी के बी तारीख नैं जकां नौकर नौकरी पर हाजिर हो ज्यासी, बारी नौकरी सही, बाकी आपरी नौकरी खतम समझो। मुख्य-मंत्री रो भासण इसो लखावै हो जाणै नौकरां पर असर पड़सी क्यूंके राज में भूख घणी, नौकर री तनखा बदणै स्यूं भूख बदसी, नौकरां नैं भी रहम आसी, वैं आपरी मांगा पूठी ले लेसी।

म्हूं पापा स्यूं बात करी तो पापा नैं हंसी आगी, वा बात टाळदी।

मुख्य-मंत्री री धरपेजेड़ी तारीख आई ही, पण एक भी राज रो नौकर हाजर कोनी होयो, म्हूं मन मे सोची—अबै देस में राज नाम री चीज कोनी। राज रो मतलब कौं मिनख रो नाम कोनी, राज रो अरथ है राज रो हुक्म नी तो राज ही नी। लड़ाई चाली आ पूरी इक्कीस दिन, राज रो पूरो काम ठप्प। मंत्री लोग भी घरे बैठया माखी मारै। न कोई काम न काज। इक्कीसवें दिन मंत्री लोगां नैं मुख्य-मंत्री बुलायो, बातचीत करी, फेर नौकरा रै नेतावां नैं बुलाया, बातचीत चालू हुई। पण फेर बातचीत फैल। अबै तो राज आपरै रंग में आयो, गिरफतारयां चालू हुई, घणकरा नेतावा नैं जेलां में दे दिया, कई नौकरां नैं जकां थोड़ा दिनां रां असथाई हा वानैं नौकरी स्यूं काड दिया, पण जलूस और तेज होग्या, भासण और तीखा होग्या, कठै-कठै हिंसा भड़कण लागगी, म्हूं समझी—अबै राज झुकैलो नी, पूरो एक मीनो होग्यो, फेर वातां चालू हुई अर इण ही दिन सरकार ढीली पडगी, अण हाथ पादरा कर दिया, घणकरी मांगा मंजूर होगी, म्हूं मन मे करी—ओ बदारो राज। आज एक मीनै ताई जनता दुखी हुई—छोरा भणीज्या कोनी, दफतरां में काम होयो कोनी, बिजळी, पाणी सगळी संकट ही संकट रह्यो, आ बात तो जकै दिन ही हो ज्यांवती, जकै दिन आ माग राखी ही, इत्तो नाटक क्यूं।

पापा बतायो—तू क्यूं कोनी समझीं, म्हूं बताऊं।

—काई ?

—मुख्य-मंत्री बदनाम होयो, ईंरी कुरसी हाली।

—पापा, लोग थारो नाम लेवै के थे हड़ताल कराई।

—म्हूं तो आरै खिलाफ बोल्यो।

—आ भी राजनीति ही।

—आ म्हारै खिलाफ परदरमण करयो।

—आ भी राजनीति ही।

पापा हसण लागग्या, बोल्या—अबै बेटी, राजनीति समझण लागगी। तेरो मतलब ओ है के म्हू आ नौकरां नै बहकाया, फेर वां हड़ताल करदी, फेर म्हू भासण दे दिया, केन्द्र म्हारै ऊपर वहम न करै, फेर वां म्हारै खिलाफ नारा लगा दिया, वहम सफा दूर होग्यो। आ ही तो बात कैणो चावै है तू।

—पापा, म्हू कोनी कऊ, ओ अखबार कवै है।

म्हू अखबार ल्या दियो, पापा तो जाणै हा, पापा बोल्या—हा बेटा! आ राजनीति है। म्हू इत्ती ओछी हरकत नी करूला, मुख्य-मत्री आ रीस म्हारै ऊपर काडै है. बण केन्द्र मे म्हारो नाम भी लियो है, अखबारां में बदनाम भी करै है, बण म्हारै साथै लडाई चालू करदी।

पापा बैठ्या हा, इत्तै मे चपरासी आयन कह्यो—कई गाव रा लोग आप स्यू मिलणो चावै है।

पापा 'हा' करदी।

लोग एक ही गाव रा हा, दस पन्दरा आदमी तो हा ही।

पापा उठन वांरी आवभगत करी। लोग नीचै दरी पर बैठग्या, पापा भी दरी पर बैठग्या।

—बोलो भई, पापा पूछ्यो।

वा आपरो नाम ठाम बताओ, वी में एक सरपच हो, और आदमी हा जकां मे दो-च्यार पंच हा, बाकी गाव रा मुखिया हा।

वैं बोल्या—सा, म्हारै कानी एक नहर रो खाळियो आरयो है। वी मे पैली तो म्हारै गाव रो नाम हो, पण अबै बो मिटग्यो। म्हे लोगां पूछताछ

करी तो पतो लाग्यो के एम. एल. ए. री महरबानी इसी हुई के बै आपरै एक लवेज में एक गाव हो बीरै कानी बो खाळियो मुडग्यो अर म्हानै छोडग्यो। एम० एल० ए० साहब कनै पूच्या तो बा बतायो के एक्स० ई० एन० सा'ब ओ काम कर्‌यो है, म्हारो कसूर कोनी। म्हे बी सा'ब कनै पूंच्या तो बा कयो के बीस हजार रिपिया करद्‌यो तो म्हूं ओ काम करद्‌यूं, नी तो एड करो। म्हे लोग बीस हजार कर देंवता, क्यूंके आजकलै सगळो काम लेवा देवी ऊं चालै है, पण गांव में है पारटीबार्जी, पीसो वणै कोनी जद् थारै कनै आया के थे ओ काम कराओ।

पापा बोल्या—थे लोग अरजी लिखन ल्याया हो।

—हा लिखन ल्याया हा।

पापा वारी अरजी ले ली, 'बात करस्या' आ बात कहन बात खतम करदी।

पण गांव आळा रो जी सोरी कोनी हुयो। बां में एक आदमी कयो—'काई बतावा सा, आप दोरा नी होवो तो एक बात कवां, पैली म्हारै अठै एक पटवारी हो, अबै तो अहलकार भी घणा होग्या, घणी हीं रिस्वत होगी।

फेर एक आदमी बोल्यो—ज्यूं-ज्यूं विकास होयो है, नौकर बद्‌या है, तो रिस्वत बदी है।

एक आदमी फेर कयो—पैली म्हे लोग जोहड़ै रो पाणी पीवता, अबै म्हारै अठै वाटर वर्क्स है, म्हे जोहड़ै ने खतम कर दियो, अबै वाटर वर्क्स मे कदे बिजली कोनी तो कदे तेल कोनी, पाणी रो इकांतरै तोड़ो रवै।

दूजै बोल्यो—बिजली तो आगी। म्हे चिमनी, लालटेन राखणी छोड दी, *अबै रोटी अंधेरै में खावां हां।*

तीजो बोल्यो—म्हारै सासरै में नहर है, बठै बै आपरै ओवरसीयर अर जिलेदारा री हाजरी मे खड़्‌या रवै।

पापा कयो—विकास होसी बठै नौकर बदसी, नौकर बदसी बठै रिस्वत बदसी, गुलामी बदसी।

जद् सरपंच कयो—सा, पैली आपा फकत राजा रा गुलाम हा, अबै तो पाणी रा गुलाम, बिजळी रा गुलाम, नहर रा गुलाम, 'गुलामी चौगणी बदगी।

पापा बोल्या—गांधीजी एक बात कयी ही—मशीन मत ल्याओ, मशीन ल्याओला तो गुलामी ल्याओला ।

फेर एक आदमी बोल्यो—म्हारै अठै स्कूल है, पण पढ़ाई कोनी । न मास्टर टेम सिर आवै अर न छोरा ।

जद् दूजै कयो—कांई है पढ़ाई में आजकलै, नौकरी तो मिलै कोनी, चाहे बीस पढल्यो ।

—अरै पढ़ाई स्यूं मिनख तो बणै है, एक कयो ।

—आजकलै पढाई स्यू मिनख बणै है, आ कण कहदी तनै पढाई स्यू छोरो न घर रो रवै न घाट रो । बो तो जत्ता कुलछण होवै सै सीखै । बीनै पैरणनै चोखा गाभा चाहिजै, खावण नै चोखी रोटी चाहिजै । स्कूल मे पढाई कोनी, ट्यूशन कराओ, रिश्वत देओ, जद् पास करै । क्लास तो बो बदळले है पण आंक एक बीनै आवै कोनी । न बो हिसाब जाणै न बो पढ़णो । हिन्दी रो कागद् कोनी पढ सकै ।

एक आदमी और बोल्यो—म्हे लोगा भोत कोमिस करी के म्हारै अठै रो स्टाफ बदळ ज्यावै, स्यात् पढ़ाई ठीक हो ज्यावै, पण अफसर बोल्यो—कांई खोट है बामे ?

—क्षा, वै पढावै कोनी ?

—म्हूं थानै इसा आदमी दे देस्यू, जकै पढावै भी कोनी, दारू पीयन गाव में तुरळ मचावैला ।

—तो आप बारो की कोनी कर सको ।

—म्हू कांई करूं, अफसर कयो, कोई एम० एल० ए० रो आदमी, कोई मंत्री रो आदमी । एक सघ और बतायो, बो काम करण ही कोनी देवै ।

फेर एक आदमी बोल्यो—जठै रोब कोनी, बठै राज कोनी, अै अहल-कार तो सफा मुफ्त री तनखा लेवै है । काम रा पीसा झाड़ै है । अहलकारां री आज मोटी-मोटी कोठियां बणरी है, कोई पूछण आळो कोनी ।

एक आदमी अठै तक कह् दियो—रीस मत करिज्यो, ईं राज स्यू बो राज ही चोखो हो, बठै न्याय तो हो, अबै तो एक बोतळ स्यूं मरजी आवै ज्यूं करल्यो । पीसै री पूजा है पीसै री, आज पीसो चाहिजै चाहे कित्तो कतल करद्यो, छूट ज्याओ ।

अै वातां लोग रोज कवै, कोई आमे नई वात कोनी ही, पण पापा भोत उदास होग्या, वेहद उदास होग्या, इत्ता उदास वै पैली कोनी होवता, इसो लागै हो जाणै वांरो हौसलो कमजोर पड़ण लागरयो हो। वां एक ही बात कहन लैरो छुडायो—गांधीजी कैवता, समाजवाद मे नोकरसाही बदसी, भ्रष्टाचार बदसी, रिस्वत बदसी। समाजवाद नै काम रा करणो है तो पैतृक हक खतम करणो पड़सी।

18

गाव स्यूं समाचार आयो के दादी बीमार है, म्हूं पूठो समाचार करायो रे वै अठै आ ज्यावै, पण दादी कोनी आई। म्हे मन मे सोचो रे कोई ताप सिरवा चढो होसी, गोळी गुटको ले लियो होसी, ठीक होगी होसी। बां बूढ़ा आदमियां रै कोई मोटी बीमारी तो होवै कोनी, इयां ही चालती बीमारयां होवै है—पेट दूखण लाग ज्यावै, जुखाम लाग ज्यावै, ताप चढज्यां, देसी दवाई कर लेवै, अजवाण री फाकी लेली, ताप री गोळी लेली, जुखाम नै तो की समझै कोनी, चीकणो खाणो छोड़ देवै, छाछ, खाटो कोनी लेवै, लूकी सूकी खावै, इत्तै में ठीक हो ज्यावै।

पण फेर एक समाचार आयो के बूढ़ळी तो माचो झालली, तो म्हानै फिकर हुयो, म्हे एक गाडी भेजी, गाडी खाली आगी। दादी कुआयो—'चिन्ता मत करो, ठीक हो ज्याऊंली, नी होऊंली तो कोई बात नीं, म्हारा काई अबै लाव जेवड़ा वणै है, म्हूं तो अठै ही हाड नाखूली।' दादी कोनी आई। पण आदमी बतायो—'बूढळी कोनी आवै, बीमा वांरी सेवा करण आळा घणा है। वा तो एक ही बात कवै है—'म्हूं पराई धरती में क्यूं मरूं, मरूंली तो अठै ही मरूली।' वा पूरी जिद्दण है वा कोई नी आवै।

मां बोली—'कांई करां, वै तो कोनी आवै, म्हारो न होवै, तेरै पापा नै एक मिनट री वेल कोनी। तूं भी

इत्तो भलो आदमी हो जकै रै गोळी लागी तो पापा ख़ून दियो हो। कोडाराम रुळीचद, भागीरथ, मनीराम, फूलचद वां मांय स्यूं एक ही कोनी दीखै।

म्हूं फेर एक दिन मां नै पूछ्यो—'मां पापा रो सुभाव खराब होग्यो, जद् पापा नैं लोग छोडग्या।

—नी बेटा, मां बतायो, मुख्य मत्री शर्मा एम० एल० ए० रै कान में एक मंतर पड़ै है। टेम है, निकळ ज्यासी, वकत चूकग्या तो पछताओला, मेरे साथै आओ, सोनै अर चांदी साथै खेलो, भूख साथै रैवणो है तो बीरमानन्द कनै जाओ। वानै रिस्वत, तस्करी सगळी छूट दे दी, खूब खाओ खूब लगाओ। त्याग-प्याग में की कोनी पड़यो। जका अठै लटूरिया करता, वा मे एक ही कोनी।

एक दिन पापा चौक मे बैठ्या हा, सामै की लोग बैठ्या हा। पापा उदास हा पण हा शान्त। सामै रा लोग भी बात, शान्ति स्यूं सुणन लागर्‌या हा। पापा कयो—दुनिया मे दो ही कौम है—गरीब अर अमीर। अमीरा कनै धन है, धन स्यूं वा सगळा मिनखा रै मानस नै गुलाम बणा राख्या है। अमीर आपरै ढग स्यूं लोगां नै सोचण समझण री अकल देवै है क्यूं रे वारै हाथ मे प्रेस है। वा सोचण समझण आळा मिनखा नै भी आपरा गुलाम बणा राख्या है। गरीब कनै धन तो है ही कोनी। वांरी अकल भी अमीर रै हाथ मे है। जे कोई गरीब रो नेता बणनै री सोचै बो गिण्या दिना मे मात खावण रो जुगाड बणा लेवै है। अमीर कम है, गरीब घणा है, पण बहुमत अमीरा कनै है। अमीर राज कोनी करै, पण राज करावै है। म्हूं मुख्य मत्री शर्मा नै आपणो आदमी समझ्यो, बीरो सोचणै रो तरीको गरीब हित मे हो पण वो भी अमीरा रै धड़ै मे चल्यो गयो, बण आपणै आदमिया नै भी धन रो टुकडो दिखान आपरै हाथ मे ले लिया, अवार शर्मा मोटै अफसरां नै कैय दियो के बै बीरमानन्द रो काम न करै, अबै म्हारै कनै तो कुरसी है, राज कोनी, पतो नी आ कुरसी भी छोड़णी पड़ ज्यावै।

पापा एक लाबी सास ली, सामै बैठ्या लोग मौन हुया बैठ्या रह्या।

पापा कदे दफ्तर जावै, कदे कोनी जावै, दौरै पर जावणो भी कम कर दियो, जको चौगान मिनखा स्यूं भरयो रैवतो, बठै अवार छीड़ पड़गी।

पापा स्यूं लोग मिलण आंवता, पण बै और भात रा हा, कई मोटै पगड़

रा, कई पागड़ी आळा, पण बै पापा री पार्टी रा कोनी हा ।

पापा तो वात कोनी बतावंता, पण अखबार पापा रै मन री वात कैय देंवता। अखबार बोलता—मुख्य मंत्री अर वीरमानन्द मे टकराव, बीरमानन्द गे विरोधियां स्यूं सम्पर्क ।

पापा अबार कांई करैला, पापा राज छोड़ देसी, कुरसी छोड़ देसी, फेर कांई होसी ? राज रा तो रंग न्यारा ही होवै है, अै रग एक झटकै रै साथै चला ज्यासी।

आ दिनां देस रो माहौल ही बहकरयो हो, चोखा-चोखा पार्टी रा नेता पद छोडण लागरया हा। वै देस में वापरेड़ै भ्रष्टाचार स्यू बेहद परेसान हा।

एक दिन पापा रै मूडै स्यू निकळी—म्हूं ई शर्मा नै लौ रा चीणा चवार छोडस्यूं घर तो धोंसियों रो ही बळसी, पण सुख ऊदरा ही कोनी पावैला।

जद् एक साथी कयो—'थे कदेइ् पारटी मत छोड दीज्यो, थारा बैर शर्मा स्यू है, पार्टी स्यूं कोनी ।'

पापा कयो—मिनखा स्यू पार्टी बणै, जे मिनख माडा होवण लागज्या, तो पार्टी बीचारी कांई करै, जी घर मे वास आवण लागज्या, अर बांस नीकळै कोनी, तो वो घर छोडणो ही आछो ।'

बो साथी सोच-समझ बोल्यो—'कदम उठायो तो आछी तरियां सोच समझ लीज्यो, राजनीति तो एक खेल है, दाव मे चूकग्या तो हार मे आ जीस्यो।'

पण पापा अबार खासा रीसाणै हा, बनैं की कोनी दीखतो, शर्मा ही दीखतो, वै शर्मा नैं ढावणै री जोड़-तोड में लागग्या, चाये बानैं की करणो पड़ै, पापा रो काळजो जगां छोड़ग्यो हो, बै जाड भींचता ही रैवता। पापा रो दाव आज तांई खाली कोनी गयो, म्है अबार देखण लागरया हा।

चुनाव री चिरचा चालण लागगी, आम जनता खासा परेसान ही, लोगां रा काम होवता कोनी, होंवता तो पीसा लगान होंवता, जगां-जगां जूता फजीती, कठैई मिनखां नै चैन नही। महंगाई आपरा पांखड़ा पूरा पसार राख्या हा, अराजकता बदरी ही, विरोधी लोग जनता पर हावी होवण लागरया हा, लोग कैवण लागग्या—'इण सुहाग स्यू तो रंडापो ही आछो। राज तो पैली आळो हो, न्याय तो हो ही, अबार तो पीसा देवो,

बात अया हुई के राजपाल शर्मा नैं राज वणाणै सारू बुला लियो, तरक हो के वैं सगवाऊ मोटी पार्टी रा नेता हा। फेर तो जनता में घणो रोष ऊफण्यो, चुनावां मे बहकायेडा मिनख हिंसा पर उतरग्या, जगा-जगा प्रदर्शन अर तोड़-फोड़, आंसूगैस, लाठीचार्ज अर आखर सेना बुलाई गई अर उमडती भीड़ां पर गोळ्यां चाली जकै स्यूं घणा आदमी मर्‌या अर घणकरा घायल होग्या, दूजै दिन ही राज मे राष्ट्रपति शासन वणग्यो।

जकै दिन ही स्वामीजी आग्या। आपरी झोळी-झंडा नाकै मेलन बैठग्या, पापा भी आग्या। स्वामीजी कनैं बै ही बातां—अरै बिरमानंद, थे म्हे एहडो राज सारू तो जेळां कोनी भोगी ही। लोग लड़ै ज्यूं कुत्ता लड़ै इनैं ही कहवै है आपणो राज।

पापा तो पैली स्यू ही निरास हा, बोल्या—म्हे लोगां तो गिणै दिनां मे ही पोल दे दियो।

—बात तो पोत थाळी है, चुनाव तो होया ही करै है, चुनाव मे जकी वाता सुणी, है भी माडी, फेर दळबदळ री बात और माड़ी, बीरै बाद राजपाल रा बात बीस्यूं भी माड़ी, फेर जनता रो नाटक सगळाऊं माडो अर अबार गोळी बारी घाप'र माड़ी। दोष कीनैं देवां, राजनीति जनहित मे कोनी, आप हित होग्यो। म्हारै माथै मे तो आ जची कोनी।

—जची तो कोरै ही कोनी, स्वामीजी, पण जनतत्र रा तो अै ही नाटक होसी, कीरै बस रा कोनी, हर व्यवस्था मे अपणी अपणी खामी है, अै खाम्यां दूर कोनी हो सकै। पापा स्वामीजी नैं बतायो।

स्वामीजी फेर बात मोडता थका बोल्या—पण अबै आ बता के आगै क्या होसी, राज कीरो रैसी।

—राज शर्मा रो, पापा कयो।

—पण बहुमत तो थारै कनैं, फेर शर्मा रो राज कया। स्वामीजी पूछ्यो।

पापा बतायो—अबै राष्ट्रपति शासन स्यूं शर्मा नैं पूरो मोको मिल ज्यासी, वो म्हारा आदमी मर्जै स्यू तोड लेसी।

—ओ काम थे लोग भी कर सको हो।

—बा मनै केन्द्र री ताकत है, अबै अठै राज केन्द्र रो है फेर ''लोग

एकमत भी कोनी। म्हे लोग म्हा'रे मुख्य-मन्त्री भी कोनी बण सकया। न बणा सकां।

20

बात पापा री साची हुई, एक मीनै पाछै राजपाल विधान-सभा रो अधिवेशन बुलायो, शर्मा कनै इक्कीस आदमी वदग्या। पापा रा घणकरा आदमी शर्मा सार्थ चल्या गया। कीनै ही मनीस्टरी रो लालच, कीनै ही और पद रो लालच अर कीनै ही पीसा रो। कया नै पीसा अर पद दोनां रो लालच रेख्या, खड्गसिंह, फोडाराम, हुक्मचन्द, धर्मसिंह जका पापा रा ऐन नेडा हा, वै भी शर्मा सार्थ जा मिल्या। अबै तो पापा बेहद उदास रैंवता, बारै कनै कोई काम कोनी हो। तार, सतरी, पैरा तो पैली ही चल्या गया हा। न कोई आवतो, न कोई जावतो। काग बोलै, कुत्ता घूंसै।

पापा कनै कोई काम कोनी, कदे वै बारै छप्पर में बैठ ज्यांवता, कदे ऊपर आपरै कमरे में चल्या ज्यांवता, कदे नीचै म्हारै कनै आया दो-चार बात कर लेंवता। मूंडै पर जको चैळको हो, बा अब अबै उतरण लागग्यो। बा एक तास री जोड़ी मंगवा ली ही, बा वै आपही खेल लेंवता। कदे वै मनै बिठा लेंवता, म्हू वानै साथ देंवती। म्हूं कदेई राजनीति री बात वांस्यूं कोनी करती। म्हूं जाणती, पापा नै इण बात स्यूं ही बारै घाव नै उखेड़णो है।

मां म्हांस्यू बात जरूर करती। मां कनै अबै काम कोनी हो। मा कैवती—कित्तो करती, कदेई थकेलो कोनी आयो, अबै पतो की' कांई बात है, थोड़ो-सो काम करतां ही शरीर थकेलो मान ज्या है, जाणै गोडा टूटग्या।

मां ठीक कैवती। मा पर बो हौसलो कोनी रयो। मां अबै काळी पड़ण लागगी, सरीर कमजोर पड़ण लागग्यो।

मा रै कदे-कदे आंसू आ ज्यावता। कैवती—'मालक कै तो आछा दिन

बात अया हुई के राजपाल शर्मा नै राज बणाणै सारू बुला लियो, तरक
ही के वै सगवाऊ मोटी पार्टी रा नेता हा। फेर तो जनता में घणो रोष
फफण्यो, चुनावां में बहकायेडा मिनख हिंसा पर उतरग्या, जगां-जगा प्रदर्शन
अर तोड़-फोड़, आसूगैस, लाठीचार्ज अर आखर सेना बुलाई गई अर उमडती
भीड़ां पर गोळ्या चाली जकै स्यू घणा आदमी मर्या अर घणकरा घायल
होग्या, दूजै दिन ही राज में राष्ट्रपति शासन बणग्यो।

जकै दिन ही स्वामीजी आग्या। आपरी झोळी-झंडा नाकै मेलन
बैठग्या, पापा भी आग्या। स्वामीजी कनै बैं ही वाता—अरै बिरमानंद, थे
म्हे एहडो राज सारू तो जेळां कोनी भोगी ही। लोग लड़ै ज्यू कुत्ता लडै
इनै ही कहवै है आपणो राज।

पापा तो पैली स्यू ही निरास हा, बोल्या—म्हे लोगां तो गिणै दिना
मे ही मौत दे दियो।

—बात तो पोन आळी है, चुनाव तो होया ही करै है, चुनाव मे जकी
बाता सुणी, है भी माडी, फेर दळबदळ री बात और माडी, बीरै बाद
राजपाल रा बात बीस्यू भी माड़ी, फेर जनता रो नाटक सगळाऊं माडो अर
अवार गोळी बारी धाप'र माड़ी। दोष कीनै देवां, राजनीति जनहित मे
कोनी, आप हित होग्यो। म्हारै माथै मे तो आ जची कोनी।

—जची तो कीरै ही कोनी, स्वामीजी, पण जनतन्त्र रा तो अै ही नाटक
होसी, कीरै बस रा कोनी, हर व्यवस्था मे अपणी अपणी खामी है, अै खाम्यां
दूर कोनी हो सकै। पापा स्वामीजी नै बतायो।

स्वामीजी फेर बात मोडता थका बोल्या—पण अबै आ बता के आगै
क्या होसी, राज कीरो रैसी।

—राज शर्मा रो, पापा कयो।

—पण बहुमत तो थारै कनै, फेर शर्मा रो राज क्या। स्वामीजी पूछ्यो।

पापा बतायो—अबै राष्ट्रपति शासन स्यूं शर्मा नै पूरो मोको मिल
ज्यासी, बो म्हारा आदमी मर्जी स्यू तोड़ लेसी।

—औ काम थे लोग भी कर सको हो।

—बा मनै केन्द्र री ताकत है, अबै अठै राज केन्द्र रो है फेर म्हे लोग

एकमत भी कोनी। म्हे लोग म्हारे मुख्य-मंत्री भी कोनी बण सक्या। न बणा सकां।

20

बात पापा री साची हुई, एक मीनै पाछै राजपाल विधान-सभा रो अधिवेशन बुलायो, शर्मा कनै इक्कीस आदमी बदग्या। पापा रा घणकरा आदमी शर्मा साथै चल्या गया। कीनै ही मनीस्टरी रो लालच, कीनै ही और पद रो लालच अर कीनै ही पीसा रो। कया नै पीसा अर पद दोना रो लालच रेखा, खड़गसिंह, कोडाराम, हुक्मचन्द, धर्मसिंह जका पापा रा ऐन नेडा हा, वैं भी शर्मा साथै जा मिल्या। अबै तो पापा बेहद उदास रैवता, बारै कनै कोई काम कोनी हो। तार, संतरी, पैरा तो पैली ही चल्या गया हा। न कोई आवतो, न कोई जांवतो। काग बोलै, कुत्ता घूसै।

पापा कनै कोई काम कोनी, कदे वै बारै छप्पर मे बैठ ज्यांवता, कदे ऊपर आपरै कमरे मे चल्या ज्यांवता, कदे नीचै म्हारै कनै आया दो-चार बात कर लेंवता। मूंडै पर जको चैळको हो, वा अब अबै उतरण लागग्यो। बा एक तास री जोडी मंगवा ली ही, बा वै आपही खेल लेंवता। कदे वै मनै बिठा लेंवता, म्हूं वानै साथ देवती। म्हूं कदेई राजनीति री बात वांस्यूं कोनी करती। म्हूं जाणती, पापा नै इण बात स्यूं ही बारै घाव नै उखेड़णो है।

मां म्हांस्यूं बात जरूर करती। मा कनै अबै काम कोनी हो। मां कैवती—कित्तो करती, कदेई थकेलो कोनी आयो, अबै पतो की' कांई बात है, थोडो-सो काम करतां ही शरीर थकेलो मान ज्या है, जाणै गोडा टूटग्या।

मां ठीक कैवती। मा पर बो हौसलो कोनी रयो। मा अबै काळी पड़ण लागगी; सरीर कमजोर पड़ण लागग्यो।

मां रै कदे-कदे आंसू आ ज्यांवता। कैवती—'मालक कै तो आछा दिन

बात अया हुई के राजपाल शर्मा नैं राज वणाणै सारू बुला लियो, तरक हो के वैं सगवाऊ मोटी पार्टी रा नेता हा। फेर तो जनता में घणो रोप ऊफण्यो, चुनावां में बहकायेडा मिनख हिंसा पर उतरग्या, जगां-जगां प्रदर्शन अर तोड़-फोड़, आमूगैस, लाठीचार्ज अर आखर सेना बुलाई गई अर उमड़ती भीड़ा पर गोळ्या चाली जकै स्यू घणा आदमी मर्या अर घणकरा घायल होग्या, दूजै दिन ही राज में राष्ट्रपति शासन वणग्यो।

जकै दिन ही स्वामीजी आग्या। आपरी झोळी-झंडा नाकै मंलन बैठग्या, पापा भी आग्या। स्वामीजी कनै बैं ही वातां—अरै बिरमानंद, थे म्हे एहड़ो राज सारू तो जेळां कोनी भोगी ही। लोग लड़ै ज्यूं कुत्ता लड़ै इनै ही कहवै है आपणो राज।

पापा तो पैली स्यू ही निरास हा, बोल्या—म्हे लोगा तो गिणै दिना मे ही पोत दे दियो।

—बात तो पोत आळी है, चुनाव तो होया ही करै है, चुनाव में जको वाता सुणी, है भी माडी, फेर दळवदळ री बात और माडी, बीरै बाद राजपाल रा बात बीस्यूं भी माडी, फेर जनता रो नाटक सगळाऊं माड़ो अर अवार गोळी बारी धाप'र माड़ी। दोष कीनैं देवां, राजनीति जनहित मे कोनी, आप हित होग्यो। म्हारै माथै मे तो आ जची कोनी।

—जची तो कीरै ही कोनी, स्वामीजी, पण जनतंत्र रा तो अैं ही नाटक होसी, कीरै बस रा कोनी, हर व्यवस्था में अपणी अपणी खामी है, अै खाम्या दूर कोनी हो सकै। पापा स्वामीजी नैं बतायो।

स्वामीजी फेर बात मोड़ता थका बोल्या—पण अबै आ वता के आगै क्या होसी, राज कीरो रैसी।

—राज शर्मा रो, पापा कयो।

—पण बहुमत तो थारै कनै, फेर शर्मा रो राज कया। स्वामीजी पूछ्यो।

पापा बतायो—अबै राष्ट्रपति शासन स्यूं शर्मा नैं पूरो मोको मिल ज्यासी, वो म्हारा आदमी मजै स्यू तोड़ लेसी।

—ओ काम थे लोग भी कर सको हो।

—बा मनै केन्द्र री ताकत है, अबै अठै राज केन्द्र रो है फेर म्हे लोग

एकमत भी कोनी। म्हे लोग म्हा रो मुख्य-मंत्री भी कोनी बण सक्या। न बणा सकां।

20

बात पापा री साची हुई, एक मीनै पाछै राजपाल विधान-सभा रो अधिवेशन बुलायो, शर्मा कनै इक्कीस आदमी बदग्या। पापा रा घणकरा आदमी शर्मा सागै चल्या गया। कीनै ही मनीस्टरी रो लालच, कीनै ही और पद रो लालच अर कीनै ही पीसा रो। कयां नै पीसा अर पद दोना रो लालच रेख्या, खड़्गसिंह, कोडाराम, हुक्मचन्द, धर्मसिंह जका पापा रा ऐन नेड़ा हा, वै भी शर्मा सागै जा मिल्या। अबै तो पापा बेहद उदास रैवता, बारै कनै कोई काम कोनी ही। तार, सतरी, पैरा तो पैली ही चल्या गया हा। न कोई आवतो, न कोई जावतो। काग बोलै, कुत्ता घूंसै।

पापा कनै कोई काम कोनी, कदे वै बारै छप्पर मे बैठ ज्यावता, कदे ऊपर आपरै कमरे मे चल्या ज्यावता, कदे नीचै म्हारै कनै आया दो-चार बात कर लेंवता। मूंडै पर जको चैळको हो, बा अब अबै उतरण लागग्यो। बा एक तास री जोड़ी मंगवा ली ही, बा वै आपही खेल लेंवता। कदे वै मनै बिठा लेंवता, म्हूं बानै साथ दैवती। म्हूं कदेई राजनीति री बात बांस्यूं कोनी करती। म्हूं जाणती, पापा नै इण बात स्यूं ही बारै घाव नै उखेड़णो है।

मां म्हास्यू बात जरूर करती। मां कनै अबै काम कोनी हो। मां कैवती—कित्तो करती, कदेई थकेलो कोनी आयो, अबै पतो कीं कांई बात है, थोडो-सो काम करतां ही शरीर थकेलो मान ज्या है, जाणै गोडा टूटग्या।

मां ठीक कैवती। मा पर वो हौसलो कोनी रयो। मां अबै काळी पड़ण लागगी, सरीर कमजोर पड़ण लागग्यो।

मा रै कदे-कदे आंसू आ ज्यावता। कैवती—'मालक कै तो आछा दिन

दिखावैनी, कै खोसै की। बात सच्ची ही, पतो नी, म्हां लोगा कांई पाप करचो के परमात्मा म्हारा आछा दिन खोस लिया। कित्ती भीड रैवती, कित्ता लोग मीठा बोलता, गाड़चा, जीपा री कतारां लागी रैवती। बै लोग कठै गया, क्यू कोनी आवै।

दिन मे एक-दो चोखा आदमी जरूर आंवता, म्हानै भोत खुसी होंवती, मा बड़ै चाव स्यू वांरी चाय वणावती, मा रो बड़ो जीसोरो होवतो। जद् बै जावता, जद् मा कैवती — आप घणा दिनां स्यू आया, आया करो, आरो भी जी लागज्या।

बै कैवता—'काई करां, टेम ही कोनी मिलै, टेम मिलै तो जरूर मिला हा, म्हारै आस्यू मोटो कुण है।

मा मन में करती — 'पैली म्हानै टेम कोनी हो, अवार थानै टेम कोनी वगत-वगत री बात है।'

एक दिन चौगान में बैठ्या हा एकला ही, मां मै अर पापा। म्हू पापा नै संकती सी क्यो—पापा, आपा पार्टी न छोडता तो ठीक रैवता।

पापा हसन बोल्या—'स्वराज, सवाल पार्टी रो कोनी, सवाल सिद्धातां रो है। म्हू तो जकै दिन ही हार चुक्यो हो जकै दिन केन्द्र मे आपणा आदमी कमजोर पड़ग्या। तू इण बात नै कोनी समझै। ऊपर भी पूंजी री लडाई है, नीचै भी पूजी री। दुनिया में भी पूजी री। देस आजाद हुयो, का विदेशी पूजी अर देसी पूंजी री लडाई है। अबै देस मे पूजी री लड़ाई। म्हे लोग तो बा लोगां री कठपुतळी हां, बारा नचाया नाचा हां। बै लोग जिया देस नै नचावै नाचणो पड़ै।'

म्हारी बात नै पापा इसी उडाई के म्हारै [illegible] सवाल रो बाको कोनी रयो, इण पूजी री लड़ाई नै तो पापा [illegible] न समझणै री चेष्टा ही करी।

म्हूं पापा नै जिसी म्हारी अकल ही व [illegible] बैठी, 'तेरा पापा तो जिद्दी है, ई शर्मा सागै [illegible] बिगड़ती।'

मुजहब काम करांवता, जे शर्मा म्हारी पार्टी साथै रैवतो तो बीनै जगां कोनी ही, म्हारै साथै बो भी रोवतो फिरतो, चलो, आपणो पुराणो साथी तो है ही राज मे, विरोध मे है तो कोई बात कोनी।'

मनै एक बात और सूझी—पापा रेखा भी आपा नै छोडगी जको आपणै इत्ती नेड़ै ही, हुकमचद भी छोड्यो जका थानै देवता री तरां मानता।

पापा फेर हस्या अर कयो—तो तू बेटा, औजू कोनी समझी।

पण मां बीच मे ही बोली—बा राड तो हरामजादी निकळी।

पापा बोल्या, तू गाळ काडै, मेरी बात पूरी होवण देती, बेटा, बा आपा नै छोडचा कोनी, आपा ही बानै छुडाया है।

—है, मनै पापा री बात पर अचभो हुयो।

—'है' मत कह, बेटा, म्हूं ही बानै राज मे बाड़्या है, पार्टी छुडायी है, नी तो आपणो कोई कोनी हो, बारै बैठ्या माखी मारता रैवता। आपणो अडचो काम सरै, आपणै ऐन नेडै आदम्या रो अड़चो काम सरै, नी तो राज आपणो पीच'र पाणी काड नाखतो। हा, अबार, आपा जनता री सेवा नी कर सका। अबै त्याग री राजनीति कोनी रयी, स्वारथ री राजनीति है, आ परम्परा ठेठ बणी रैसी जद् तांई जनतंत्र है, फेर आगै यदा तो कह सका हा, जद् ताई ईं हाडमास रो बणेणो मिनख है।

मां फेर बोली—'जे आ बात है तो बै आपणै घरे तो कोनी आवै।' मां अबार रीसाणै ही। मां फेर ऊफणी—म्हानै सगळी बाता याद है, वो है न हरगोविन्द जको दिल्ली में मनीस्टर बण्यो बैठचो है, आपणै घरे रोज मरतो, म्हारै हाथ री रोटी खावतो, माताजी, माताजी करतो लैरै-लैरै फिरतो, वो अठै घणी बार शहर मे आवै, एक दिन ही घरे कोनी मरै, माताजी मरगी के जीवती है, दुख-सुख री पूछण कोनी आवै, बीनै अबै उद्घाटन भाषण, चाटण स्यू ही वेल कोनी मिलै, बीनै थे ही राजनीति मे ल्याया हा, बो फिरतो खुरड़ा घीसतो—वकील सा'ब हा बै, टाबरां नै वगत सिर रोटी ही कोनी मिलती, म्हानै ठाव है।'

—आ रेखा नै पापा ही मनीस्टर बणायी, बा मास्टरणी ही। म्हू कयो।

दिखावँती, कै खोसँ कीं। बात सच्ची ही, पतो नी, म्हा लोगा कांई पाप करयो के परमात्मा म्हारा आछा दिन खोस लिया। कित्ती भीड़ रैवती, कित्ता लोग मीठा बोलता, गाड़चा, जीपां री कतारां लागी रैवती। वै लोग कठै गया, क्यू कोनी आवै।

दिन में एक-दो चोखा आदमी जरूर आंवता, म्हानै भोत खुसी होवती, मा बड़ै चाव स्यू वांरी चाय बणावती, मां रो बड़ो जीसोरो होवतो। जद् वै आंवता, जद् मा कैवती — आप घणा दिनां स्यूं आया, आया करो, आंरो भी जी लागज्या।

वै कैवता—'काई करां, टेम ही कोनी मिलै, टेम मिलै तो जरूर मिला हा, म्हारै आस्यू मोटो कुण है।

मा मन में करती — 'पैली म्हानै टेम कोनी हो, अबार थानै टेम कोनी वगत-वगत री बात है।'

एक दिन चोगान में बैठ्या हा एकला ही, मा मैं अर पापा। म्हूं पापा नै संकती सी क्यो—पापा, आपा पार्टी न छोडता तो ठीक रैवता।

पापा हसन बोल्या—'स्वराज, सवाल पार्टी रो कोनी, सवाल सिद्धाता रो है। म्हूं तो जकै दिन ही हार चुक्यो हो जकै दिन केन्द्र में आपणा आदमी कमजोर पडग्या। तू इण बात नै कोनी समझै। ऊपर भी पूंजी री लड़ाई है, नीचै भी पूंजी री। दुनिया में भी पूजी री। देस आजाद हुयो, का विदेशी पूजी अर देसी पूजी री लडाई है। अबै देस मे पूजी री लड़ाई। म्हे लोग तो बा लोगा री कठपुतळी हां, बारा नचाया नाचा हा। बै लोग जिया देस नै नचावै नाचणो पडै।'

म्हारी बात नैं पापा इसी उडाई के म्हारै सामै कोई सवाल ही बाकी कोनी रयो, इण पूजी री लडाई नैं तो पापा समझै हा, म्हूं तो कोनी समझी। न समझणै री चेष्टा ही करी।

म्हू पापा नै जिसी म्हारी अकल ही बीमी फेर बात करी, पण मां कैय बैठी, 'तेरा पापा तो जिद्दी है, ईं शर्मा साथै न बिगाडता तो बात इत्ती कोनी बिगड़ती।'

पापा फेर समझावण लागग्या—'तू भी बात नै कोनी समझै, म्हू शर्मा स्यूं म्हारै सिद्धांतां रै मुजहब काम करावतो, ऊपर रा लोग आपरै सिद्धाता

मुजहब काम करांवता, जे शर्मा म्हारी पार्टी साथै रैवतो तो बीनै जगां कोनी ही, म्हारै साथै बो भी रोवतो फिरतो, चलो, आपणो पुराणो साथी तो है ही राज मे, विरोध में है तो कोई वात कोनी।'

मनै एक वात और सूझी—पापा रेखा भी आपा नै छोडगी जकी आपणै इती नेडै ही, हुकमचद भी छोड्यो जका थानै देवता री तरां मानता।

पापा फेर हस्या अर कयो—तो तू बेटा, औजू कोनी समझी।

पण मा बीच में ही बोली—बा राड तो हरामजादी निकळी।

पापा बोल्या, तू गाळ काडै, मेरी बात पूरी होवण देती, बेटा, बा आपा नै छोडधा कोनी, आपा ही बानै छुडाया है।

—हैं, मनै पापा री वात पर अचभो हुयो।

—'है' मत कह, बेटा, म्हू ही बानै राज मे बाड्या है, पार्टी छुडायी है, नी तो आपणो कोई कोनी हो, बारै बैठ्या माखी मारता रैवता। आपणो अड्यो काम सरै, आपणै ऐन नेडै आदम्या रो अड्यो काम सरै, नी तो राज आपणो पींच'र पाणी काड नाखतो। हा, अबार, आपा जनता री सेवा नी कर सका। अबै त्याग री राजनीति कोनी रयी, स्वारथ री राजनीति है, आ परम्परा ठेठ वणी रैसी जद् तांई जनतंत्र है, फेर आगै घदा तो कह सका हां, जद् तांई ई हाडमांस रो वणेणो मिनख है।

मा फेर बोली—'जे आ यात है तो बै आपणै घरे तो कोनी आवै।' मां अबार रीसाणै ही। मा फेर ऊफणी—म्हानै सगळी बाता याद है, बो है न हरगोविन्द जको दिल्ली में मनीस्टर बण्यो बैठ्यो है, आपणै घरे रोज मरतो, म्हारै हाथ री रोटी खांवतो, माताजी, माताजी करतो लेरै-लैरै फिरतो, बो अठै घणी बार शहर में आवै, एक दिन ही घरे कोनी मरै, माताजी मरगी के जीवती है, दुख-सुख री पूछण कोनी आवै, बीनै अबै उद्घाटन भाषण, भाटण स्यू ही वेल कोनी मिलै, बीनै थे ही राजनीति में ल्याया हा, बो फिरतो खुरड़ा घीसतो—वकील सा'ब हा वै, टाबरां नै वगत सिर रोटी ही कोनी मिलती, म्हानै ठाव है।'

—आ रेखा नै पापा ही मनीस्टर बणायी, आ मास्टरणी ही। म्हू कयो।

—ओ हुकमचंद कांई हो, मां कयो, कठै ही नौकरी मिली कोनी, पापा रा जूठा बरतन चक्या करतो ।

—बो फुरड़ाराम, म्हू बोली, पटवारी हो ।

—पटवारी कठै हो, मां बोली, पटवारी रो बस्तो चकण आळो । कित्ता नाम गिणाऊं । कोडाराम, धर्मचंद, नाथूदास, रामजीलाल जका आपनैं राजा स्यू कम कोनी समझै ।

पापा सगळी बाता सुणता रया, फेर हंस्या बोल्या—क्यू जी दोरो करै, कुण कीनैं ल्यावै, कुण हटावै है, समय रा फेर है, आपणो टेम इत्तो ही हो निकळग्यो । राजा लोग जका रै फूक स्यूं घास बळ्या करतो, जका जलम स्यू मखमली गद्दां पर लोटया करता, आपां तो हा कांई, याद कोनी, बो कच्चो-कोठो, मा आळी कीकर, कांटा आळी बाड़, एक सीग आळी गावड़ली, दिन उगतां ही रात आळो रावड़ी, आथणगैं मागेड़ी छाछ री कड्डी ।

पापा मां रो माजनो सो ले लियो । मां तो चुप होगी, पण पापा फेर बोल्या—ओ राज तो जनता रो है, सगळा नैं ही मोको मिलणो चाहिजै । आपां कोई ठेको थोडो ही ले राख्यो हो, जका राणी रै पेट स्यू पैदा होया करता, बैं ही कोनी रया, आपणो तो औकात कांई ही ।

मा एक लाबी सांस ली, बा आं दिनां घणी फीकी रैवती, पापा बीनैं की धीरज बंधायो । पापा में आ खूबी ही के बैं जीसो आदमी देखता, बीसी ही बात कर लेवता । बारो कदे-कदे सगळियो आंवतो तो बैं हसी ठठ्ठा पर उतर ज्यावता तो इसा लागता जाणैं बैं ऐन साधारण मिनख है, कण जद् कोई विद्वान आंवतो तो बैं दार्शनिक बण ज्यावता । राजनीति आळै स्यू राज री बात करता तो घर आळा स्यू सुख-दुख री ।

पापा फेर बात नैं मोड़ दे दियो, बोल्या— इलै रो कांई हाल है ।

—बो तो किरकेट खेलण गयो है ।

—औ किरकेट ही खेलैं है, की पढ़ै भी है ।

—बिना पडे बी० ए० कयां करतो, मा कय

—म्हूं तो बीनैं पढता कम देखू हू ।

—पढ़ै तो है, पापा, दिनगै चार बजे

फेर पढ़ै।

—स्वराज, तेरो मकान कित्ताक दिनां में त्यार हो ज्यासी।

—थे काल देखन आयान, पापा, अबै तो देर कोनी, घणै ऊं घणा दो हपता।

इत्तै मे एक कार आई, कार मे दो आदमी हा, दोनू गाव रा आदमी।

बै ऊतरचा अर पापा स्यू नमस्ते करी। बै दोनू ही पार्टी रा आदमी हा।

म्हे लोग उठ्या। मा वेगी ही चाय बणान चली गई।

मा री बाण तो बा सागी ही रयी। बा लोगा कई देर तांई बात करी, फेर चालण लाग्या जद् मां वाही बात कयी—आया करो, सभाळघा करघो।

बै बोल्या—कांई बतावा, माताजी, सपनो साचो कोनी होयो, हाथ में आयेडी लाव नीसरगी, नी तो बताता, राज कांई होवै, ऐहडो राज ल्यावता के लोग याद राखता, अबै तो है कांई, बै ही नाळियां, वा ही सड़ांध। जनता रा भाग माड़ा है, जनता तो घणो ही साथ दियो, पण पार कोनी पड़ी।.मोटै रो डोकै डांग न फाड़ै, पण बानै भी म्हे चैन री सांस कोनी लेवणदयां। अबै एक आन्दोलन छेड़ांलां, बारी कांई औकात है, धरती हाल जिसी, बस आंरो साथ चाहिजै।

—बस, एहड़ी बात करो, म्हारो जी सोरो होवै, मरज्याणा जनता रै खून स्यू सीचन सिंहासन पर बैठ्या है।

पापा फेर हस्या—हां, भाई, इसी बात सुणाया करो, ईंरो जी टिकै वा तो दिन-दिन सूक्या बर्ग है, सूखन खेलरो होगी।

वा दिनां ही चैनसिंहजी आग्या। चैनसिंह काळै ढैरै बरगा होरया हा। कै तो बारो कांधो मच्यो रैवतो, पण अबै नाड निकळरी ही।

माताजी आंवतां ही पूछ्यो—कंवर साहब, ओ कांई?

—माताजी, बस भाई जी रो राज कांई गयो, म्हारो डोळ बिगडग्यो, फेर चढ़गी ताप, ताप स्यूं वणग्यो अजार, अबै की ठीक होया तो अबार उठन आयो हूं।

—अठै तो कोनी हा थे। मां पूछ्यो।

—गाव ही एक मीनै स्यूं, अठै कांई करतो। फालतू रो होटल रो

—ओ हुकमचंद कांई हो, मा कयो, कठै ही नोकरी मिली कोनी, पापा रा जूठा बरतन चक्या करतो।

—वो कुरड़ाराम, म्हूं बोली, पटवारी हो।

—पटवारी कठै हो, मा बोली, पटवारी रो बस्तो चकण आळो। कित्ता नाम गिणाऊं। कोडाराम, धर्मचंद, नाथूदास, रामजीलाल जका आपनैं राजा स्यू कम कोनी समझै।

पापा सगळी बाता सुणता रया, फेर हस्या बोल्या—क्यू जी दोरो करै, कुण कीनैं ल्यावै, कुण हटावै है, समय रा फेर है, आपणो टेम इत्तो ही हो निकळग्यो। राजा लोग जकां रै फूक स्यूं घास बळ्या करतो, जका जलम स्यू मखमली गद्दा पर लोटया करता, आपां तो हा कांई, याद कोनी, बो कच्चो-कोठो, मां आळी कीकर, काटा आळी बाड़, एक सीग आळी गावड़ती, दिन उगतां ही रात आळो रावडी, आथणगै मागेड़ी छाछ री कड्डी।

पापा मा रो माजनो सो ले लियो। मां तो चुप होगी, पण पापा फेर बोल्या—ओ राज तो जनता रो है, सगळा नै ही मोको मिलणो चाहिजै। आपा कोई ठेको थोडो ही ले राख्यो हो, जका राणी रै पेट स्यू पैदा होया करता, वै ही कोनी रया, आपणी तो औकात कांई ही।

मां एक लांबी सास ली, बा आ दिनां घणी फीकी रैवती, पापा बीनै कीं धीरज बधायो। पापा मे आ खूबी ही के बै जीसो आदमी देखता, बीसो ही बात कर लेवता। बांरो कदे-कदे संगळियो आंवतो तो बै हंसी ठठ्ठा पर उतर ज्यावता तो इसा लागता जाणै बै ऐन साधारण मिनख है, कण जद् कोई विद्वान आवतो तो बै दार्शनिक बण ज्यावता। राजनीति आळे स्यू राज री बात करता तो घर आळा स्यू सुख-दुख री।

पापा फेर बात नै मोड़ दे दियो, बोल्या—बोल, तेरै लाडलै रो कांई हाल है।

—वो तो किरकेट खेलण गयो है।

—ओ किरकेट ही खेलै है, की पढ़ै भी है।

—बिना पढे बी॰ ए॰ कयां करतो, मा कयो।

—म्हू तो बीनैं पढता कम देखूं हू।

—पढ़ै तो है, पापा, म्हूं कयो, दिनगै चार बजै उठै, आपी चाय बणावै,

फेर पड़ै।

—स्वराज, तेरो मकान कित्ताक दिनां मे त्यार हो ज्यासी।

—थे काल देखन आयान, पापा, अबै तो देर कोनी, घणै कं घणा दो हफ्ता।

इत्तै में एक कार आई, कार मे दो आदमी हा, दोनू गांव रा आदमी।

वै ऊतरया अर पापा स्यूं नमस्ते करी। वै दोनूं ही पार्टी रा आदमी हा।

म्हे लोग उठ्या। मां वेगी ही चाय पणान चली गई।

मा री चाय तो बा मागी ही रयी। बा लोगां कई देर तांई बात करी, फेर चालण लाग्या जद् मां वाही बात कयी—आया करो, संभाळघा करयो।

वै बोल्या—काई बतावां, माताजी, सपनो साचो कोनी होयो, हाथ में आयेड़ी लाव नीमरगी, नी तो बताता, राज काई होवै, ऐहडो राज ल्यावता के लोग याद राखता, अबै तो है काई, वै ही नाळियां, बा ही सड़ांध। जनता रा भाग माड़ा है, जनता तो घणो ही साथ दियो, पण पार कोनी पड़ी। मोटै री डोकै डांग न फाड़ै, पण बानै भी म्हे चैन री सांस कोनी लेवणदयां। अबै एक आन्दोलन छेड़ालां, बारो काई ओकात है, धरती हाल जिसी, बस आंरो माथ चाहिजै।

—बस, एहड़ी बात करो, म्हारो जी सोरो होवै, मरज्याणा जनता रै खून स्यूं सीचन सिंहासन पर बैठ्या है।

पापा फेर हस्या—हां, भाई, इसी बात सुणाया करो, ईंरो जी टिकै आ तो दिन-दिन सूक्या वगै है, मूखन खेलरो होगी।

बा दिनां ही चैनसिंहजी आण्या। चैनसिंह काळै हंरै वरगा होरया हा। कै तो बारो कांधो मच्यो रैवतो, पण अबै नाड़ निकळरी ही।

माताजी आंवतां ही पूछयो—कंवर साहब, ओ कांई?

—माताजी, बस भाई जी री राज कांई गयो, म्हारो डोळ बिगड़ग्यो, फेर चढ़गी ताप, ताप स्यूं वणग्यो अजार, अबै कीं ठीक होया तो अवार उठन आयो हूं।

—अठै तो कोनी हा थे। मां पूछयो।

—गांव हो एक मीनै स्यूं, अठै कांई करतो। फालतू री होटल रो

खरचो लागतो, सोच्यो, मिल आऊं, सायसंगळियां ऊं, भाई सा'ब ऊं, माता जी ऊ।

—आछो काम करचो, म्हूं तो सोचती, अबै कुण आवै, चैनसिंह ही छोड़ग्या, सेठ रो तो पतो ही कोनी।

—सेठ तो थारै सागै लागरयो है, चैनसिंह बताओ, वाणियो है, स्याणो हुवै है वाणियो, आपणै जिसो बावळो थोड़ो ही हुवै, चालता ही तैश मे आयन चडी हाडी रै ठोकर मार देवां।

—ठीक कही, चैनसिंहजी, देखो थारै भाई सा'ब, आही तो करी, देखल्यो, सगळा ही मौज रै भेळै जा मिल्या, म्हे ही बावला निकळचा।

—भाई सा'ब तो एम० एल० ए० ही कोनी रहचा। लोगां नै बणाया।

—आ कोई अक्कल री बात ही, चैनसिंह बोल्या, म्हू कयो भी, थे पार्टी मत छोड़ो, चलो, शर्मा स्यू लड़ाई है तो पार्टी रै माय बैठ लड़ता रैस्या, फेर लड़ाई क्यांरी ही, आखर आपां अगलै नै चीफ मिनिस्टर बणायो है, की तो आपरी चलावै ही, की आरी भी चालती रैवती। गरीब कानी कोनी देखै ओ तो, ओ ल्यो ओळमो। अबै साची बताओ, माताजी कित्ताक गरीब थारै कनै आवै अबै। छोडग्या।

मरज्याणा, फोरो ही कोनी खावण देवता, म्हूं बा खातर रोटी-पाणी भूलेड़ी ही। एक देकचो चाय रो चढ़ावती, मेरै खातर ही कोनी बंचती, एक हांडो भरन रावडी रादती, म्हूं तो बिना रावडी रैवती, अबै पतो नी, बै कठै मरग्या।

आज राज आ ज्यावै, माताजी, भूड सा सै ओजू मेळ हो ज्यासी। इत्ता मतलबिया है लोग, माताजी, सिर भी थारो मोगरी भी थारी। म्हूं तो देख राख्या हा, भाई सा'ब क्या रा भरघा पडघा है म्हू कैवतो, सोचन चालो, आ दुनिया बडी दुरंगी है। अबै थानै दीखै है कोई गाडी री लीक। कीं तो, भाई सा'ब नै आधी रात नै उठा लेंवता। कैवता, म्हानै प्लेन पकडनी है, बात कराओ। मेरी भी अक्कल काड लेंवता।

—म्हारी तो निकळेड़ी ही।

—थे तो थे ही हो, माताजी, चायें की कवो, थारी अर भाई सा'ब री होड कोनी होवै। पण दुनिया कानी देखा तो मोत जीदोरो हुवै। म्हानै याद

है, माताजी, म्हू लोगां रा वड़ा काम कराया, भाई सा'व नै कैवणै स्यूं। पर स्यूं खरचो लगायो। गरीब है विचारा, पण अबै जद् वोट रो टेम आयो बै लोग दूर खड्या मिल्या। म्हू कयो—रै थे'काम सारू म्हारी खोपड़ी खायो, वोट आळै वेळै, नारै सरको। कांई कवै—माताजी बै, पारटी रो सवाल है सा इया है अर मतलब है, माताजी, म्हारी तो हजार वार पीतामेड़ी वात है, आरा कित्ता ही गुण करदयो। सगळा कूअै मे पड़ै है। खैर, टेम जाणिये।

फेर माताजी सगळा नै एकर-एकर याद करया जका माताजी रै आमै-सामै लूटरिया करता, अबै कदेही दुख-सुख री ही पूछण कोनी आवै।

चैनसिंह आखर आ ही कयी—*अै दिन नीं आंवता तो माताजी, थानै मिनख री पीछाण कयां होवती। ओ भी आवणो जरूरी हो, दुनिया रो पतो तो लाग्यो। खैर, की कोनी वीगड़्यो, कोई वात कोनी, खरचै ऊ तों वचो हो।*

म्हूं फेर चाय बणान ल्यायी, म्है तीनू भेळै ही चाय पी।

इत्तै में विजय आयो, एक बडो परचो दिखायो जकै में एक आन्दोलन री चेतावनी ही, पापा रो बीरै माय मोटै आखरा में नाम हो।

21

आन्दोलन तो सरू होणो हो, होयो। झूठी-साची किसानां री मागा त्यार करीजी, परचा छप्या, गांव आळा नै प्रदर्शन सारू त्यार की करीज्या। विधान-सभा सरू होंवता ही गांवां रा किसान कई हजार संख्या में 'जिंदा बाद मुर्दाबाद' रा नारा लगाया, तकड़ो जलूस निकळ्यो, विधान-सभा रै सामै ऊलजलूल नाटक करीज्या, जकै रो नतीजो जको निकळ्या करै है बो ही निकळ्यो, लाठीचार्ज, आंसूगैस, कइया रा सिर फूट्या, कइयां रा हाथ, पापा रो भाषण हुयो; साथै और नेतावां रो भी। पापा रै भी हळकी-सी

चोट आई, पापा दिन छिपें घरे आया।

पापा आया, पण मा वानै लड़ी—ओ कांई धंधो है, चैन स्यू बैठ जाओ। शर्मा राज आज छोडै न काल। अयां बाड़ मे मूत्या बैर कोनी नीसरै। आज तो आ थोडी-सी लागी है, सिर फूटज्या, आदमी मरज्या तो म्हारी कुण धणी। लोग दो दिन रोयन रैय ज्यासी। की खातर मरो खपो हो, चलती रो नाम गाडी है, फेर तो फेर ही है।

मा जकी पैली इसी भागती-दौड़ती, जनता सारू भाजी फिरती, कदे थकती कोनी, पतो नी बीनै कांई 'अलरजी' हुई के बीनै अै वाता सुहावै ही कोनी।

पापा कयो—बस धापगी, बावळी है तू, जिंदगी वार-वार कोनी आवै, ओ शरीर तो जनसेवा सारू सौंपेडो है, जेल गया जनता सारू, राज करचो जनता सारू अबै विरोध करां जनता सारू। राज करण आळा स्यू राज तो कोनी छुडावा पण वानै चेतो तो करावां के जनता सूती कोनी। जे वै माडो करैली तो आ ही जनता वानै तोड फेंकसी। हार मानलो तो हार है अर हारचां जनता री हार है, न्याय री हार है। जे बिरमानंद हार मान लेसी तो ओर कोई नंद खडचो हो जीसी। आ जोत तो जळती रैसी, कदे मंद्दी तो कदे तकडी। तो फिर बिरमानंद आपरो माजनो क्यू देवै, ईनै भी जीवतो रैवणो है इण शरीर रा कोई लाव जेवड़ा कोनी बणै, काम है तो कर्म है और काम सारू काया नै थकेलो नी मानलो, देवी, दिमाग बदळ, ऐश करी तो त्याग करणो पड़सी।

मां जकी एकर अंधकार मे चली गई ही, ओजू जोत मे आगी।

पतो नी कठऊं स्वामीजी आग्या। स्वामीजी आंवता ही आपरा झोळा-झोडा मेलन बैठग्या—अरै भाई, आज तेरो मिलणो आराम स्यू होयो, राज मे हो जद् कयां कोणा-कचूणा मे लुक्यो मिलतो, कठैई सिपाही खडचा रैवता तो कठैइ चौकीदार। अबै तो बा सागी खाट अर सागी रंगढग।

—हां, स्वामीजी, पापा बोल्या, बा तो कैद ही, कठै आ सकता नी, कठै जा सकता नी, भाई बेली स्यू भी नी मिल सकता। भीड़ भी ऐडी के पूछो मत। स्वामीजी, एक बात म्हूं राज स्यू सीखी, राज स्यू जका लोग जरूरतमंद है वारी जरूरत पूरी कोनी हुवै, जका लोग टाडा है चाहे वै धन

स्यू टाडा हो चाहे जन स्यूं बै आपरी जरूरत पूरी करै, जद् ही तो धन आळा घणा धन आळा बण ज्यावै है, गरीब गरीब। एक आदमी म्हारै कनै आयो एक काम लेयन, सफा गलत काम। म्हू बीनै सफा नटग्यो, बण जवाब दियो—आछी बात, मत करो, म्हूं तो करवा लेस्यू, म्हारै कनै ताकत है, पण थे जद् आवो जद् ध्यान राखन आइज्यो, म्हूं फूला री जगा जूता री माळा पैरास्यू। म्हूं जाणै हो के बो म्हानै पीसा भी देवतो अर वोट भी दिरावतो, जद् बो काम तो करावै ही, चाहे माडो होवै या आछो।

—तनै बार-बार कैवतो, स्वामीजी बोल्या, थारी इण व्यवस्था मे कठैई खोट है।

—म्हारी आत्मा मानी कोनी, राज में रैवणो तो आसान बात ही, पापा बात बताई।

—ईंरो इलाज, स्वामीजी पूछ्यो।

—आदमी आछै राज सारू इकलंग चेस्टा मे लागरयो है। कदे-न-कदे इण चेस्टा रो फल तो मिलसी ही। बया हर व्यवस्था मे आप आपरा खोट है, आप आप रा गुण। इसी लाद ओजू तक लादी ही कोनी जकै में कतई खोट नी हुवै।

—स्यात् लादै भी नी, स्वामीजी जवाब दियो जका घणा समझदार हा। बा कयो—म्हू रूस गयो, चीन गयो, जापान गयो, अमेरिका भी गयो पण सच्चो सुख कठैई कोनी, कठैई की राडो रोवणो कठैही की।

पण स्वामीजी अबार आया ही हा, बाता ही बातां मे की टेम निकळग्यो, वै फेर नहाया, धोया, चाय पी अर घणै जीमोरै स्यू बाता लागग्या। बारी बाता मे आज मिचौक घालण आळो कोई कोनी हो।

म्हू जद् बांरै कनै गई तो स्वामीजी आपरै कॉलेज री बात बतावै हा—बिरमानंद, म्हू तो कॉलेज खोलन पछतायो।

—क्यू, पापा हंस्या।

—कॉलेज कोनी रया, बिरमानद, आ तो एक कांस होगी।

—कॉलेज अर कांस।

—हा, टीगरा रै पढ़णै तो है कोनी, रोज हडताल, कदे प्रीसीपल रै खिलाफ, कदे की प्रोफेसर रै खिलाफ जद् गुरुवां रै खिलाफ चेला हो सकै है,

बठै शिक्षा कठै, गुरु नै तो गोविन्द स्यू ऊंचो मान्यो है ।

—पुराणी मानता बदळरी है, स्वामीजी ।

—आ तू सफा गलत बात कयी ।

—बात बताऊं, स्वामीजी, आपरै अठै नहरां आगी, जमीनां मोकळी । धन आळा छोरा कॉलिज में आवै । गरीब तो मसां स्कूल तक जा सकै है, फेर अमीरा रा छोरा स्कूला मे पूचै, बानै पढणो-लिखणो है कोनी, कॉलिज मे करै कांई ? तुरळ मचावैला ।

—आ बात मानी, स्वामीजी कयो, बस बात आ है। जाड़ है बठै चीणो कोनी, चीणो है बठै जाड़ कोनी । म्हूं कई बार होस्टल कानी निकळ ज्याऊं, छोरा होस्टल रै कमरां मे जूआ खेलै, दारू पीवै । स्कूल आळा छोरा तो डडै ऊ मान ज्यावै, अै क्यां स्यू मानै, ओ तो रांडी रोवणो होग्यो । न अै राज ऊं डरै न राम ऊं । करा ती कांई करा ।

—म्हूं आ ही कई आपनै, अै लोग अठै ऐश करण नै आवै। आं कनै मोकळी जमीन है, घरे सीरी कमावै, आंरा माईत आथणनै बैठन दारू री बोतल खोलै, फेर अै भला कठैस्यू बणै ।

ईंरो इलाज, स्वामीजी सोच मे पडरया ।

—एक ही रास्तो स्वामीजी, देस मे धन बराबर बांटणो पड़सी, गरीब अमीर री खाई पाटणी पड़सी, ओही इलाज है ।

—तो सरकार करै क्यू कोनी ?

—सरकार तो अमीरां रै हाथ मे चली ही गई, स्वामीजी और राडी रोवणो क्यांरो है । गरीब मे चेतना कोनी । जद् कोई बात उठै तो झूठा साचा आन्दोलन घड़ीज ज्या, सरकार नै दबाले । सरकार नै वोट अर नोट लेवू चाहिजै । गरीब रो वोट भी अमीर रै हाथ मे है । अमीर प्रेस अर प्रसार स्यू हर मोड दबेणो जाणै है । गरीब अमीर री गुलामी करो अर पेट भरो ।

स्वामीजी घणा उदास होग्या । बै तो तुरत इलाज चावै हा ।

स्वामीजी बोल्या—म्हू तो इण सारू आयो हो के तोई बढिया प्रीसीपल बता जको बी मायाजाल नै कंट्रोल में कर लेवै । कोई करडो आदमी जको डंडै स्यू उड़ंगै नै सुधार लेवै ।

—स्वामीजी, डडै रो टैम भी गयो, पापा कयो, आपां न स्याणा रया

न बावळा। बावळा डंडै स्यूं घमज्यावै, स्याणा अक्कल स्यूं। अदविचला रै न डंडो काम देवै अर न अक्कल। फेर भी आप आया हो तो आपनै आदमी देस्यां जको डंडै आळै न डंडै स्यूं अर अक्कल आळै न अक्कल स्यूं साम लेवै।

—हां, हा, बस, बस, म्हारो मतलब ओ ही हो।

—निरास होयर बैठणो ही नी चाहिजै आदमी नै, पापा बोल्या। समय मारू तो गाडी चलावणी ही पड़सी।

—हा, स्वामीजी बोल्या, तू तो बात एहड़ी करी के न तो नौ मण तेल होवै न राधा नाचै। म्हूं तो ऐन निरास होग्यो। कद् धन रो बटवारो होवै कद् कॉलेज चालै।

—नी, पापा कयो, आपां मौजूदा हालात नै भी बस मे करस्या, इसी कांई बात है जकी होवै, कोनी।

स्वामी जी आया जद् निरास हा पण जावण लाग्या जद् आसावादी होयर गया।

22

पापा रै अबार काम कोनी रह्यो हो, कदे-कदे की मीटींग मे चल्या जाया करता। जद् कदे म्हूं पापा नै देखती, बै भोत ही गंभीर मुद्रा में रैवता, कांई सोचता, कांई पड़ता, कांई मंडता, पतो ही कोनी लागतो। मां भी बैठी कैंवती—तेरा पापा आजकलै उदास भोत रवै, भोत कम हंसै, भोत कम आपणै में बैठै, हरदम फिकर ही फिकर। भाडा होयण लागग्या।

म्हू मां नै धीरज बंधावती—मा, पापा कनै काम कोनी, करै कांई। कोई आवै जद् घणी बात करै। देख, स्वामी जी आया दो दिन तो भोत खुस रया।

—जद् तो म्हूं कऊं आयै गयै न रे ये आंया करो, आंरो भी मां बोली।

—कीनैं वेल है, मां, अबैं तो पापा की कोनी, एम० एस० ए० भी कोनी रया, लड़्या ही कोनी। बिना काम जी लागैं कया, थारैं म्हारैं ऊ बात ही काई करै।

मा नैं भोत सोच रैवतो, मां जाणती कै घर मे पापा ही एक दियो है जको रो उजास बारैं तो है ही, पण घर मे ही है। इण घर रै दियैं नैं पूरो तेल मिलणो चाहिजै, पूरी बाती रैवणी चाहिजै। घर री इज्जत, आबरू सगळी आ ही है। धीमैं-धीमैं घर रो रंगरूप फीको पड़न लागग्यो। घर रो लाबो चौडो गुवाट हो, धीमैं दिनगै पैली झाडू निकळ ज्यावती, बो गोर बणग्यो। दरख्ता रा पत्ता झड़ेडा है तो झडेडा ही पड़्या रैवता, गोबर पड़्यो पड़्यो मूख ज्यांवतो, कुण उठावैं। पैली तो पतो नो कित्ता आसै पासै रैवता, कुण काई करतो, पतो ही कोनी लागतो, अबार मा काई कर लेवैं, राधा ही चली गई। एक दिन छप्पर री एक टूटी खराब हुंगी, खराब होगी तो होगी, कुण ठीक करैं, कुण ठीक करावैं। डूजो दावन बीनैं बद करो। छप्पर रैं आसै पासै री बेला सगळी बळगी। पापा चिन्तन मे रैवता अर मां चिन्ता मे।

एक दिन पापा छप्पर रैं आगै माची पर आडा होरया हा एकला ही। बै सामैं गुवाड़ कानी इकटक देखण लागरया हा। म्हू आई तो बोल्या—'बेटा स्वराज, कदे तो अठै बुहारी लगा दिया करो, कोजो लागैं है, आयो गयो कांई समझैलो।

म्हू फटाक स्यू बुहारी ल्यायी अर काढण लागगी, पापा री निजर मेरे कानी ही। म्हूं काम कर दियो तो पापा एक लाबी सास ली, बी लाबी सास मे सगळी बाता सागै ही आगी ही।

आदमी कित्तो ही ऊंचो विचारक हो, डूगो सत हो, पूचेड़ो महात्मा हो, ईं दुनिया री ताती ठडी लाग्या बिना कोनी रवै।

पापा रो सूरज अबार ढाळ मे हो तो म्हारलो की ऊपरनै आयो। आनन्द जी रजिस्ट्रार होग्या अर म्हानैं एक सरकारी जीप मिलगी। म्हारो मकान त्यार होग्यो। फेर म्हारो पापा नै की सारो होग्यो। पण पापा री उदासी मे की फरक कोनी आयो।

एक दिन म्हूं म्हारै घरे बैठी ही, मां आई—स्वराज, तेरै पापा रो पेट

दूखै है, कंवरसाहब कठै है ?

आनन्द जी भाजन पापा कनै गया, लारै म्हूं गई, विजय पापा रै पेट पर हाथ फेरै हो, पापा बुरी तरां करण लागरया हा ।

आनन्द जी गाडी लेयन डाक्टर नैं बुला ल्याया । डाक्टर एक इंजेक्सन लगा दियो, की गोल्या दीं, फेर एक गाडी आयन पापा नैं अस्पताल लेगी । मिनटां में घोषणा होगी के पापा रो आप्रेसन होसी । पापा रो केस भोत गंभीर बतायो ।

म्हे लोग ओपरेसन रूम रै आगै बैठ्या हा । चीफ मिनिस्टर शर्मा वठै आग्यो हो, और मनीस्टर भी वठै हा, रेखा भी वठै ही, कई एम० एल० ए० इत्तै में रामप्रसाद जी भी आग्या जका पापा रा ऐन विरोधी हा ।

मा रो काळजो कांपण लागग्यो । धीरे आंसू तो आवै ही हा, धूजणी छूटगी । रामप्रसाद जी मा नैं इं रूप मे देखी तो वै हाथ पकड़न आपरै साथै घरे लेग्या । रामप्रसाद जी की अळगा होग्या तो मां बोली— बेटा, सगळा दुसमण भेळा होग्या, अबै तेरै पापा री खैर कोनी ।

रामप्रसाद जी रै साथै ही म्हारै खातर चाय आगी । मा चाय पीवण लागगी । रामप्रसाद जी मा नैं बोल्या—बिरमानन्द जी री जिन्दगी भोत कीमती है । अै है तो म्हे हां, अै नीं तो म्हे भी नीं । शर्मा आज आयन क्यूं खड़्यो होग्यो । बिरमानन्द जी रै विरोध नै शर्मा ही डांट सकै है, बिरमानन्द जी रो विरोध खतम तो शर्मा खतम । बिरमानन्द है तो रामप्रसाद है । म्हानैं बिरमानन्द जी सारू ढाळ रै रूप में म्हानैं अडया राख्या है, बिरमानन्द जी है तो म्हे मनीस्टर हा । बिरमानन्द जी नैं नेता रै रूप में अर मिनख रै रूप में जीवतो राखणो भोत जरूरी है ।

इत्तै में फोन आयो—आपरेसन सफल, बिरमानन्द जी, री जिन्दगी खतरै स्यूं बारै । माता जी नै भेज द्यो ।

रामप्रसाद जी म्हानैं कार स्यूं अस्पताल पूचा दी । बारी कोठी ऐन नैड़ ही, फेर भी कार भेजी ।

म्हूं मन मे करो—बड़ी अजीब राजनीति है, अठै कुण आपरो कुण परायो, पतो ही कोनी लागै । पण आपरेसन करण आळा डाक्टर जी हरिसिंह पापा रा ऐन प्यारा हा, वैं माता जी स्यूं मिलन बोल्या—केस

भोत खतरनाक हो, अलसर, आपरेसन म्हारै हाथ में हो, अबार इलाज म्हारै हाथ मे, चिन्ता मत करीज्यो। राजनीति में दुसमण, दोस्त रो पतो कोनी लागै। ईंमें जको ऐन नेड़ै दीखै बो दुसमण होवै, जको दुसमण दीखै बो दोस्त होवै। समझाद्यू, जकै दूजै नम्बर रो ऐन नेड़ै होवै बो सोचै—ओ मरज्यावै तो म्हूं एक नम्बर रो नेता बण ज्याऊं, कित्ती गंदी है आ राजनीति, फेर बै हा…हा…हा…करणन खुल्ला हंस्या, बानै आपरेसन सफल होवत री घणी खुसी ही।

पापा ठीक होग्या, घरे आग्या, पापा री पट्टी भी खुलगी, डाक्टर हरिसिंह जी रोज संभालता, पण पापा ऐन सूतीजग्या, जाणै आरो सगळो खून काड लियो, मास नोच लियो, हाड्या छाग ली। कठै गयो पापा रो बो सरीर जको चालता जद् धरती हालती।

एक दिन मुख्य मंत्री शर्मा पापा नै संभाळन आया। शर्मा सामै कुरसी पर बैठ्या, पापा पलंग पर लेटा हा, म्हूं भी पूंचगी। बानै 'नमस्ते' करी अर बांरै पगा लागी।

—बडी होगी स्वराज तो, बै बोल्या।

—वड़ा तो थे होग्या, म्हूं कयो, कदे आओ ही कोनी, सभाळो ही कोनी। आ क्यांरो राजनीति जकी आपै नै भूल ज्यावै। लड़ाई तो थारी घर पापा री है, म्हे तो सगळा रै एकसा हा, थे ही तो म्हारो कन्यादान करयो हो।

म्हारी आंख्या में पाणी आग्यो। जद् शर्मा रो की काळजो पीगळ्यो, बै गळगळा होयन बोल्या—बेटा, राजनीति मे ओ ही तो खोट है, ईंमै राज है, ऐश है, पावर है, पण मिनखपणै अठै नेड़ै-तेड़ै कोनी। म्हूं तो तेरै पापा नैं कऊ हू—आओ, साथै होयन काम करा।

—आ बात थे जाणो अर पापा जाणै, म्हानै कांई बेरो, म्हूं कयो।

फेर पापा अर शर्मा कई देर बात करता रहा, पतो नी काई काई, पण म्हानै ओ बेरो ही के पापा अबै शर्मा रै साथै कोनी मिल सकै। बै आ ही कैवता रया हा—थूकन कांई चाटा? पण अबार पापा रो थकेलो इत्तो बदग्यो है के बै राजनीति री बात करै तो बावळा पड़ै।

और भी मोटा लोग आवतां, बांरै दुख सुख री पूछता, पापा भी की-की

धोरण लागग्या ।

एक दिन चाणचकै स्वामी जी री लाश म्हारै घरे आगी । 'है औ कांई ?' सगळा अचंभो करयो । पतो लाग्यो रे स्वामी जी पापा स्यू मिलणै सारू आरया हा, रस्तै में बांनै एहड़ो फो होयो होसी के वै सड़क पर मरया मिल्या, साथै जको आदमी हो, वो भी वी वकत बांरै सारू की लेवण गयो हो । वो आयो जद् लोग बार कर फिरया हा । बण घरे फोन करयो पण फोन भी कुण उठायो कोनी । फेर वो ही एक गाडी किरायै करन घरे लाश ल्यायो । पापा स्वामी जी री लाश देखन एक ही बात कयी—'कित्तो बडा सन्त हा स्वामी जी, अण जिन्दगी भर जनता री सेवा करी, मरती वकत तक की स्यूं पानी कोनी माग्यो । सन्त री जिन्दगी बस इसी ही हुवै है ।'

स्वामी जी लाश संस्था रा आदमी लेग्या, बां रो बठै ही गाजै बाजै स्यूं दाह सस्कार होयो । पापा रो घणो जी करयो, पण डाक्टर बानै जावण कोनी दिया । पापा कयो—'कित्तो निरभागी हूं के म्हूं बा री आखरी विदाई में भी सीर कोनी कर सक्यो ।'

23

एक दिन मां अर मैं बैठी बैठी विचार करण लाग्या के कनै कित्ता रिपिया होवणा चाहिजै । म्हूं बांरै कागजां मे सम्हाळन लागी तो कठैइ कोई बैंक री कॉपी कोनी मिली । फेर म्हे म्हारै अंदाजै स्यूं दोनूं बैंका में घूम्या, स्यात् कॉपी नीं आवै अर खातो हुवै, पण कठैइ खातो कोनी मिल्यो । म्हूं कयो—मां, पापा कई जगा लाखां रो घोटाळो करयो, वै लाख कठै गया ?

—मनै तो बेरो ही कोनी, कठै आयो, कोनै गयो, कठां गयो, हां, रिपिया आंवता जरूर अर जांवता, वै सगळा म्हारै हाथ स्यूं निकळया, पण बंच्यो कोनी कदेइ, ज्यूं आयो ज्यूं गयो, मां बतायो ।

फेर एक दिन एक आदमी आयो । वो चोखो आदमी लागै हो । बण

माता जी नै कयो—माता जी, कांई बताऊं, आपरै नाम पच्चीस हजार रिपिया है, व्याज तो म्हूं लगाऊं कोनी, पण एक चुनाव मे म्हूं दिया हा, म्हारै अबार टोटो आरयो है, पार पड़ै तो द्यो, बिरमानन्द जी नै कैवता तो शरम आवै।

फेर एक दिन माता जी रो ही मैंदो आदमी आयो—माता जी घणा दिन होग्या, ई कोठी मे ईंटया, पत्थर, चूनो आपरै अठै स्यू ही आयेड़ो है, आपनै तो ठाह ही है, अबै ढील पार कोनी पड़ै, म्हारै भी टाबरा नै रोटी चाहिजै।

माता जी कद् तांई अै बाता सुणती एक दिन कोठी रै सारै री जमीन बेच दी। मा पापा रै सामै कदे ही टोटै रो रोवणो कोनी रोवती। बा जाणै ही के बानै कदेइ टोटै री बात नी कैवणी, बै आगै ही माड़ा होरया है।

पापा चालण हालण तो लाग्या, विजय भी अबै स्याणो होग्यो, बै अबार आपरी जमीन सभाळती जको बीरै नाम स्यू ही। गाडी घर री गुडण लागगी।

एक दिन चाणचकै शर्मा मुख्य मन्त्री रै पद स्यू हटग्या, रामप्रसाद जी भी साथै गया। रेखा भी कोनी रयी। सगळा सडक पर आग्या।

अबै तो सगळा ही भेळा होयन आपरी सुख-दुख री कर लेंवता।

पापा कैवण लागग्या हा—बेटा, अबै म्हारो जमानो गयो, म्हे जो कुछ देवणो चावा हा, दे दियो, म्हे चुक ग्या। अबै तो नौजवाना नै देश नै संभाळनो चाहिजै। अबै म्हे नेतागिरी री जिद्द करा तो म्हारी हठधरमी है, अस्सी-अस्सी साल रा नेता, काई है म्हारै मे, म्हे जे देस री नेतागिरी करा तो देस रै नौजुवाना रै आडै आवा हा, देस रो नुकसान करां हा।'

24

म्हे लोगां आपरै खेत में एक चोखो-सो मकान बणा लियो है। विजय बठै ही रैया करतो, खेती करतो, करांवतो। पापा अर म्हूं भी बठै चल्या गया।

दिन छिपग्यो हो, खाणो खा लियो हो। बारै माच्या ढाळ'र बैठग्या। फागण रो मीनो हो। च्यारूं कूटा हरियाळी वापरी ही। सोवणी सरस्यूं पर पीळा फूल भोत ओपता हा, कणका री बाला हळकै वापरै में झूमै ही, चीणा आपरै लाळ फूला में घणो जी सोरो करै हा। सारै नहर रो खाळियो मदरो-मदरो चालतो मनां में मिठास भरै हो। पापा च्यारूं कूटा देखन बोल्या—लोग ओळमो देवै, राज री आलोचना करै, पण राज कांई कोनी करचो। देख, च्यारूंकानी टैक्टर चालै है, खेती रो रंग देखन, धरती सोनो निपजण लागरी है। आ वाही जगा है, म्हूं अठै राज री नौकरी में हो जद् रयो हो, पीवण नै पाणी कोनी मिलतो। इत्तै अरसै में काई रंग खिल्यो है। म्हारी पीढी कीं करचो तो है ही, इण सूं पैली हो कांई, गांव रो आदमी पुलिस ऊं डरचा करतो। सिपाही सरड़ा चालता नै खल्ला मारता। कठैइ विकास रो काम ही कोनी हो।

पापा नै ओ रंग देखन घणी खुसी होरी ही। म्हूं इण खुसी नै तोड़णै री चेस्टा तो कोनी करणो चावै ही, पण एक बात मन में आई, म्हूं कै बैठी—'पापा, आया लारला मीनै मे आपणै शहर में फिरै हा।

—हां, पापा कयो।

—एक विदेश रो राष्ट्रपति आपणै अठै आयो हो, अर आपानै आपणी गाडी रो मारग बदळनो पडचो।

—हां ?

—फेर आपां एक गळी स्यू नीकळचा।

—हां ?

—कित्तो कोजो हाल हो बी गळी रो।

—हा, ठीक है।

—च्यारूंकानी बदबू ही, बदबू घर काई हा, नरक रा टुकड़ा हा।

—हा···हा···हा।

—आ सारू आजादी आई ना आई बराबर है। सगळै शहरा री गळियां रो ओ हाल है। आपां बम्बई गया हा, कलकत्तै गया हा, गरीबा सारू रैवणै नै झूंपडी ही कोनी, वै फुटपाथ पर सोवै। थे हो गांवां री ही वातां करो, गांवा मे रोटी तो लूकी-सूकी मिलै है, सोवण, बैठण, ऊठण नै, झूपड्या तो है हीं। और नी तो पवन तो शुद्ध भखै है, पण वां लोगा सारू को तो कोनी।

—हां, हा, तू कैवती जा।

—पापा, ठीक है, रजवाडा, कोनी रया, जागीरा गई, जका सपनै मे ही सोच नी सकै बानै राज मिलग्यो, महल मिलग्या, पण करोडू मिनखा नै तो की कोनी मिल्यो।

—ठीक है, ठीक है।

—और कांई कूं, म्हूं तो इत्ती बात जाणै ही, कैय दी।

—बेटा, जनतन्त्र व्यवस्था माडी कोनी, पण ईनै जमावणो जरूरी है, लोग पूरा भण जीसी, समझ पकड़ जीसी, स्याणा हो जीसी, अै लोग जका फुटपाथां पर पड्या है आ मे चेतना आ ज्यासी तो साची मान ले ओ जको फरक लखावै है गरीब अमीर ओ भी मिटज्यासी। पण टेम लागै है, टेम ही सगळी बात करावै है।

आसै पासै लोग बैठ्या बाता सुणै हा। वा लोगा ही रोही मे आ रुणक कर राखी ही। कोई खेत मे पाणी लगान आयो हो। एक ट्रैक्टर रो ड्राइवर हो। एक पड़ौसी हो जकै नै अबार ही एक मुरब्बो जमीन मिली है। एक बी पडौसों रो सीरी हो।

वै कई देर ताई बातां रो रस लियो, फेर चिलम पीवण सारू थोडा आगीनै सरकग्या, वै पापा रै सामै चिलम पीवणै स्यू संकै हा।

अधारो बापरग्यो। म्हारै खेत मे बिजळी आगी ही। म्हारै ट्यूबवैल लगा राख्यो हो। नहर रै पाणी री कमी इण ट्यूवैल स्यू पूरो करया करता।

च्यारूंकानी बिजली रा लौटिया चसग्या। पापा मकान री छत पर चल्या गया, बानै थोड़ो घूमणै रो शोक हो।

अबार सर्दी जावती ही, म्हे लोग कोठै मे बड़ग्या। पापा भी आग्या।

पड़ोस रै एक मोयार नै बाता घणी आबै ही। विजय नै ओरो बड़ो कोड

विजय अर बो छोरो दूजै कोठै मे जायन बातां सरू कर दी। छोरै रै आवण आवती ही—हुंकारो द्यो-सा।

पापा बोल्या—औ ऊठै आज्यावो, म्हूं भी सुण स्यूं।

मोड़ै ताई बातां चाली। पापा सोवण लागग्या। बानै नींद आवण लागगी। वै लोग चल्या गया, म्हूं भी सोगी।

25

दिनगै पापा कुरळो करण लागरचा हा। पूरब स्यू सूरज निकळै हो गोळ-गोळ, लाल-लाल। बीरी किरणां आखी धरती री हरियाळी पर पसररी ही। ओस री बूंदा मोती ज्यूं चिमकै ही।

भोत ही सुहावणो मोसम हो। पापा बोल्या—कित्तो सोवणो सूरज उठ्यो है, बेटा, सोनै रो सूरज।

—हां, पापा, आपणी धरती रो सूरज, देस रो सूरज।

—आजादी रो सूरज, प्रगति रो सूरज, विकास रो सूरज। आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत उजळा है।

nn